तान्त्रिक
मुद्राविज्ञान

वृहद् तान्त्रिक मुद्रा महाविज्ञान

आचार्य पं. राजेश दीक्षित

विद्या वारिधि दैवज्ञ वृहस्पति तन्त्र शिरोमणि

आचार्य पं. राजेश दीक्षित

द्वारा लिखित एवं सम्पादित

तन्त्र-साहित्य

१. हिन्दू तन्त्र शास्त्र

२. मुस्लिम तन्त्र शास्त्र

३. जैन तन्त्र शास्त्र

४. बौद्ध तन्त्र शास्त्र

५. शाबर तन्त्र शास्त्र

६. काली तन्त्र शास्त्र

७. तारा तन्त्र शास्त्र

८. षोड्षी तन्त्र शास्त्र

९. छिन्नमस्ता एवम् भुवनेश्वरी तन्त्र शास्त्र

१०. भैरवी एवम् धूमावती तन्त्र शास्त्र

११. मातंगी एवम् बगलामुखी तन्त्र शास्त्र

१२. कमलात्मिका तन्त्र शास्त्र

१३. सम्पूर्ण दस महाविद्या तन्त्र महाशास्त्र

१४. वृहद् तान्त्रिक मुद्रा महाविज्ञान

वृहद् तान्त्रिक मुद्रा महाविज्ञान

[विभिन्न देवी-देवता की उपासना, आवाहन, नित्य-पूजा, उपचार, जीवन्यास, कर-न्यास, मातृकान्यास, सन्ध्योपासना, बलिदान, होम, ध्यानावेश, शान्ति रक्षण, पंचतत्त्व, योग-साधना तथा अन्य कर्मों में प्रयुक्त होनेवाली विभिन्न मुद्राओं का सचित्र एवं सर्वाधिक संकलन-कोष]

विद्या वारिधि दैवज्ञ वृहस्पति तन्त्र शिरोमणि

आचार्य पं. राजेश दीक्षित

(विश्व में सर्वाधिक प्रकाशित पुस्तकों के लेखक)

(गिनीज बुक ऑफ वर्ल्डरिकार्ड में नामांकित)

प्रकाशक

दीप पब्लिकेशन

कंचन मार्केट, हॉस्पीटल रोड, आगरा-३

प्रकाशक :
दीप पब्लिकेशन
कंचन मार्केट
अस्पताल रोड, आगरा-3
Ph : 2261220, 2111145

लेखक :
आचार्य पं. राजेश दीक्षित

तृतीय संस्करण :

I S B N—81-87250-23-2

मूल्य : 105/-

लेजर टाइपसेटिंग : *सुमित कम्प्यूटर्स*, आगरा

मुद्रक : *रामकृष्ण प्रेस*, आगरा

VRIHAD TANTRIK MUDRA MAHAVIGYAN

By: Acharya Pt. Rajesh Dixit

दो शब्द

॥ देव-देवी पूजन, न्यास, होम, बलि, संध्या-वन्दन तथा योग आदि की क्रियाऐं करते समय विभिन्न प्रकार की मुद्राओं के प्रदर्शन का विधान भी पाया जाता है। ये मुद्राऐं न केवल देवताओं को प्रसन्न करती हैं, अपितु उनकी कृपा दिलाने, वाह्याभ्यन्तर-शुद्धि, पाप-विनाश तथा मोक्ष-साधन में भी सहायक सिद्ध होती हैं। मुद्राओं के बिना किये गये उपचारों को देवता ग्रहण नहीं करते- अतः मुद्रा-प्रदर्शन का विशेष महात्म्य है।

॥ मुद्राओं का निर्माण हथेली तथा उसकी अंगुलियों द्वारा किया जाता है। विभिन्न ग्रंथों में उनके निर्माण की विधियाँ भी पाई जाती हैं, परन्तु सम्पूर्ण अथवा अधिकाधिक मुद्राओं का एकही स्थान पर सचित्र ध्यान कराने वाली कोई पुस्तक अभी तक उपलब्ध नहीं थी। प्रस्तुत संकलन उसी अभाव की पूर्ति हेतु किया गया एक प्रयास है। इसमें लगभग २५० मुद्राओं के विवरणों को विभिन्न ग्रंथों से संकलित कर, उनके चित्र भी तैयार कराये गये हैं। इस प्रकार हिन्दी में मुद्रा विज्ञान विषयक यह सबसे पहली और बड़ी पुस्तक है। आशा है, मुद्रा-विज्ञानियों के लिए यह उपयोगी सिद्ध होगी।

॥ मुद्राओं के विवरण के आधार पर उनके चित्र तैयार कराने में यद्यपि सावधानी बरती गई है, तथापि कहीं कोई त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन उसकी सूचना देने की कृपा अवश्य करें ताकि पुस्तक के अगले संस्करण में उसका निराकरण किया जा सके।

॥ अन्त में, जिन ग्रंथों तथा अन्य सूत्रों से प्रस्तुत ग्रंथ के लिए सामग्री-संचय में सहायता प्राप्त हुई है, उन सभी के प्रति हम हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं

--राजेश दीक्षित

समर्पण

सुख संचारक कम्पनी, मथुरा के संचालक,
धर्मनिष्ठ, साहित्यानुरागी, अनुज-तुल्य, आत्मीय,

पं. कीर्तिपाल शर्मा

को

सस्नेह

विषय-सूची

क्रमांक	पृष्ठांक

९

वृहद्
तान्त्रिक मुद्रा महाविज्ञान

मुद्रा-प्रशंसा

मोदनात् सर्वदेवानां द्रावणात् पापसन्तते:।
तस्मान्मुद्रेयमाख्याता सवकामार्थ साधिनीम्।।
मुदं एतीति मुद्रास्यात् येनैका मुष्टिरेव तु।
स्वल्प भेदात् कोप हर्षो प्राणिनां जनयत्यत:।
तेनैव सर्वदेवानां मुद्रा हर्षप्रदा मता।।

–यामल तन्त्र

X X X X

मुद्राभिरेव तृप्यन्ति न पुष्पादिक पूजनै:।
महापूजा कृतातेन येन मुद्राष्टकं कृतै।।

–मेरू तन्त्र

X X X X

मुद्रा विना तु यज्जाप्यं प्राणायाम सुरार्चनं।
योगोध्यानासनं चापि निष्फलांनि तु भैरव।।

– कालिका पुराण

X X X X

नादीक्षितस्तु रचयेत् क्षुभ्यन्ति हि देवता: यस्मात्।
मुद्रा: भवन्ति विफला: सोऽपिरोगीदरिद्र:स्यात्।।

–मन्त्र दर्पणम्

X X X X

मुदं राति वदातीति मुद्रा।
अतएव तद्दर्शनेन देवता हर्षोत्पत्ति:।।

–राघव भट्ट

१. मुद्राओं के विषय में

मुद्राएँ– 'मुद्रा' शब्द का सामान्य अर्थ है– आकृति अर्थात् विभिन्न प्रकार की आकृतियों को मुद्रा कहा जाता है। ये आकृतियां धातु, प्रस्तर, काष्ठ, मृत्तिका अथवा अन्य किसी भी पदार्थ से निर्मित हो सकती हैं तथा मानव द्वारा स्व-अङ्गों से निर्मित स्थायी और अस्थायी भी। धातुओं के सिक्के अथवा कागज पर छपे हुए नोटों को भी मुद्रा कहा जाता है किसी प्रकार का चिन्ह अंकित करने वाली वस्तु को भी मुद्रा कहते हैं। चित्र मूर्ति आदि में अंकित विभिन्न प्रकार की भाव-भंगिमायें भी मुद्रा कहलाती हैं। परन्तु हमारा प्रतिपाद्य विषय इन मुद्राओं से भिन्न है अर्थात् इस पुस्तक में जिन मुद्राओं का उल्लेख किया गया है, वे धार्मिक-कर्मकाण्ड अथवा तान्त्रिक-अनुष्ठान आदि करते समय हाथ और उसकी अंगुलियों द्वारा बनाई जाती है। कार्य-कारण तथा कामना के उद्देश्य से इन आकृतियों के अनेक स्वरूप निर्धारित किए गये हैं तथा उन्हें विभिन्न नामों से सम्बोधित किया जाता है।

आप्त-वचन– हाथ की अँगुलियों द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली मुद्राओं के विषय में शास्त्रों में जो आप्त-वचन पाये जाते हैं उनका सारांश निम्नानुसार है–

मुद्रा-प्रदर्शन से देवता प्रसन्न होते हैं तथा इनके माध्यम से साधक को देवता का सामीप्य-लाभ मिलता है। केवल देवता ही क्यों, मुद्राएँ राक्षसों को भी अनुकूल बना देती हैं। मुद्राओं में मूर्छित व्यक्ति को चेतन्य तथा रोगी को स्वस्थ बनाने की सामर्थ्य पाई जाती है। इनके कारण 'पूजा' 'महापूजा' बन जाती है। इन्हें मोक्ष-प्राप्ति का एक सोपान भी माना गया है।

मुद्रा-रहित पूजन-अर्जन, जप, ध्यान, योग, प्राणायाम आदि की सभी क्रियाएँ निष्फल भी मानी जाती हैं।

पंचतत्त्व की प्रतीक– हाथ की पाँचों अँगुलियों को पंचतत्त्वात्मक माना जाता है। पहली अँगुली को तर्जनी, प्रवेशिका, प्रदर्शिनी तथा पितृ-पूजक कहा जाता है। दूसरी अँगुली को मध्या, मध्यमा तथा जप-करणी कहते हैं। तीसरी अँगुली को अनामा, अनामिका अथवा प्रान्तवासिनी नामों से संबोधित किया जाता है। चौथी अर्थात् अन्तिम सबसे छोटी अँगुली को कनिष्ठा-कनिष्ठिका, अन्तगा, अन्त्यजा, स्वल्पा, साध्वी एवं रत्नी कहते हैं। अँगूठे को ज्येष्ठा, वृद्धा, अङ्गुष्ठ तथा भू-पूजक नाम दिए गए हैं।

मणिबन्ध अर्थात् कलाई से कनिष्ठा तक के भाग को 'हाथ' कहा जाता है। इसके अग्रभाग को पाणि, शय, हथेली अथवा पंचशास्त्र कहते हैं। हाथ की अँगुलियों को सम्मिलित रूप में कर-शाखा अथवा कर-पल्लव की संज्ञा दी गई है।

हाथ की पाँचों अँगुलियों (चार अँगुली तथा एक अँगूठा) को पंचतत्त्व का प्रतीक कहा गया है। तर्जनी अँगुली वायुतत्त्व का, मध्यमा अग्नि तत्त्व का, अनामिका जल तत्त्व का तथा कनिष्ठा पृथ्वी (भू) तत्त्व का प्रतिनिधित्व करती हैं। अँगूठे को आकाश तत्त्व का प्रतिनिधि माना जाता है।

उक्त पंचतत्त्वात्मक अँगुलियों द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली मुद्राओं द्वारा जब विभिन्न तत्त्वों का परस्पर संयोग होता है, तब उनसे सन्तुष्ट होकर देवतागण मुद्रा-प्रदर्शित करने वाले साधक को अपनी कृपा प्रदान करते हैं अतः मुद्राओं को देवता की प्रसन्नता का साधन कहना ही अधिक समीचीन है।

मुद्राओं से पाप-समूह नष्ट होते हैं, देवताओं का सान्निध्य प्राप्त होता है तथा आध्यात्मिक-उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है।
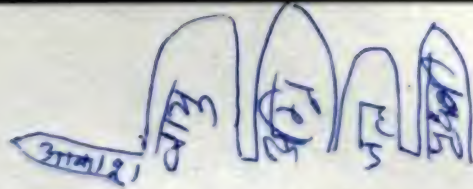
मुट्ठी और तीर्थ– जब सभी अँगुलियों को समेट कर हथेली में बन्द कर लिया जाता है, तब उसे 'मुष्टिका' अथवा 'मुट्ठी' कहा जाता है। जिस अँगुली में कनिष्ठा सहित सभी अँगुलियाँ हथेली में बन्द करली जाती हैं, उसे 'रत्नी' कहते हैं, परन्तु जिसमें कनिष्ठा अँगुली को बाहर रखते हुए अन्य सब अँगुलियों को बन्द किया जाता है उसे 'अरत्नी' कहते हैं।

हथेली को 'कर-तल' तथा हथेली के पृष्ठभाग को 'कर-पृष्ठ' कहा जाता है।

हथेली के प्रारम्भ में, अँगूठे के कुछ नीचे भाग में 'आत्मतीर्थ', हथेली के अन्त में अँगुलियों के ऊपर 'परमात्म-तीर्थ, हथेली के उत्तरी भाग में कनिष्ठा से थोड़ा नीचे 'देव-तीर्थ' तथा दक्षिणी भाग में तर्जनी एवं अँगूठे के मध्यम में 'पितृ-तीर्थ' की अवस्थिति मानी गई है।

सावधानी– मुद्राओं का प्रयोग यथाविधि करना आवश्यक है। गलत-मुद्राओं का प्रयोग लाभ के स्थान पर हानिकर सिद्ध होता है। उससे देवता प्रसन्न होने की बजाय रुष्ट भी हो सकते हैं। अत: इस संबंध में सावधानी बरतनी चाहिए।

अगले पृष्ठों पर विभिन्न मुद्राओं के वर्णन के साथ ही उनके चित्र भी दिए गए हैं। इनके माध्यम से मुद्राओं के उचित प्रयोग की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। परन्तु केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है। मुद्राओं के विषय में क्रियात्मक-जानकारी किसी ऐसे अनुभवी व्यक्ति से प्राप्त करना भी आवश्यक है, जो मुद्राओं के प्रयोग में निष्णांत है। 'गुरू-निर्देश के बिना किसी भी विषय का सम्यक् ज्ञान प्राप्त नहीं होता'- यह वाक्य सदैव स्मरण रखने योग्य है।

अगले पृष्ठों में क्रमश: विभिन्न देवी-देवताओं के पूजन-उपचार में प्रदर्शित

की जाने वाली तथा आवहनादि कर्म, न्यास, पूजा, उपासना, शान्ति-रक्षण, बलिदान, होम, सन्ध्या, योग, भोजन आदि के समय प्रयोग में आने वाली विभिन्न मुद्राओं का क्रमशः सचित्र उल्लेख किया गया है। कुछ मुद्राएँ ऐसी भी हैं जो एक से अधिक कर्मों में प्रयुक्त होती हैं। पाठकों की सुविधा के लिए उनकी प्रतिलिपियों को भी यथास्थान प्रदर्शित कर दिया गया है। अन्त में, कुछ ऐसी मुद्राओं का भी उल्लेख किया गया है जिन्हें यथा समय विभिन्न कर्मों में प्रयुक्त किया जाता है। कुछ मुद्राएँ ऐसी भी हैं जो नाम-रूप में एक जैसी अथवा मिलती-जुलती प्रतीत होती हैं। वर्गीकरण की दृष्टि से उनका उल्लेख भी यथा स्थान किया गया है।

इस ग्रंथ में अधिकाधिक मुद्राओं के विवरण तथा चित्र वर्गीकृत रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। इनके अतिरिक्त अन्य विषयों से सम्बन्धित कुछ मुद्राएँ और भी हो सकती हैं। यदि कभी संभव हुआ तो उनका उल्लेख भी अगले संस्करण में किया जा सकेगा।

पद्म मुद्रा

गरुड़ मुद्रा

वनमाला मुद्रा

कौस्तुभ मुद्रा

उन्मादिनी मुद्रा

सर्व विद्राविणी मुद्रा

सर्वमहांकुशा मुद्रा

सर्वाकर्षिणी मुद्रा

त्रिखण्डा मुद्रा

व्याख्यान मुद्रा

लक्ष्मी मुद्रा

खड्ग मुद्रा

डमरू मुद्रा

चर्म मुद्रा

पाश मुद्रा

अंकुश मुद्रा

बीजपूर मुद्रा

लड्डूक (मोदक) मुद्रा

चक्र मुद्रा

नारसिंही मुद्रा

संरक्षिणी (मुशल) मुद्रा

दन्त मुद्रा

परशु मुद्रा

विघ्न मुद्रा

१. श्री विष्णु की मुद्राएँ

19 एकोनविंशतिर्मुद्रा विष्णोरुक्ता मनीषिभिः।
शंख चक्र गदा पद्‌म वेणु 'श्रीवत्स कौस्तुभाः।
वनमाला तथा ज्ञानमुद्रा बिल्वाह्वया तथा।
गरुणर्ख्या परा मुद्रा विष्णो सन्तोष दायकाः।
नारसिंही च वाराही हयाग्रैवी धनुस्तथा।
वाण मुद्रा' ततः पर्शुजगन्मोहिनिका च सा।

टीका-विष्णु की १९ मुद्राएँ कही गई हैं। उनके नाम निम्नानुसार हैं-
१. शंख, २. चक्र, ३. गदा, ४. पद्‌म, ५. वेणु, ६. श्रीवत्स, ७. कौस्तुभ, ८. वनमाला, ९. ज्ञान, १०. बिल्व, ११. गरुड़, १२. नारसिंही, १३. वाराही, १४. हयग्रैवी, १५. धनु, १६. वाण, १७. परशु, १८. जगन्मोहिनी अथवा त्रैलोक्य मोहिनी तथा १९.काम। इन मुद्राओं का सचित्र वर्णन अगले पृष्ठों पर किया गया है।

(टिप्पणी-इनमें से कुछ मुद्राएँ एक से अधिक प्रकार से बनाई जाती हैं। उनका उल्लेख भी साथ ही कर दिया गया है।

विशेष-किन्ही ग्रंथों में 'काम मुद्रा' के स्थान पर 'परा मुद्रा' का उल्लेख पाया जाता है तथा किन्ही में 'घण्टा' मुद्रा को भी विष्णु-मुद्राओं के अन्तर्गत ही गिना गया है।

१. शंख मुद्रा

वामांगुष्ठं तु संग्रह्य दक्षिणेन तु मुष्टिना।
कृत्वोत्तानां ततोमुष्टि मंगुष्ठं तु प्रसारयेत्।।
वामांगुल्य स्तथाश्लिष्टाः संयुक्ताः स्युः प्रसारिताः।
दक्षिणांगुष्ठ संपृष्टा मुद्रैया शंङ्ख मुद्रिका।।

टीका-बाँये हाथ के अँगूठे को दाँई मुट्ठी में रखें, फिर दाँई मुट्ठी को ऊर्ध्वमुख रखते हुए उसके अँगूठे को फैलादें। अब बाँये हाथ की सभी अँगुलियों को एक दूसरी के साथ सटाते हुए फैलादें। तत्पश्चात् बाँये हाथ की फैली अँगुलियों को दाँई ओर घुमाकर दाँये हाथ के अँगूठे का स्पर्श करें। इस प्रकार बनने वाली मुद्रा को 'शंख मुद्रा' कहा जाता है।

२. चक्र मुद्रा

हस्तौ च सम्मुखी कृत्वा सन्नत प्रोथितांगुली।
तलान्तर्मिलितांगुष्ठौ सुभुग्नौ सुप्रसारितौ।।
कनिष्ठांगुष्ठकौ लग्नौ मुद्रैषा चक्र संज्ञिका।।

टीका-दोनों हाथों को सामने की ओर इस प्रकार रखें कि हथेलियाँ ऊपर रहें। फिर दोनों हाथों की अँगुलियों को मोड़कर मुट्ठियाँ बनालें। तदुपरान्त दोनों अँगूठों को झुका कर परस्पर स्पर्श करायें तथा दोनों हाथों की अँगुलियों को फैलादें। अँगूठे की भाँति दोनों कनिष्ठिकाएँ भी एक दूसरी का स्पर्श करती रहें। इसे 'चक्र मुद्रा' कहा जाता है।

३. गदा मुद्रा

अन्योन्याभिमुखौ हस्तौ कृत्वा तु ग्रथितांगुलीः।
अंगुष्ठमध्यमे भूयः संलग्ने संप्रसारिते।।
गदामुद्रेय मुदिता विष्णोः सन्तोष वर्द्धिनी।।

टीका-पहले दोनों हाथों की हथेलियों को मिलायें, फिर दोनों हाथों की अँगुलियों को परस्पर ग्रथित करें। इस स्थिति में दोनों अँगूठों को बीच में उनके सामने की ओर लगादें। इसे 'गदा मुद्रा' कहते हैं।

४. पद्म मुद्रा

हस्तौ तु सम्मुखौ कृत्वा संहत प्रोन्नतांगुली:।
तलान्तर्मिलितांगुष्ठौ कृत्वैष्ण पद्म मुद्रिका।।

टीका-दोनों हाथों को सामने करके, अँगुलियों को ऊपर करें। इसके बाद दोनों अँगूठों को अँगुलियों के तल भाग से स्पर्श करायें। इसे 'पद्म मुद्रा' कहते हैं।

५. वेणु मुद्रा

ओष्ठे वामकरांगुष्ठे लग्नस्तस्य कनिष्ठिके।
दक्षिणांगुष्ठसंगर्गात्तत्कनिष्ठा प्रसारिता।।
तर्जनी मध्यमानामाः किञ्चित्संकोच्य चालिताः।
वेणुमुद्रा भवेदेषा सुगुप्ता प्रेयसी हरेः।।

टीका-बाँये हाथ के अँगूठे को होठ का तथा कनिष्ठा को दाँयें हाथ के अँगूठे का स्पर्श करायें। दाँये हाथ की कनिष्ठा को फैला रहने दें। दाँयें हाथ की शेष तीनों अँगुलियों (तर्जनी, मध्यमा तथा अनामा) को थोड़ा झुका कर, आगे-पीछे की ओर चलायमान करें। यह श्री कृष्ण को अत्यधिक प्रिय 'वेणु मुद्रा' है। यह मुद्रा गोपनीय है। इसी को 'वंशी मुद्रा' भी कहते हैं।

६. श्रीवत्स मुद्रा

अन्योन्य स्पृष्टकरयो मंध्यमानामिकांगुली: ।
अंगुष्ठेन तु बध्नीयात् कनिष्ठामूल संस्थिते ।।
तर्जन्यौ कारयेदशा मुद्रा श्रीवत्ससंज्ञका ।।

टीका-दोनों हाथों की हथेलियों को आमने-सामने रखते हुए दोनों की मध्यमा तथा अनामिकाओं को थोड़ा झुका कर अँगूठों से दबालें। फिर दोनों हाथों की तर्जनियों को अपने-अपने हाथ की कनिष्ठिकाओं के मूल में लगायें। इसे 'श्रीवत्स मुद्रा' कहते हैं।

७. कौस्तुभ मुद्रा

अनामां पृष्ठ संलग्नां दक्षिणस्य कनिष्ठिकाम्।
कनिष्ठयान्ययाबध्य तर्जन्या दक्षया तथा।।
वामानामां च बध्नीयाद् दक्षिणां गुष्ठमूलकै।
अंगुष्ठ मध्यमे वामे संयोज्य सरला पराः।।
चतस्रोप्यग्र संलग्ना मुद्रा कौस्तुभ संज्ञिका।।

टीका-दाँयि अँगूठे का स्पर्श करते हुए दाँई अनामिका तथा कनिष्ठिका को बाँई कनिष्ठिका से तथा दाँई तर्जनी को बाँई अनामिका से बाँधें। बाँयि अँगूठे तथा मध्यमा से दाँयि अँगूठे कें मूल का स्पर्श करें। शेष अँगुलियों को सीधा रखें। दोनों हाथों की चारों अँगुलियाँ परस्पर स्पर्श करती रहनी चाहिए। इसे 'कौस्तुभ मुद्रा' कहते हैं।

८. वनमाला मुद्रा

स्पृशेत्कष्ठादिपादान्तं तर्जन्यांगुष्ठया तथा।
करदयेन मालावन् मुद्रेयं वन मालिका।।

टीका-दोनों हाथों को आपस में मिलाये हुए तर्जनी तथा अँगूठे द्वारा ग्रीवा से पाद पर्यन्त शरीर का स्पर्श करें। इसे 'वनमाला मुद्रा' कहते हैं।

६. ज्ञान मुद्रा

तर्जन्यंगुष्ठकौ सक्तावग्रतो हृदि विन्यसेत्।
वाम हस्ताम्बुजं वाभे जानुमूर्द्धनि विन्यऐत्।।
ज्ञानमुद्रा भवे देषा रामचन्द्रस्य प्रेयसी।।

टीका-दाँयि हाथ के अँगूठे तथा तर्जनी को एक दूसरे से मिलायें। शेष अँगुलियों को थोड़ा झुकाये रखें। इस भाँति अँगुलियों को संयोजित करके हाथ को हृदय पर रखें। बाँये हाथ को बाँई जाँघ पर इस प्रकार रखें कि हथेली ऊपर की ओर रहे। यह रामचन्द्रजी की अत्यन्त प्रिय 'ज्ञान मुद्रा' है।

१०. बिल्व मुद्रा

अंगुष्ठं वाममुद्धाटित मितरकरांगुष्ठकेनाय बध्वा।
तस्याग्रं पीडयित्वांगुलिभि रपि च ता वाभ हस्तांगुलीभिः।।
बध्वा गाढं हृदि स्थापयतु विमलधीर्व्याहरन्मारबीजं।
बिल्वाख्या मुद्रिकैषा स्फुटमिह कथिता गोपनीया विधिज्ञैः।।

टीका-बाँये हाथ के अँगूठे को सीधा खड़ा करके उसे दाँये हाथ के अँगूठे से पकड़ें, फिर बाँये अँगूठे को पकड़े हुए दाँये अँगूठे से दाँये हाथ की सभी अँगुलियों को (जो पहले से ही अँगूठे को पकड़े हुए हैं) पकडें। साथ ही साथ काम बीज 'क्लीं' का उच्चारण भी करें। ज्ञानियों द्वारा अत्यन्त गोपनीय कही गई यह 'बिल्व मुद्रा' है।

११. गरुड़ मुद्रा

हस्तौ तु विमुखौ कृत्वाग्रन्थयित्वा कनिष्ठिके।
मिथस्तर्जनिकेश्लिष्ठे श्लिष्टावंगुष्ठकौ तथा।।
मध्यमानामिका द्वै तु द्वौ पक्षाविव चालयेत्।
एषा गरुड़मुद्राख्या विष्णोः सन्तोषवर्द्धिनी।।

टीका-दोनों हाथों के पृष्ठभाग को एक दूसरे से मिलायें, तत्पश्चात् नीचे लटके हुए दोनों हाथों की तर्जनी तथा कनिष्ठिका को एक दूसरी के साथ ग्रथित करें। इसी स्थिति में दोनों हाथों की अनामा तथा मध्यमाओं को उल्टी दिशा में, किसी पक्षी के पंखों की भाँति ऊपर नीचे करें। श्री विष्णु का सन्तोष-वर्द्धन करने वाली इस मुद्रा को 'गरुड़ मुद्रा' कहते हैं।

१२. नारसिंही मुद्रा (१)

जानुमध्ये करौदत्त्वा चिबुकोष्ठौ समाकृतौ।
हस्तौ च भूमि संलग्नौ कम्पमानः पुनः पुनः।।
मुखं च विवृतं कुर्याल्लेलिहानां च जिह्विकाम्।
नारसिंही भवेदेषा मुद्रा तत्प्रीतिवर्द्धिनी।।

टीका-दोनों जाँघों के मध्य में हाथ रखते हुए उन्हें भूमि पर स्थापित करें। चिबुक तथा होठों को परस्पर स्पर्श कराना चाहिए। फिर पृथ्वी पर रखे हुए हाथों को बारम्बार कम्पायमान करते हुए, मुख को सामान्य स्थिति में लायें तथा जीभ को 'लेलिहाना मुद्रा' की भाँति बाहर निकालें। यह विष्णु की प्रीतिवर्द्धक 'नारसिंही मुद्रा' है।

(टिप्पणी-दूसरे प्रकार की नृसिंह (नारसिंही) मुद्रा का वर्णन अगले पृष्ठ पर किया गया है।)

१२. नारसिंही मुद्रा (२)

अंगुष्ठाभ्यां तु करयोरथाक्रम्य कनिष्ठिके।
अधौमुखीभिः सूर्याभिः मुद्रेयं नृहरेः स्मृताः।।

टीका-हथेलियों को अधोमुख करके, दोनों हाथ के अँगूठों तथा कनिष्ठिकाओं को नीचे की ओर फैलादें। यह 'नृसिंह मुद्रा' का दूसरा प्रकार है।

१३. वाराह मुद्रा (१)

दक्षोपरि करं वामं कृत्वोत्तानमधः सुधीः।
भ्रामयेदिति संप्रोक्ता मुद्रा वाराह संज्ञिका।।

टीका-दाँये हाथ के पृष्ठभाग पर बाँई हथेली को रखें। बाँये हाथ की अँगुलियों को इस तरह मोड़ें कि वे अधोमुख दाँये हाथ की हथेली का स्पर्श करने लगें। अब इस तरह घूमी हुई बाँये हाथ की अँगुलियों को दाँये हाथ की अँगुलियों से पकड़लें। इसे 'वाराह मुद्रा' कहते हैं।

(टिप्पणी-दूसरे प्रकार की 'वाराह मुद्रा' का वर्णन अगले पृष्ठ पर किया गया है।)

१३. वाराह मुद्रा (२)

दक्षहस्तं चोर्ध्वमुखं वाम हस्त मधोमुखम्।
अंगुल्यग्रं तु संयुक्तं मुद्रा वाराह संज्ञिका।।

टीका-बाँई हथेली को दाँये हाथ की हथेली पर इस प्रकार रखें कि दोनों हाथों की अँगुलियों का अग्रभाग आपस में स्पर्श करता रहे। यह दूसरे प्रकार की 'वाराह मुद्रा' है।

१४. हयग्रीव मुद्रा

वामहस्ततले स्थित्वा दक्षांगुलि मधोमुखीम्।
संरोप्य मध्यमा नामेमुखस्याधो विकुञ्चयेत्।।
हयग्रीवप्रिया मुद्रा तन्मूर्तेरनुकारिणी।।

टीका-दाँयें हाथ की अँगुलियों को बाँये हाथ की हथेली के नीचे रखें। दाँये हाथ की अँगुलियाँ अधोमुख होनी चाहिये। तदुपरान्त अँगुलियों को उठा कर बाँये हाथ की मध्यमा तथा अनामिका से दाँये हाथ की अँगुलियों को उठाते हुए मुँह के समीप लाकर खोल दें।

हयग्रीवा के स्वरूप को व्यक्त करने वाली यह मुद्रा को 'हयग्रीव मुद्रा' अथवा 'हयग्रैवी मुद्रा' कहा जाता है।

१५. धनु मुद्रा

वामस्य मध्यभाग्रं तु तर्जन्यग्रेण योजयेत्।
अनामिकां कनिष्ठां च तस्यांगुष्ठेन पीडयेत्।।
स्पर्शयि द्वामके स्कन्धे धनुर्मुद्रियमीरिता।।

टीका-बाँये हाथ की मध्यमा को दाँये हाथ की तर्जनी से तथा बाँये हाथ की अनामिका को दाँये हाथ की कनिष्ठिका से मिलायें। इस भांति मिली हुई अनामिका तथा कनिष्ठा को अँगूठे से दवाकर, उनसे बाँये कंधे का स्पर्श करें।

इसे 'धनु अथवा 'धनुष मुद्रा' कहते हैं।

१६. वाण मुद्रा

दक्षमुष्टेस्तु तर्जन्या दीर्घया बाण मुद्रिका।।
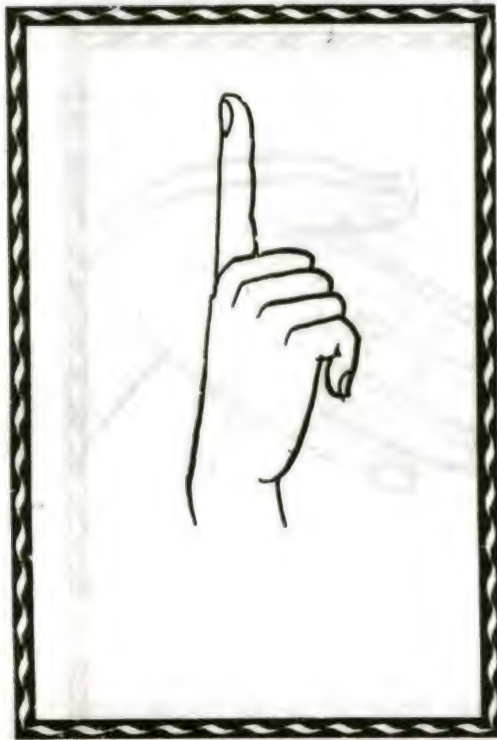
टीका-दाँये हाथ की मुट्ठी बाँधकर उसकी तर्जनी को सीधी खड़ी करदें। इसे 'वाण मुद्रा' कहा जाता है।

१७. परशु मुद्रा

तते तलं तु करयोस्तिर्यक्संयोज्य चांगुलीम्।
-संहतां प्रसृतां कुर्यान् मुखद्रेयं पर्शु संज्ञिका।।

टीका-दोनों हथेलियों को मिलाकर, हाथ को ऊपर नीचे इस प्रकार करें, जैसे कुल्हाड़ी चला रहे हों।
इसे 'परशु मुद्रा' कहते हैं।

१८. त्रैलोक्य मोहिनी मुद्रा

ऊर्ध्वस्यांगुष्ठमुष्टी द्वै मुद्रा त्रैलोक्य मोहिनी।
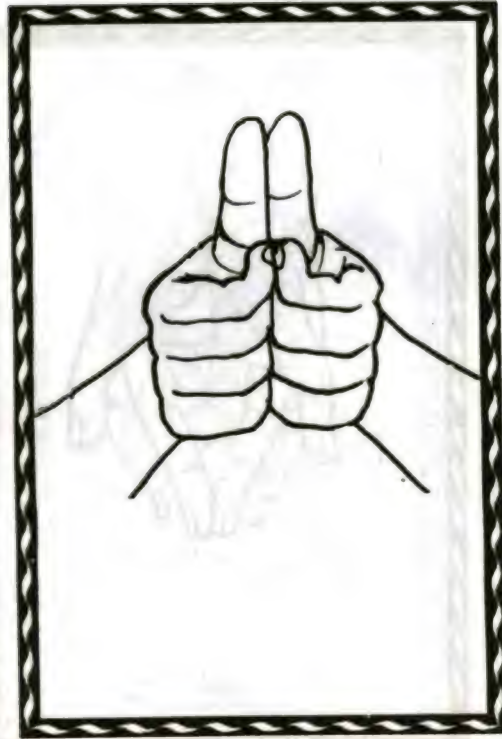
टीका-पहले दोनों हाथों की मुट्ठी बाँध कर, मुट्ठियों को परस्पर मिलायें, तत्पश्चात् दोनों अँगूठों का परस्पर स्पर्श कराते हुए उन्हें ऊपर उठायें।

इसे 'त्रैलोक्य मोहिनी मुद्रा' कहते हैं। इसी मुद्रा का दूसरा नाम 'जगमोहिनी' भी है।

१६. काम मुद्रा

हस्तौ तु सम्पुटौ कृत्वा प्रसृतांगुलिकौ तथा।
तर्जन्यौ मध्यमा पृष्ठे ह्यंगुष्ठौ मध्यमाश्रितौ।।
काममुद्रेय मुदिता सर्वदेव प्रियङ्करी।।

टीका-दोनों हाथों को मिलाकर सम्पुट बनायें तथा अंगुलियों को फैली हुई रखें। तत्पश्चात् दोनों तर्जनियों को अपनी-अपनी मध्यमाओं के पीछे रखें तथा दोनों अँगूठों को भी अपनी-अपनी मध्यमाओं पर रखें।

यह 'काम मुद्रा' सभी देवताओं को प्रिय तथा आनन्द दायक है।

(टिप्पणी-इसे 'परा मुद्रा' भी कहा जाता है।

इति श्री विष्णु मुद्रा समाप्ताः

२. श्री शिव की मुद्राएँ

कामभुद्रा पराख्याता शिवस्य दश मुद्रिका।
लिङ्गयोनि त्रिशूलाक्ष मालेष्टाभिर्मृगाह्वया।।
खट्वाङ्ग च कपालाख्या डमरू: शिव तोषिका।
महादेव प्रियाणां च कथ्यन्ते लक्षणान्यय।।

टीका-शिव की १० मुद्राएँ कही गई हैं। उनके नाम निम्नानुसार हैं-

१. लिंग मुद्रा, २. योनि मुद्रा, ३. त्रिशूल मुद्रा, ४. अक्षमाला मुद्रा, ५. वर मुद्रा, ६. अभय मुद्रा, ७. मृगी मुद्रा, ८. खट्वांग मुद्रा, ९. कपाल या कापालिकी मुद्रा तथा १०. डमरूक मुद्रा।

इन्हें सम्मिलित रूप में 'काम मुद्रा' भी कहा जाता है।

इन मुद्राओं का सचित्र वर्णन अगले पृष्ठों पर किया गया है।

१. लिङ्ग मुद्रा

उच्छ्रितं दक्षिणां गुष्ठं वामांगुष्ठेन बन्धयेत्।
वामांगुली दक्षिणाभिरंगुलीभिश्च बन्धयेत्।।
लिङ्ग मुद्रायमाख्याता शिव सान्निध्य कारिणी।।

टीका-दाँये हाथ के अँगूठे को ऊपर उठाकर उसे बाँये अँगूठे से बाँधें। तदुपरान्त दोनों हाथों की अँगुलियों को परस्पर बाँधलें। यह शिवसान्निध्यकारक 'लिङ्ग मुद्रा' है।

२. योनि मुद्रा

मिथः कनिष्ठिके बध्वा तर्जनीभ्यामनामिके।
अनामिकोर्ध्व संश्लिष्टे दीर्घमध्यमयोरथ।।
अँगुष्ठागुद्वयं न्यस्येद्योनिमुद्रेय मीरिता।।
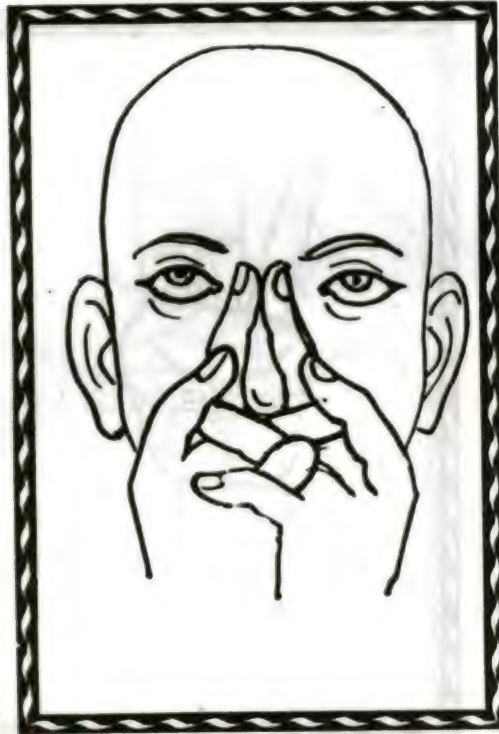
टीका-दोनों कनिष्ठिकाओं को बाँध कर तर्जनी तथा अनामिकाओं को बाँधें। अनामिका को मध्यमा से पहले थोड़ा सा मिला कर फिर उन्हें सीधा करदें। तत्पश्चात् दोनों अँगूठों को एक दूसरे पर रखें। इसे 'योनि मुद्रा' कहते हैं।

(टिप्पणी-'योनि मुद्रा' का एक अन्य प्रकार भी है, जिसे 'महायोनि मुद्रा' भी कहा जाता है। उसका उल्लेख आगे किया जायेगा।)

३. त्रिशूल मुद्रा

अँगुष्ठेन कनिष्ठां तु बद्ध्वा शिष्टांगुलि त्रयम्।
प्रसारयेत्त्रिशूलाख्या मुद्रैषा परिकीर्तिता।।

टीका-दोनों कनिष्ठिकाओं को दोनों अँगूठों से बाँध (दबा) कर शेष सभी अँगुलियों को सीधा करदें।

इसे 'त्रिशूल मुद्रा' कहते हैं।

४. अक्षमाला मुद्रा

अंगुष्ठ तर्जन्यग्रे तु ग्रंथयित्वांगुलि त्रयम्।
प्रसारयेदक्षमाला मुद्रेयं परिकीर्तिता।।

टीका-दोनों अँगूठों तथा तर्जनियों के अग्रभाग को मिलायें। फिर दोनों हाथों की शेष तीनों अँगुलियों को परस्पर ग्रथित करके सीधा करें अर्थात् फैलादें।

इसे 'अक्षमाला मुद्रा' कहते हैं।

५. वर मुद्रा

अध:स्थितो दक्षहस्त: प्रसृतो वरमुद्रिका।

टीका-दाँई हथेली को अधोमुख करके, हाथ को फैलादें। इसे 'वर मुद्रा' कहते हैं।

६. अभय मुद्रा

ऊदर्ध्वीकृतो वामहस्त: प्रसृतोभयमुद्रिका।।

टीका-बाँये हाथ को ऊपर की ओर उठायें तथा हथेली को खुली रखें। इसे 'अभय मुद्रा' कहते हैं।

७. मृगी मुद्रा

मिलितानामि कांगुष्ठं मध्यमाग्रे नियोजयेत्।
शिष्टांगुल्युच्छ्रिते कुर्यान्मृग मुद्रेयमीरिता।।

टीका-अनामिका तथा अँगूठे को मिला कर उन्हें मध्यमा के अग्रभाग पर रखें तथा शेष दो अँगुलियों को ऊपर की ओर सीधी खड़ी करदें। इसे 'मृग मुद्रा' अथवा 'मृगी मुद्रा' कहते हैं।

८. खट्वाङ्ग मुद्रा

पञ्चांगुल्यो दक्षिणास्तु मिलिता ह्यूर्द्ध्वमूर्द्धता।
खट्वाङ्ग मुद्रा विख्याता शिवस्यातिप्रिया मता।।

टीका-दाँये हाथ की पाँचों अँगुलियों को मिलाकर ऊपर की ओर उठायें। यह शिवजी को अत्यन्त प्रिय 'खट्वाङ्ग मुद्रा' कहलाती है।

६. कापालिकी मुद्रा

पात्रवद्वामहस्तं च कृत्वाङ्के वामके तथा।
निधायोच्छ्रितवतत्कुर्यान् मुद्रा कापालिकी मता।।
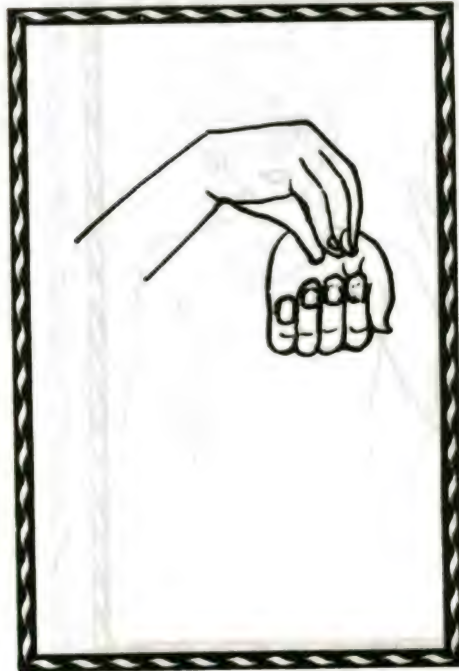
टीका–बाँये हाथ को पात्र जैसा बनाकर, उसमें अपनी बाँई ओर से कुछ उठाकर रखा जाता है– ऐसा प्रदर्शित करने को 'कपाल मुद्रा' अथवा 'कापालिकी मुद्रा' कहा जाता है।

१०. डमरू मुद्रा

मुष्टिं च शिथिलां बद्ध्वा ईषदुच्छितिमध्यमाम्।
दक्षिणान्त्द्ध्वमुत्तोल्य कर्णदिशे प्रचालयेत्।।
एषा मुद्रा डमरूका सर्वविघ्नविनाशिनी।।

टीका-दाँये हाथ की कुछ हल्की मुट्ठी बाँध कर मध्यमा को थोड़ा सा ऊपर उठाकर दाँये कान तक ले जाकर थोड़ा सा हिलायें (प्रचालित करें) तो 'डमरू मुद्रा' बनती है।

इसे 'डमरूक मुद्रा' भी कहा जाता है।

इति श्री शिव मुद्रा समाप्ताः

३. श्री गणेश की मुद्राएँ

दन्तपाशांकुशाविघ्न पर्शु लड्डूक संज्ञका: ।
बीजपूरोह्वया मुद्रा विज्ञेया विघ्नपूजने ।।
ततो गणेशमुद्राणामुच्यन्ते लक्षणानि तु ।।

टीका-गणेश की सात मुद्राएँ कही गई हैं । उनके नाम निम्नानुसार हैं-

१. दन्त, २. पाश, ३. अंकुश, ४. विघ्न, ५. परशु, ६. लड्डूक और ७. बीजपूर ।

इन मुद्राओं का सचित्र वर्णन अगले पृष्ठों पर किया गया है ।

१. दन्त मुद्रा

उत्तानोर्ध्वमुखी मध्या सरला बद्धमुष्टिका।
दन्तमुद्रा समाख्याता सर्वांगम विशरदैः।।
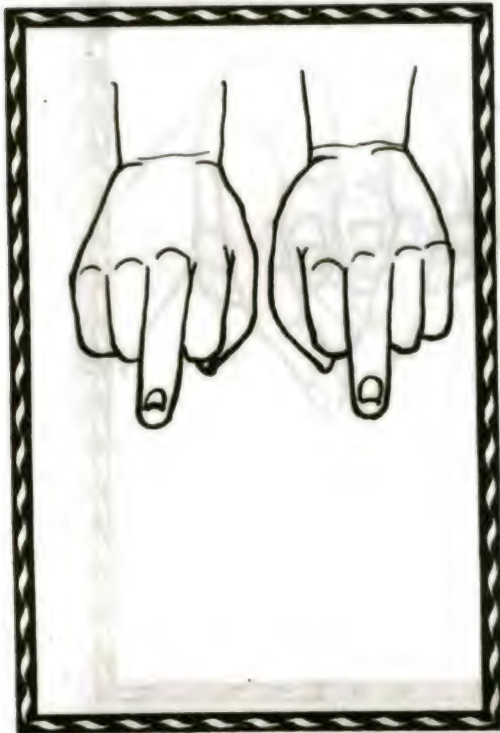
टीका-दोनों हाथों की मुट्ठियाँ बाँध कर, उनकी मध्यमा अँगुलियों को सीधा करदें। सभी शास्त्रज्ञों ने इसे 'दन्तमुद्रा' कहा है।

टिप्पणी-यदि एक ही हाथ से यह मुद्रा प्रदर्शित करनी हो तो केवल दाँये हाथ की ढीली मुट्ठी बाँध कर, उसकी मध्यमा अँगुली को ऊपर की ओर सीधी कर देना चाहिए।

२. पाश मुद्रा

वाममुष्टेस्तु तर्जन्या दक्षमुष्टेस्तु तर्जनीम् ।
संयोज्यांगुष्ठकाग्राभ्यां तर्जन्यग्रे समुत्क्षिपेत् ।।
एषा पाशाह्वया मुद्रा विद्वद्भिः परिकीर्तिता ।।

टीका-दोनों हाथों की मुट्ठियाँ बाँध कर बाँई तर्जनी को दाँई तर्जनी से बाँधें। तदुपरान्त दोनों तर्जनियों को अपने-अपने अँगूठे से दबायें। फिर दाँई तर्जनी के अग्रभाग को थोड़ा अलग करदें।

विद्वानों ने इसे 'पाश मुद्रा' कहा है।

३. अंकुश मुद्रा

ऋज्वीं च मध्यमाकृत्वा तर्जनीं मध्यपर्वणि।
संयोज्या कुञ्चयेत्किञ्चित् मुद्रैषांकुश संज्ञिका।।

टीका-दोनों मध्यमा अंगुलियों को सीधा रखते हुए, दोनों तर्जनियों को मध्यपर्व के समीप परस्पर बाँधें। फिर दोनों तर्जनियों को थोड़ा झुकाकर एक दूसरी को खींचें।

इसे 'अंकुश मुद्रा' कहते हैं।

४. विघ्न मुद्रा

तर्जनी मध्यमा सन्धि निःसृतांगुष्ठ मुष्टिका।
अधोमुखी दीर्घरूपा मध्यमा विघ्ननामिका।।
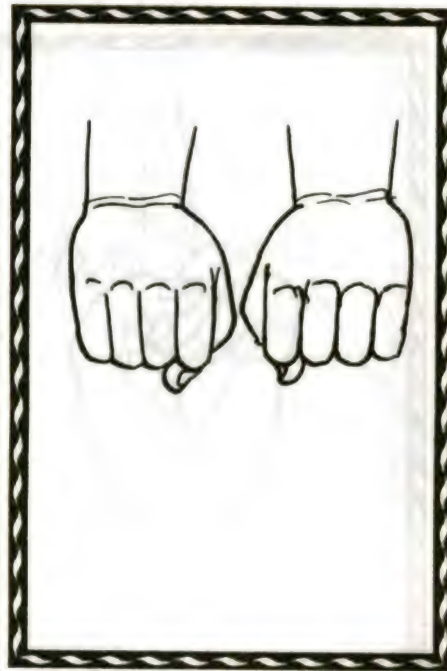
टीका-दोनों हाथों की मुट्ठियाँ बाँध कर अँगूठों को तर्जनी तथा मध्यभाओं के बीच इस प्रकार से रखें कि अंगूठे का अग्रभाग थोड़ा सा बाहर निकला दिखाई दे।

इसे 'विघ्न मुद्रा' कहते हैं।

५. परशु मुद्रा

तते तलं तु करयोस्तिर्यक् संयोज्य चांगुलीम्।
संहतां प्रसृतां कुर्यात् मुखद्रेयं पर्शु संज्ञिका।।

टीका-दोनों हथेलियों को मिलाकर, हाथ को इस प्रकार ऊपर-नीचे करें, जैसे कि कुल्हाड़ी चला रहे हों।

इसे 'परशु मुद्रा' कहा जाता है।

टिप्पणी-इस मुद्रा का सचित्र वर्णन विष्णु की मुद्राओं के अन्तर्गत संख्या १७ में पहले भी किया जा चुका है।

६. लड्डूक (मोदक) मुद्रा

पर्शुमुद्रा निगदिता प्रसिद्धा लड्डुमुद्रिका।।

टीका-पूर्वकथित 'परशु मुद्रा' ही 'लड्डूक मुद्रा' के रूप में भी प्रसिद्ध है।

विशेष-हाथ की सभी अंगुलियों को ऊपर की ओर उठाकर लड्डू जैसा आकार देने को 'लड्डूक मुद्रा' अथवा 'मोदक मुद्रा' कहा जाता है। इस मुद्रा का स्वरूप ऊपर के चित्र में प्रदर्शित है।

७. बीजपूर मुद्रा

बीजपूराह्वया मुद्रा प्रसिद्धत्वा दुपेक्षिता।।

टीका-बीजपूर मुद्रा अप्रसिद्ध होने के कारण उपेक्षित रही है।

विशेष-दोनों हाथों की अँगुलियों को अग्रभाग में मिला कर, उनके ऊपर अँगूठों को रखें। इस प्रकार बिजौरा नीबू की आकृति तैयार होगी। इसी को 'बीजपूर मुद्रा' कहा जाता है। इस मुद्रा के स्वरूप को ऊपर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

इति श्री गणेश मुद्राः समाप्ताः

४. श्री सूर्य की मुद्राएँ

सूर्यस्यैकैव पद्माख्या।।

टीका- सूर्य की केवल एक 'पद्म मुद्रा' है।

टिप्पणी- 'पद्म मुद्रा' का सचित्र वर्णन श्री विष्णु की मुद्राओं के अन्तर्गत संख्या ४ में किया जा चुका है। पृष्ठ संख्या २१ पर देखलें।

५. श्री शक्ति (दुर्गा) की मुद्राएँ

पाशांकुश वराभीति खड्गचर्मधनुःशराः।
मौशली मुद्रिका दौर्गी मुद्रा शक्तेः प्रियंकरा।।
शाक्तेयीनां च मुद्राणां कथ्यन्ते लक्षणानितु।।

टीका-शक्ति (दुर्गा) की दश मुद्राएँ हैं। उनके नाम निम्नानुसार हैं-

१. पाश, २. अंकुश, ३. वर, ४. अभय, ५. खड्ग ६. चर्म, ७. धनु, ८. शर, ९. संरक्षिणी अर्थात् मुशली और दुर्गा अथवा दौर्गी।

पाश मुद्रा का पृष्ठ ५२ पर, अंकुश मुद्रा का पृष्ठ ५३ पर वर मुद्रा का पृष्ठ ४४ पर, अभय मुद्रा का पृष्ठ ४५ पर धनु मुद्रा का पृष्ठ ३४ पर तथा शर (वाण) मुद्रा का वर्णन पृष्ठ संख्या ३५ पर किया जा चुका है। अन्य मुद्राओं का सचित्र वर्णन अगले पृष्ठों पर किया गया है।

१. खड्ग मुद्रा

कनिष्ठानामिका बद्ध्वा स्वांगुष्ठेनैव दक्षतः।
मितांगुली च प्रसृते संस्पृष्टे खड्ग मुद्रिका।।

टीका- कनिष्ठिका तथा अनामिका अँगुलियों को एक दूसरी के साथ बाँधकर अँगूठों को उनसे मिलायें। शेष अँगुलियों को एक साथ मिला कर फैला दें।

उक्त प्रकार से 'खड्ग मुद्रा' बनती है।

२. चर्म मुद्रा

वामहस्तं तथा तिर्यक् कृत्वा चैव प्रसार्य च।
आकुंचितांगुलिं कुर्याच्चर्ममुद्रेयमीरिता।।

टीका-फैले हुए बाँये हाथ को थोड़ा मोड़कर अँगुलियों को भी थोड़ा सा मोड़ लेने से 'चर्म मुद्रा' बनती है।

३. संरक्षिणी (मुशल) मुद्रा

मुष्टिं कृत्वा कराभ्यां च वामस्योपरि दक्षिणम्।
कुर्यान्मुशल मुद्रेयं सर्वविघ्न विनाशिनी।।

टीका-दोनों हाथों की मुट्ठियाँ बाँधें। फिर दाँई मुट्ठी को बाँई के ऊपर रखें। यह समस्त विघ्नों को नष्ट करने वाली 'मुशल मुद्रा' है। इसी को 'मुशली मुद्रा' तथा संरक्षिणी मुद्रा' भी कहते हैं।

४. दुर्गा (दौर्गी) मुद्रा

मुष्टिं कृत्वा कराभ्यां च वामस्योपरि दक्षिणम्।
कृत्वा शिरसि संयोगाद् दुर्गामुद्रेयमीरिता।।

टीका-दोनों हाथों की मुट्ठियाँ बाँध कर दाँई मुट्ठी को बाँई पर रखें। फिर उन्हें शिर से मिलायें।

इसे दुर्गा अथवा 'दौर्गी मुद्रा' कहते हैं।

टिप्पणी-कुछ विद्वान् इसे 'दुर्ग मुद्रा' भी कहते हैं।

इति शक्ति (दुर्गा) मुद्रा समाप्ताः

५. विभिन्न देवियों की मुद्रायें

प्रमुख पंच देवों- १. विष्णु, २. शिव, ३. गणेश, ४. सूर्य तथा ५. शक्ति (दुर्गा) की मुद्राओं का सचित्र उल्लेख पिछले पृष्ठों में किया जा चुका है। अगले पृष्ठों में भगवती, लक्ष्मी, सरस्वती, श्यामा, त्रिपुरा आदि देवियों की पूजा में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न मुद्राओं का सचित्र उल्लेख किया जाएगा।

स्मरणीय है कि कुछ मुद्राएँ कई-कई देवी-देवताओं की पूजा में प्रयुक्त होती हैं, अतः उन सबका उल्लेख भी यथास्थान कर दिया गया है।

६. भगवती लक्ष्मी की मुद्राएँ

१. लक्ष्मी मुद्रा

लक्ष्मीमुद्रार्चने लक्ष्म्याचक्रमुद्रां तथा
बद्ध्वा मध्यमेद्वे प्रसार्य च।
कनिष्ठिके तथानीय तदग्रे मुष्टिके क्षिपेत्।।
लक्ष्मीमुद्रा परा ह्येषा सर्वसम्पत्प्रदायिनी।।

टीका-लक्ष्मीकी अर्चना में केवल एक लक्ष्मी मुद्रा का ही प्रयोग किया जाता है।

पहले 'चक्र मुद्रा' बनायें (देखें- विष्णु मुद्रा संख्या २, पृष्ठ १९) फिर मध्ममाओं को फैलादें। तत्पश्चात् अनामिका और कनिष्ठिकाओ के बीच से अँगूठों को बाहर निकालें।

यह 'लक्ष्मी मुद्रा' सभी सम्पत्तियों को देने वाली है।

टिप्पणी-कुछ साधक 'चक्र मुद्रा' को भी लक्ष्मी की अर्चना मुद्रा मानते हैं।

७. महा सरस्वती की मुद्राएँ

अक्षमाला तथा वीणा
व्याख्या पुस्तक मुद्रिका।
वाग्वादिन्यास्तु पूजते।।

टीका-भगवती वाग्वादिनी (सरस्वती) की पूजा में १. अक्षमाला, २. वीणा, ३. व्याख्यान, ४. पुस्तक तथा ५. वर मुद्रा का प्रयोग किया जाता है।

इन मुद्राओं में जिनका वर्णन अन्यत्र नहीं किया गया है उनका सचित्र वर्णन अगले पृष्ठों पर किया गया है। अक्ष (अक्षमाला) मुद्रा का वर्णन पृष्ठ ४३ पर तथा वर मुद्रा का वर्णन पृष्ठ ४४ पर किया गया है।

१. वीणा मुद्रा

वीणावादनं वद्धस्तौ कृत्वा सञ्चालयेच्छिरः।
वीणामुद्रेय माख्याता सरस्वत्थाः प्रियङ्करी।।

टीका-जिस स्थिति में दोनों हाथों के माध्यम से वीणा बजाई जाती है, उसी स्थिति में दोनों हाथों को लाकर (जैसे-दोनों हाथ वीणा को लिए हुए हों) शिर का संचालन करें।

यह सरस्वती की प्रिय 'वीणा मुद्रा' है।

७. महा सरस्वती की मुद्राएँ

अक्षमाला तथा वीणा

व्याख्या पुस्तक मुद्रिका।

वाग्वादिन्यास्तु पूजते।।

टीका–भगवती वाग्वादिनी (सरस्वती) की पूजा में १. अक्षमाला, २. वीणा, ३. व्याख्यान, ४. पुस्तक तथा ५. वर मुद्रा का प्रयोग किया जाता है।

इन मुद्राओं में जिनका वर्णन अन्यत्र नहीं किया गया है उनका सचित्र वर्णन अगले पृष्ठों पर किया गया है। अक्ष (अक्षमाला) मुद्रा का वर्णन पृष्ठ ४३ पर तथा वर मुद्रा का वर्णन पृष्ठ ४४ पर किया गया है।

१. वीणा मुद्रा

वीणावादनं वद्धस्तौ कृत्वा सञ्चालयेच्छिरः।
वीणामुद्रेय माख्याता सरस्वत्थाः प्रियङ्करी।।

टीका-जिस स्थिति में दोनों हाथों के माध्यम से वीणा बजाई जाती है, उसी स्थिति में दोनों हाथों को लाकर (जैसे-दोनों हाथ वीणा को लिए हुए हों) शिर का संचालन करें।

यह सरस्वती की प्रिय 'वीणा मुद्रा' है।

२. व्याख्यान मुद्रा

दक्षिणांगुष्ठतर्जन्या बग्रलग्ने पराङ्मुखे।
प्रसार्य संहितोत्ताना ह्येषा व्याख्यान मुद्रिका।।

टीका-दाँये हाथ की तर्जनी अँगुली तथा अँगूठे के अनुभाग को मिलायें। शेष अँगुलियों को आपस में मिलाते हुए ऊपर की ओर उठायें। यह 'व्याख्यान मुद्रा' है।

३. पुस्तक मुद्रा

वाममुष्टिं स्वाभिमुखीं कृत्वा पुस्तक मुद्रिका।।

टीका-बाँये हाथ की मुट्ठी बनाकर अपने सामने की ओर करने से 'पुस्तक मुद्रा' होती है।

८. भगवती त्रिपुरा की मुद्राएँ

दश मुद्राश्च समाख्याता स्त्रिपुराया प्रपूजने।
संक्षोभप्राविणाकर्षवश्योन्माद महांकुशा।
खेचरी बीजयो न्याख्या त्रिखण्डा परिकीर्तिता।।

टीका-भगवती त्रिपुरा के पूजन की दस मुद्राएँ हैं। उनके नाम निम्नलिखित हैं-

१. सर्व संक्षोभिणी, २. सर्व विद्राविणी, ३. सर्व आकर्णिनी, ४. सर्व वश्यकरी, ५. उन्मादिनी, ६. सर्व महांकुशा, ७. खेचरी, ८. बीज, ९. योनि और १०. त्रिखण्डा।

इन मुद्राओं का सचित्र वर्णन अगले पृष्ठों में किया जा रहा है।

टिप्पणी-कुछ विद्वान् 'त्रिखण्डा' को छोड़कर, शेष ९ मुद्राओं को ही भगवती त्रिपुरा की मुद्राएँ मानते हैं।

१. सर्वसंक्षोभिणी मुद्रा

मध्यमां मध्यमे कृत्वा कनिष्ठांगुष्ठरोधिते।
तर्जन्यौ दण्डवत्कृत्वा मध्यमोपर्यनामिके।।
क्षोभाभिधाना मुद्रेयं सर्वसंक्षोभकारिणी।।

टीका-मध्यमा को मध्य में रखते हुए अँगूठों और कनिष्ठिकाओं को मिलायें। तर्जनी को सीधा तथा अनामिका को मध्यमा के ऊपर रखें।

यह 'क्षोभ मुद्रा' अथवा 'सर्वसंक्षोभिणी मुद्रा' है। इसकी को 'सर्व संक्षोभकारिणी मुद्रा' भी कहते हैं।

२. सर्व विद्राविणी मुद्रा'

एतस्या एव मुद्राया मध्यमे सरले यदा।
क्रियेते परमेशानि तथा विद्रावणी यता।।
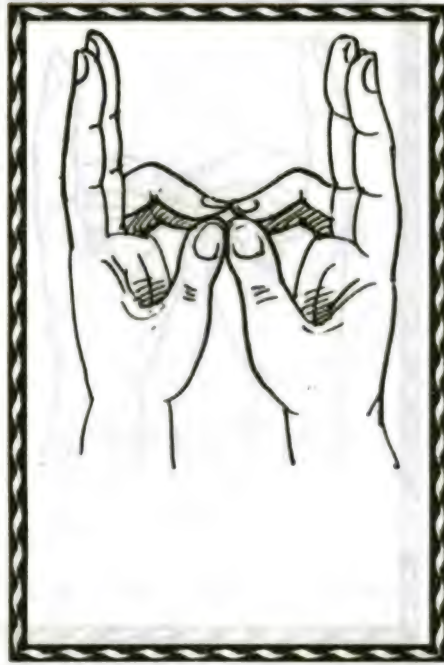
टीका–पूर्वोक्त 'सर्वसंक्षोभकारिणी मुद्रा' में जब मध्यमा अँगुली को ढीला (सरल) कर दिया जाता है तो वह परमेशानि वह 'सर्व विद्राविणी मुद्रा' बन जाती है।

इसी को 'विद्राविणी मुद्रा' भी कहते हैं।

३. सर्वाकर्षिणी मुद्रा

मध्यमा तर्जनीभ्यां च कनिष्ठानामिके समे।
अंकुशाकार रूपाभ्यां मध्यमे परमेश्वरिं।।
अंगुष्ठं तु नियुञ्जीत कनिष्ठानामिको परि।
इयमाकर्षिणी मुद्रा त्रैलोक्याकर्षणे क्षमा।।

टीका-कनिष्ठा, अनामिका, मध्यमा तथा तर्जनी को बराबर करके, मध्यमा को अंकुशाकार बनायें और उसे कनिष्ठा तथा अनामिका पर रखें। फिर उससे अँगूठे को मिलायें।

यह तीनों लोकों को आकर्षित करने वाली 'आकर्षिणी मुद्रा' है। इसी को 'सर्वाकर्षिणी मुद्रा' भी कहते हैं।

४. सर्ववशांकरी मुद्रा

पुटाकारौ करौ कृत्वा तर्जन्यावंकुशाकृती।
परिवर्तक्रमेणैव मध्यमे तदधोगते।।
क्रमेण देवि तेनैव कनिष्ठा नामिकादय:।
संयोज्या निविड्रा: सर्वा अंगुष्ठा वग्रदेशत:।।
मुद्रेयं परमेशानि सर्ववश्यकरी मता।।
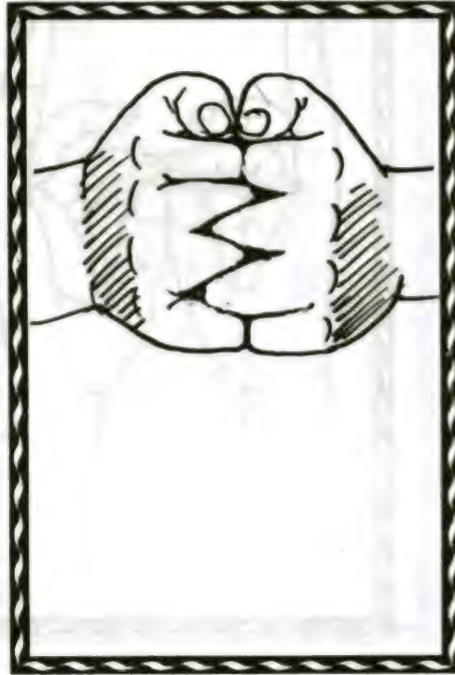
टीका-दोनों हाथों को मिला कर सम्पुट बनायें। फिर तर्जनियों को अंकुशाकार करें और मध्यमा, कनिष्ठा तथा अनामिकाओं को भी क्रमश: मोड़कर, सभी को अंगूठे के अग्रभाग से कस कर मिलादें। हे परमेश्वरी! यह 'सर्ववशंकरी' अथवा 'सर्व वश्यकरी मुद्रा' है।

५. उन्मादिनी मुद्रा

सम्मुखौ तु करौ कृत्वा मध्यमा मध्यगेंत्यजे।
अनामिकेतु सरले तद्बहिस्तर्जनीद्वयम्।।
दण्डाकारौ ततोंगुष्ठौ मध्यमा नख देशिकौ।
मुद्रैवोन्मादिनी नाम्ना क्लेदिनी सर्वयोषिताम्।।

टीका-दोनों हाथों को सामने करके मध्यमा को मध्यमा से तथा कनिष्ठिका को कनिष्ठिका से मिलायें। अनामिकाओं को सीधी रखकर आपस में मिलादें तथा दोनों तर्जनियों को बाहर रखें, ताकि अँगूठों को सीधे मध्यमाओं के नख पर रखा जा सके।

यह सभी स्त्रियों को क्लेदित करने वाली 'उन्मादिनी मुद्रा' है।

६. सर्वमहांकुशा मुद्रा

अस्यां त्वनामिका युग्ममधः कृत्वांकुशाकृति।
तर्जन्यावणि तेनैव क्रमेण विनियोजयेत्।
इत्यं महांकुशा मुद्रा सर्वकामार्थ साधनी।।
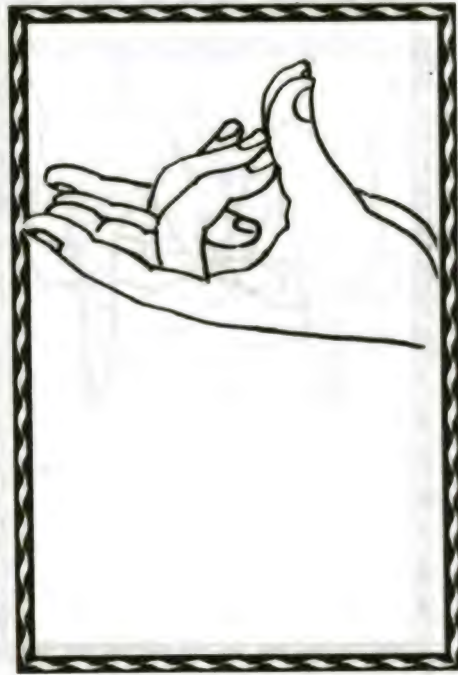
टीका–दोनों अनामिकाओं को अंकुशाकार अधोमुख करके मिलायें। फिर दोनों तर्जनियों को भी उसी प्रकार अंकुशाकार करके मिलादें।

यह समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली 'महांकुशा मुद्रा' है। इसी को 'सर्वमहांकुशा मुद्रा' भी कहते हैं।

७. खेचरी मुद्रा

सव्यं दक्षिण हस्ते तु सव्य हस्ते तु दक्षिणम्।
बाहुं कृत्वा महादेवि हस्तौ संपरिवर्तयेत्।।
कनिष्ठानामिके देवि युक्ता तेन क्रमेण च।
तर्जनीभ्यां समाक्रान्ते सर्वोर्ध्वमणि मध्यमे।।
अंगुष्ठौ च महादेवि सरलावपि कारयेत्।
इयं सा खेचरी मुद्रा मुद्रा सर्वोत्तमोत्तमा।।

टीका-हे महादेवि! बाँये हाथ को दाँई ओर तथा दाँये हाथ को बाँई ओर रखलें। फिर इसी क्रम से कनिष्ठा तथा अनामिकाओं को मिलायें। दोनों तर्जनियों को एकं दूसरी के ऊपर रखें तथा दोनों मध्यमाओं को सबके ऊपर उठायें।

यह मुद्राओं में सर्वोत्तम 'खेचरी मुद्रा' है।

८. बीज मुद्रा

परिवृत्यकरौ स्पृष्टा वर्द्धचन्द्राकृती प्रिये।
तर्जन्यंगुष्ठ युगलं युगपत्कारयेत्ततः।।
अधः कनिष्ठावष्ट्ब्धे मध्यमे विनियोजयेत्।
तथैव कुटिले योज्ये सर्वाधस्तद नामिके।।
बीजमुद्रेयमचिरात् सर्वसिद्धि प्रदायिनी।।
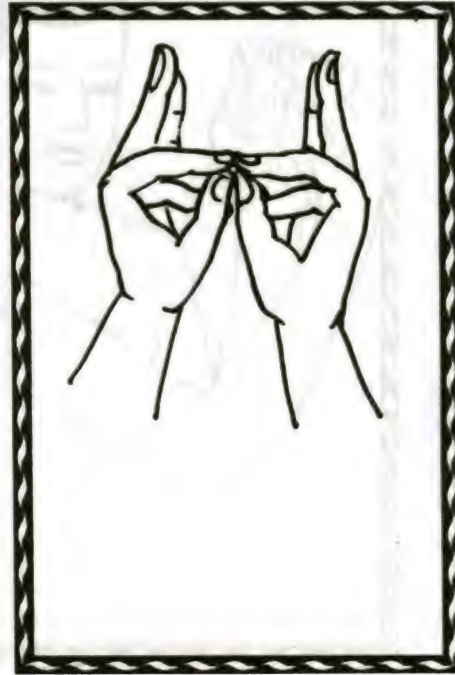
टीका–दोनों हाथों को एक दूसरे से काटते हुए चन्द्राकार करें। फिर दोनों अँगूठों को अपनी–अपनी तर्जनियों से मिलालें, तत्पश्चात् नीचे से दोनों कनिष्ठिकाओं को मध्यमाओं से मिलायें। इसी भाँति अनामिकाओं को कुछ मोड़कर सबसे नीचे मिलादें।

यह समस्त सिद्धियों को देने वाली 'बीज मुद्रा' है।

६. प्रथम योनि मुद्रा

मध्यमे कुटिले कृत्वा तर्जन्युपरि संस्थिते।
अनामिका मध्यगते तथैव हि कनिष्ठिके।।
सर्वा एकत्र संयोज्य अंगुष्ठ परिपीडिता।
एषातु प्रथमा मुद्रा योनि मुद्रेति संज्ञिता।।

टीका-बीच से मुड़ी हुई मध्यमाओं को तर्जनियों के ऊपर रखें। फिर अनामिका तथा कनिष्ठिकाओं को भी मोड़कर, सबको जोड़ते हुए एक साथ अँगूठों से दबायें।

इसे 'प्रथमयोनि मुद्रा' कहते हैं।

१०. त्रिखण्डा मुद्रा

परिवृत्त करौ स्पृष्टा वंगुष्ठौ कारयेत्समौ।
अनामान्तर्गते कृत्वा तर्जन्यौ कुटिलाकृती।।
कनिष्ठिके नियुञ्जीत निजस्थाने महेश्वरि।
त्रिखण्डेयं समाख्याता त्रिपुराध्यान कर्मणि।।

टीका-दोनों हाथों को एक दूसरे से काटते हुए (दाँये को बाँई ओर तथा बाँये को दाँई ओर रखकर) पीठ पर रखें तथा अँगूठों को बराबर करके मिलायें। अनामिकाओं को भीतर की ओर फैला कर तर्जनियों को थोड़ा मोड़ें तथा कनिष्ठिकाओं को यथास्थान मिलायें।

त्रिपुर देवी के ध्यान में प्रयुक्त होने वाली यह 'त्रिखण्डा मुद्रा' है।

इति श्री त्रिपुरा मुद्रा समाप्ताः

६. अन्य देवियों की मुद्राएँ

भगवती महाकाली, श्यामा, तारा एवं भुवनेश्वरी आदि देवियों की पूजा में जिन मुद्राओं को प्रदर्शित किया जाता है। उनके विषय में निम्नानुसार समझना चाहिए।

महायोनिरिति ख्याता सर्वसिद्धि समृद्धिदा:।
शक्त्यर्चने महायोनि: श्यामादौ मुण्ड मुद्रिका।।

टीका- 'महायोनि मुद्रा' समस्त सिद्धियों तथा समृद्धि को देने वाली है। शक्ति की अर्चना में 'महायोनि मुद्रा' तथा श्यामा आदि के लिए 'मुण्ड मुद्रा' का प्रयोग किया जाता है।

भगवती महाकाली की अर्चना में १. महायोनि, २. मुण्ड तथा ३. भूतिनी का; भगवती तारा की पूजा में १. योनि, २. भूतिनी, ३. बीज, ४. धूमिनी तथा ५. लेलिहा का एवं भुवनेश्वरी की पूजा में १. पाश, २. अंकुश, ३. वर, ४. अभय, ५. पुस्तक, ६. ज्ञान, ७. बीज तथा ८. योनि मुद्रा का प्रयोग होता है।

इनमें से जिन मुद्राओं का वर्णन अन्यत्र किया जा चुका है, उनके अतिरिक्त अन्य मुद्राओं का सचित्र उल्लेख आगे किया जा रहा है।

१. महायोनि मुद्रा

तर्जन्यामिकामध्ये कनिष्ठाक्रम योगतः।
करयोर्योजयत्वेव कनिष्ठा मूल देशतः।।
अंगुष्ठाग्रे तु निःक्षिप्य महायोनि प्रकीर्तिता।।

टीका-दोनों हाथों की तर्जनी, मध्यमा, अनामिका तथा कनिष्ठिकाओं को एक दूसरी से मिलाकर, दोनों हथेलियों को इस प्रकार मिलायें कि उनका निचला भाग एक दूसरी को भली भाँति स्पर्श करता रहे। इसके बाद दोनों अँगूठों को अपनी-अपनीं कनिष्ठकाओं के मूल पर्वों पर रखें।

इसे 'महायोनि मुद्रा' कहते हैं। यह भगवती महाकाली की पूजा में प्रदर्शित की जाती है।

२. मुण्ड मुद्रा

पृष्ठे क्रोडान्तरें गुष्ठ मुष्टिं कृत्वा करस्य च।
मध्यमाग्रं तु दक्षस्य तथालम्ब्य प्रयत्नतः।।
मध्यमेनाय तर्जन्यामंगुष्ठाग्रे तु योजयेत्।
दर्शयेद्दक्षिणे भागे मुण्डमुद्रेय मुच्यते।।

टीका-अँगूठे को भीतर करते हुए बाँये हाथ की मुट्ठी बाँधें। फिर, दाँये हाथ की मध्यमा, अनामिका तथा कनिष्ठा को थोड़ा मोड़ें। दाँये अँगूठे को दाँई तर्जनी के मध्यपर्व पर लगायें। इस प्रकार संयोजित दाँये हाथ पर बाँई मुट्ठी को रखें। इस भाँति रखे हुए हाथों की दाँई ओर साधक अपनी दृष्टि को केन्द्रित करे।

इसे 'मुण्ड मुद्रा' कहते हैं। यह भी भगवती काली की पूजा में प्रदर्शित की जाती है।

३. भूतिनी मुद्रा

बध्वा तु योनि मुद्रां वै मध्यमे कुटिले कुरु।
अंगुष्ठेन तदग्रे तु मुद्रेयं भूतिनी मता।।
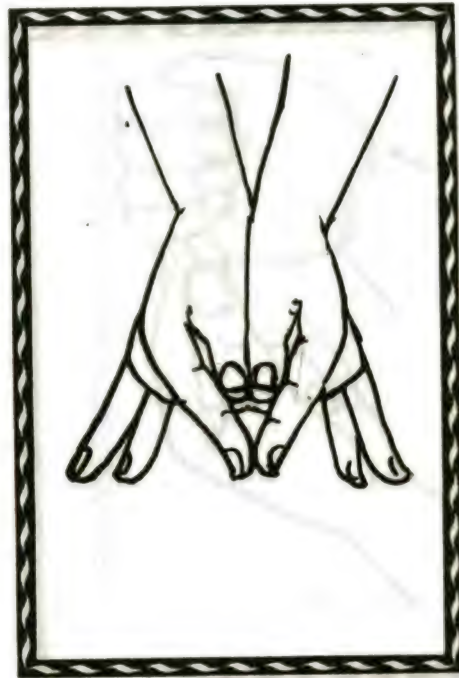
टीका-योनि मुद्रा बाँधकर, मध्यमाओं को मोड़ दें तथा अँगूठों के अग्रभाग को मध्यमाओं के अग्रभाग पर रखें।

इसे 'भूतिनी मुद्रा' कहते हैं। इसे भी भगवती काली की पूजा में प्रदर्शित किया जाता है।

४. धूमिनी मुद्रा

भगवती तारा की पूजा में १. योनि, २. भूतिनी, ३. बीज, ४. धूमिनी तथा ५. लेलिहा- इन पाँच मुद्राओं को प्रदर्शित किया जाता है।

योनि, भूतिनी तथा बीज मुद्राओं का उल्लेख किया जा चुका है। यहाँ 'धूमिनी' तथा 'लेलिहा' के विषय में लिखा जा रहा है।

विधि-अनामिका की पीठ पर कनिष्ठा को लगायें, अँगूठों द्वारा मध्यमाओं को बाँधें, अनामिकाओं को तिरछा करके अँगूठों के मूल से जोड़दें तथा तर्जनी को सीधी करके मिलादें।

इसे 'धूमिनी मुद्रा' कहते हैं। यह 'भगवती तारा' की पूजा में प्रयुक्त होती है।

५. लेलिहा मुद्रा

तर्जनी मध्यमानामाः समाः कुर्यादधोमुखीः।
अनामायां क्षिपेद्वृद्धामूर्द्ध्वं कृत्वा कनिष्ठिकाम्।।
लेलिहा नाम मुद्रेयं जीवन्यासे प्रकीर्तिता।।

टीका–तर्जनी, मध्यमा तथा अनामिका को बराबर करके अधोमुख करें एवं कनिष्ठा को सीधा रखें।

यह 'लेलिहा' अथवा 'लेलिहान' नामक मुद्रा है। इसका प्रयोग 'भगवती तारा' की पूजा के अतिरिक्त 'जीवन्यास' में भी होता है।

१०. अग्नि की मुद्राएँ

सप्तजिह्वाह्वया मुद्रा विज्ञेया वह्नि पूजने।
मत्स्य मुद्रा च कूर्माख्या लेलिहा मुण्ड संज्ञिका।।
मत्स्य कूर्म लेलिहाख्या सर्वसाधारणी मता।।

टीका–अग्नि, पूजन के लिऐ 'सप्तजिह्वा मुद्रा' का प्रयोग होता है। १. मत्स्य, २. कूर्म, ३. लेलिहा तथा ४. मुण्ड भी इनकी मुद्राएँ मानी जाती हैं। मत्स्य, कूर्म तथा लेलिहा–इन्हें साधारण मुद्रा कहा गया है।

टिप्पणी–उक्त मुद्राओं में लेलिहा तथा मुण्ड मुद्राओं का सचित्र वर्णन पिछले पृष्ठों में (क्रमश: पृष्ठ संख्या ८६ तथा पृष्ठ संख्या ८३) पर किया जा चुका है। अन्य मुद्राओं का सचित्र वर्णन अगले पृष्ठों में किया जा रहा है।

१. सप्तजिह्वा मुद्रा

मणिबन्धस्थितौ कृत्वा प्रसृतांगुलिकौ करौ।
कनिष्ठांगुष्ठ युगले मिलितां तां प्रसारयेत्।।
सप्तजिह्वाख्य मुद्रेयं वैश्वानर प्रियङ्करी।।

टीका-दोनों कलाइयों से हाथों को सीधा करके सभी अँगुलियों को ऊपर उठायें। तत्पश्चात् अँगूठे तथा कनिष्ठिकाओं के अग्रभाग को मिलाकर सामने की ओर फैलादें।

यह वैश्वानर (वह्नि, अथवा अग्नि) को अत्यंन्त प्रिय 'सप्तजिह्वा' नामक मुद्रा है।

२. मत्स्य मुद्रा

दक्षपाणिपृष्ठदेशे वामपाणितलं न्यसेत्।
अंगुष्ठौ चालयेत्सम्यङ् मुद्रेयं मत्स्य रूपिणी।।

टीका-बाँई हथेली को दाँये हाथ के पृष्ठभाग पर रखें, तदुपरान्त दोनों अँगूठों को, हथेली को पार करते हुए मिलायें।
इसे 'मत्स्य मुद्रा' कहते हैं।

३. कूर्म (कच्छप) मुद्रा

वामहस्तस्य तर्जन्यां दक्षिणस्य करस्य च।
वामस्य पितृतीर्थेन मध्यमानामिके तथा।।
अधोमुखैश्च तैः कुर्याद् दक्षिणस्य करस्य च।
कूर्म पृष्ठ समं कुर्याद् दक्षं पाणिं च सर्वतः।
कूर्ममुद्रेय माख्याता देवता ध्यान कर्मणि।।

टीका-बाँई तर्जनी को दाँई कनिष्ठिका से मिलायें, फिर दाँई तर्जनी को बाँये अँगूठे से मिलायें तथा दाँये अँगूठे को ऊपर उठादें। इसके पश्चात् बाँये हाथ की मध्यमा तथा अनामिका को दाँये हाथ की हथेली से लगायें तथा दाँये हाथ को कछुए (कच्छप) की पीठ जैसा बनायें।

यह देवता के ध्यान-कर्म में प्रयुक्त होने वाली 'कूर्म मुद्रा' है।

११. अन्य देवताओं की मुद्राएँ

श्री गोपालार्चने वेणुर्नृहरे नरिसिंहिका।
वराहस्य च पूजाया वराहाख्यां प्रदर्शयेत्।।
रामार्चने धनुर्बाणमुद्रे पर्शुस्तयार्चने।
परशुरामस्य विज्ञेया तथा परशु मुद्रिका।।
वासुदेवाह्वया ध्याने कुम्भ मुद्रा तु रक्षणे।
सर्वत्र प्रार्थनेचैव प्रार्थनाख्यां नियोजयेत्।।

टीका-श्री गोपाल जी के अर्चन में 'वेणु मुद्रा' का, नृसिंह की पूजा में 'नारसिंही मुद्रा' का, वराह की पूजा में 'वाराही मुद्रा' का, श्रीराम की पूजा में 'धनुष' और बाण का तथा परशुराम की पूजा में 'परशु मुद्रा' का प्रदर्शन करना चाहिए। वासुदेव के आवाहन तथा ध्यान में 'वासुदेव मुद्रा' का रक्षण-कर्म में तथा इन सब की प्रार्थना में 'प्रार्थना मुद्रा' का प्रयोग करना चाहिए।

टिप्पणी-उक्त मुद्राओं में से जिनका उल्लेख अन्यत्र नहीं हुआ है, उनका सचित्र वर्णन अगले पृष्ठों में किया जा रहा है।

१. ज्ञातव्य

अर्चने जयकाले च ध्याने काम्ये च कर्मणि।
स्नाने चावाह्ने शङ्खे प्रतिष्ठायां च रक्षणे।।
नैवेद्य च तथान्यत्र तत्तत्कल्प प्रकाशिते।
स्थाने मुद्राः प्रद्रष्टव्याः स्वस्वलक्षण संयुताः।।
कुम्भ मुद्राभिषेके स्यात् पद्म मुद्रासने तथा।
कालकर्णी प्रयोक्तव्या विघ्न प्रशम कर्मणि।
गालिनी च प्रयोक्तव्या जल शोधन कर्मणि।।

टीका-तत्तत्कल्पों में प्रकाशित अर्चन, जप, ध्यान, काम्य-कर्म, स्नान, आवाहन, शंख-वादन, देव-प्रतिष्ठा, सुरक्षा, नैवेद्य प्रदान करने में तथा अन्यत्र अपने-अपने लक्षणों से युक्त मुद्राओं का प्रदर्शन करना चाहिए।

अभिषेक में 'कुंभ मुद्रा', आसन के लिए 'पद्म मुद्रा' विघ्न-शमन हेतु 'कालकर्णी मुद्रा' तथा जल-शोधन-कर्म में 'गालिनी मुद्रा' का प्रयोग करना चाहिए।

उक्त मुद्राओं का सचित्र वर्णन आगे किया जाएगा।

१. कुम्भ मुद्रा (प्रथम)

दक्षांगुष्ठे परांगुष्ठे क्षिप्त्वा हस्तद्वयेन तु।
सावकाशामेक मुष्टिं कुर्यात्सा कुम्भ मुद्रिका।।

टीका-दाँये अँगूठे को बाँये के ऊपर रखें तथा इसी स्थिति में दोनों हाथों की मुट्ठियाँ बाँधे परन्तु दोनों मुट्ठियों के बीच थोड़ी जगह बनी रहे। इसे 'कुम्भ मुद्रा' कहते हैं।

कुम्भ मुद्रा का एक अन्य प्रकार अगले पृष्ठ पर वर्णित है।

२. कुम्भ मुद्रा (द्वितीय)

मुष्ट्योरूद्र्ध्वकृतांगुष्ठौ तर्जन्यग्रे तु विन्यसेत्।
सर्वरक्षाकरी ह्येषा कुम्भमुद्रेयमीरिता।।

टीका-दोनों हाथों को आपस में मिला कर एक ही मुट्ठी बनायें तथा दोनों अँगूठों को मिलाकर तर्जनी के अग्रभाग पर रखें।

यह 'द्वितीय कुम्भ मुद्रा' है, जो साधक की सब प्रकार से रक्षा करती है।

३. प्रार्थना मुद्रा

प्रसृतांगुलिकौ हस्तौ मिथः क्लिष्टौ च सम्मुखौ।
कुर्यात्स्व हृदये सेयं मुद्रा प्रार्थन संज्ञिका।।

टीका–दोनों हाथों को फैलाते हुए हृदय पर रखें। इसे 'प्रार्थना मुद्रा' कहते हैं।

टिप्पणी–इस मुद्रा का प्रयोग अन्य देवताओं की प्रार्थना में भी किया जा सकता है।

४. वासुदेव मुद्रा

अञ्जल्यञ्जलिमुद्रा स्याद्वासुदेवाभिधा न सा।।

टीका–दोनों हाथों को मिलाकर अंजलि बाँधने से 'वासुदेव मुद्रा' बनती है। यह मुद्रा भगवान् वासुदेव को प्रिय है। अतः इसे 'वासुदेव मुद्रा' कहा जाता है।

५. कालकर्णी मुद्रा

अंगुष्ठावुन्नतौ कृत्वा मुष्ट्योः संलग्नयोर्द्वयोः।
तावेवाभिमुखौ कुर्यान् मुद्रैषा कालकर्णिका।।

टीका-दोनों हाथों की बँधी मुट्ठियों को एक दूसरी से मिलाकर, दोनों अँगूठों को ऊपर उठायें। इस प्रकार हाथों को अपने सामने रखें। इसे 'कालकर्णी मुद्रा' कहा जाता है।

६. गालिनी मुद्रा

कनिष्ठांगुष्ठकौ सक्तौ करयोरितरेतरम् ।
तर्जनी मध्यमानामा संहता भुग्नवर्जिताः ।।
मुद्रैषा गालिनी प्रोक्ता शङ्ख कस्योपचालिता ।।

टीका-दोनों हथेलियों को एक दूसरी पर रखें तथा कनिष्ठिकाओं को इस प्रकार मोड़ें कि वे अपनी-अपनी हथेलियों का स्पर्श करती रहें। तर्जनी, मध्यमा तथा अनामिका अँगुलियाँ सीधी एवं परस्पर मिली रहनी चाहिए।

यह शंख बजाने की 'गालिनी मुद्रा' है।

७. विस्मय मुद्रा

दक्षिणा निविडा मुष्टिरनामार्पित तर्जनी।
मुद्रा विस्मय संज्ञा स्याद् विस्मया वेशकारिणी।।

टीका-दाँये हाथ को कस कर मुट्ठी बाँधें तथा उसकी तर्जनी अँगुली द्वारा अपनी नाक को हल्के से दबायें।

यह विस्मयावेश को व्यक्त करने वाली 'विस्मय मुद्रा' है।

८. नाद मुद्रा

मुष्टिंरूद्‌र्ध्वकृतांगुष्ठा दक्षिणा नाद मुद्रिका।।

टीका-दाँये अँगूठे को बाँई मुट्ठी में बन्द करें।

यह 'नाद मुद्रा' है।

६. विन्दु मुद्रा

तर्जन्यंगुष्ठसंयोगाद् अग्रतो विन्दु मुद्रिका।।

टीका-तर्जनी और अँगूठे के अग्रभाग को मिलायें।
इसे 'विन्दु मुद्रा' कहते हैं।

१०. संहार मुद्रा

अधोमुखे वामहस्ते ऊर्ध्वंस्याददक्ष हस्तकम् ।
क्षिप्त्वाङ्गलीरङ्गुलीभिः संग्रथ्य परिवर्तयेत् ।।
एषा संहार मुद्रा स्याद् विसर्जन विधो स्मृता ।।

टीका-अधोमुख बाँये हाथ को ऊर्ध्वमुख दाँये हाथ पर रखें। फिर दोनों हाथों की अँगुलियों को आपस में गूँथ दें। तत्पश्चात् उक्त प्रकार से संयोजित हाथों को घुमाकर एकदम उलट दें।

यह देवता के विसर्जन के समय प्रयुक्त होने वाली 'संहार मुद्रा' है।

इति देवोपासना मुद्रा समाप्ताः

१२. आवाहनादि की मुद्राएँ

आवाहनादिका मुद्रा नव साधारणी मताः।
प्रयोजयेदिमा मुद्रा देवताह्वान कर्मणि।।

टीका-सामान्यतः देवताओं के आवाहन आदि कर्म में ९ मुद्राओं का प्रयोग होता है। उनके नाम निम्नानुसार हैं-

१. आवाहनी मुद्रा, २. स्थापनी मुद्रा, ३. सन्निधापनी मुद्रा, ४. संबोधिनी मुद्रा, ५. सम्मुखीकरण मुद्रा, ६. सकलीकरण मुद्रा, ७. अवगुण्ठनी मुद्रा, ८. अमृतीकरण (धेनु) मुद्रा तथा ९. परमीकरण महामुद्रा।

टिप्पणी-उक्त मुद्राओं का सचित्र वर्णन अगले पृष्ठों पर किया जा रहा है।

१. आवाहनी मुद्रा

हस्ताभ्यामञ्जलिं बध्वानामिका मूलपर्वभिः।
अंङ्गुष्ठो निःक्षिपेत्सेयं मुद्रात्वावाहिनी मता।।
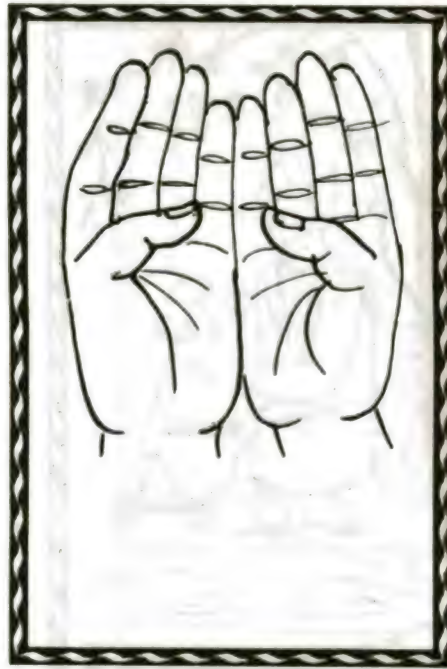
टीका-दोनों हाथों से अँजलि बाँधकर दोनों अँगूठों को अपनी-अपनी अनामिकाओं के मूल-पर्वों पर लगायें।

इसे 'आवाहनी मुद्रा' कहते हैं।

२. संस्थापिनी मुद्रा

अधोमुखी त्वियं चेत्स्यात्स्थापनी मुद्रिका स्मृता।।

टीका-पूर्वोक्त प्रकार से 'आवाहनी मुद्रा' बनाकर उसे अधोमुख कर देने से 'स्थापनी मुद्रा' बनती है।

इसी को 'संस्थापिनी मुद्रा' भी कहते हैं।

३. सन्निधापिनी मुद्रा

उच्छ्रिताङ्गुष्ठमुष्ट्योस्तु संयोगात्सन्निधापनी।।

टीका-दोनों हाथों की मुट्ठी बाँध कर दोनों अँगूठों को ऊपर की ओर खड़ा करदें।

इसे 'सन्निधापिनी मुद्रा' कहते हैं।

४. सम्बोधिनी मुद्रा

अन्तः प्रवेशिताङ्गुष्ठा सैव सम्बोधिनी मता।।
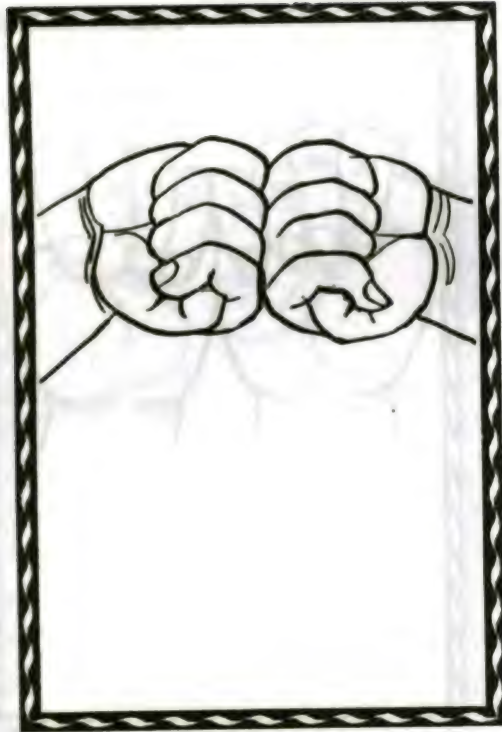
टीका-दोनों अँगूठों को दोनों मुट्ठियों के भीतर रखते हुए मुट्ठियों को उलट दें।

इसे 'सम्बोधिनी मुद्रा' कहते हैं।

५. सम्मुखीकरणी मुद्रा

उत्तानमुष्टि युगला सम्मुखीकरणी मता।।

टीका-पूर्वोक्त 'सम्बोधिनी मुद्रा' की मुट्ठियों को ऊपर की ओर घुमादें। इसे सम्मुखीकरण अथवा सम्मुखीकरणी मुद्रा कहते हैं।

६. सकलीकरण मुद्रा

देवतोङ्गषडङ्गानां न्यासः स्यात् सकलीकृति ।।

टीका-देवताओं के षड न्यास् में 'सकलीकरण मुद्रा' को प्रदर्शित किया जाता है। इसे चित्र में दिखाये अनुसार करना चाहिए।

७. अवगुण्ठनी मुद्रा

सव्यहस्तकृता मुष्टिर्दीर्घाधोमुख तर्जनी।
अवगुण्ठन मुद्रेयमभितो भ्रामिता मता।।

टीका-बाँये हाथ की मुट्ठी बाँधकर, तर्जनी को अधोमुख करें, फिर उसे नियमित रूप से आगे-पीछे की ओर चलायें।

इसे 'अवगुण्ठन' अथवा 'अवगुण्ठनी मुद्रा' कहते हैं।

८. अमृतीकरण (धेनु) मुद्रा

अन्योन्याभिमुखौश्लिष्टौ कनिष्ठानामिका पुनः।
तथैव तर्जनीमध्या धेनुमुद्रा समीरिता।।
अमृतीकरणं कुर्यात् तया साधक सत्तम।।

टीका-दाँये हाथ की अँगुलियों को बाँये हाथ की अँगुलियों पर रखें तथा दाँई तर्जनी को मध्यमा के मध्य में लगायें। फिर बाँये हाथ की अनामिका को दाँये हाथ की कनिष्ठिका से तथा दाँये हाथ की अनामिका को बाँये हाथ की कनिष्ठिका से लगायें। इस भाँति सभी अँगुलियों को संयोजित करके हाथों को उलट देने से 'धेनु मुद्रा' बनती है।

श्रेष्ठ साधक उक्त विधि से 'धेनु मुद्रा' प्रदर्शित्त कर अमृत बीज 'वं' का उच्चारण करते हुए 'अमृतीकरण' करते हैं, अतः इसे 'अमृतीकरण मुद्रा' भी कहा जाता है।

६. परमीकरण महामुद्रा

अन्योन्यग्रथितांगुष्ठौ प्रसारित कराङ्गुलिः ।
महामुद्रेय मुदिता परमीकरणे बुधैः ।।
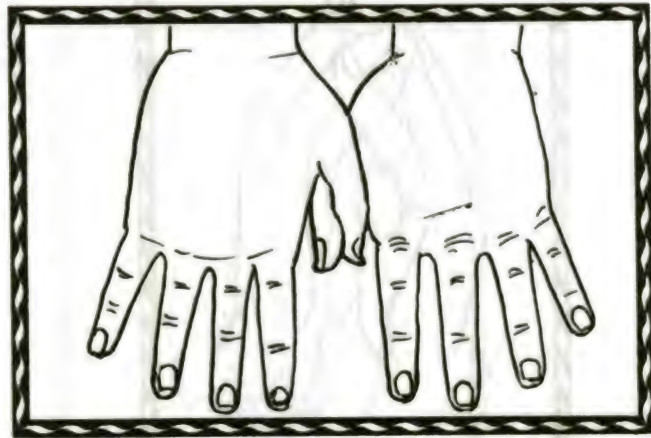
टीका-दोनों अँगूठों को एक दूसरे के साथ गूँथ कर, दोनों हाथों की अँगुलियों को फैलादें।

इसे 'परमीकरण' की महामुद्रा कहा जाता है।

इति श्री आवाहनादि मुद्रा समाप्ताः

१३. षडङ्गन्यास की मुद्राएँ

तथा षडङ्गमुद्राश्च सर्वमन्त्रेषु योजयेत्।।
अङ्गन्यास क्षमा मुद्रा स्तासां लक्षण मुच्यते।।

टीका-साधक को चाहिए कि वह सभी मन्त्रों में 'षडङ्गन्यास' की मुद्राओं की योजना करें। अब अङ्गन्यास की मुद्राओं के लक्षण बताते हैं।

षडङ्गन्यास की मुद्राओं के नाम निम्नलिखित हैं-

१. हृदय मुद्रा, २. शिरोमुद्रा, ३. शिखामुद्रा, ४. कवच मुद्रा, ५. अस्त्र मुद्रा और ६. नेत्र मुद्रा।

विशेष-नेत्र त्रय में न्यास करना हो तो 'नेत्रत्रय मुद्रा' का प्रयोग किया जाता है। उक्त मुद्राओं का सचित्र वर्णन अगले पृष्ठों पर प्रस्तुत किया जा रहा है।

१. हृदय मुद्रा

अंगुष्ठा ऋजवो हस्तशाखा भवेन्मुद्रा हृदये।

टीका–अनामिका अँगुली तथा अँगूठे के अतिरिक्त शेष अँगुलियों को सीधा रखने से 'हृदय मुद्रा' बनती है।

२. शिरोमुद्रा

शीर्षके च।
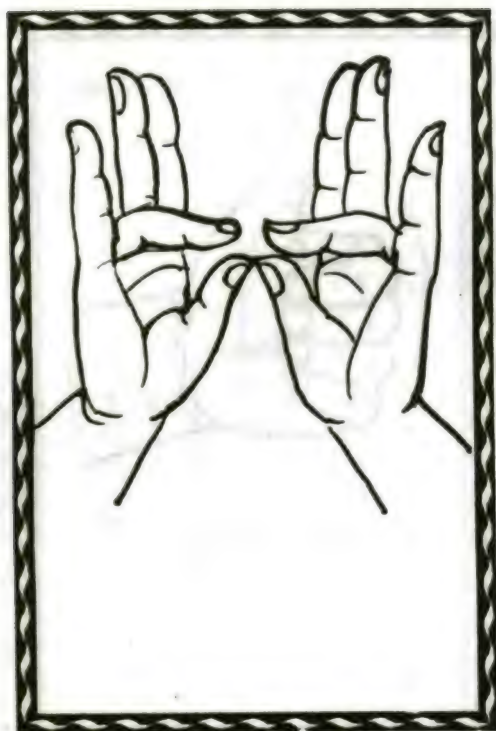
टीका- 'शिरोमुद्रा' भी पूर्वोक्त 'हृदय मुद्रा' की भाँति ही बनती है।

३. शिखा मुद्रा

अधोऽङ्गुष्ठा खलु मुष्टि: शिखाय।

टीका–दाँये हाथ की मुट्ठी बाँधि कर अँगूठे को अधोमुख कर देने से 'शिखा मुद्रा' बनती है।

४. कवच मुद्रा

करद्वन्द्वांगुलयो वर्मणि स्युः ।।

टीका-दोनों हाथों की अँगुलियों को फैला देने से 'कवच' अथवा 'वर्म मुद्रा' बनती है।

५. अस्त्र मुद्रा

नारामुष्टयुद्धृत बाहुयुग्मकांगुष्ठ तर्जन्युदितोध्वनिस्तु ।
विष्वक् विशक्त: कथिताऽस्त्रमुद्रा ।।
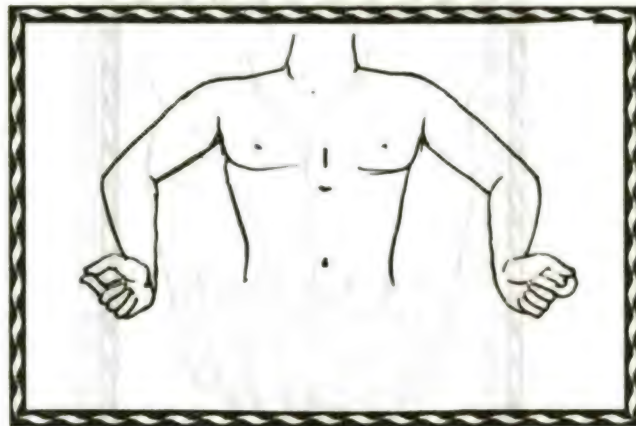
टीका-दोनों हाथों को वाण की भाँति फैलाकर, तर्जनी तथा अँगूठे के घर्षण द्वारा चुटकी बजायें।

इसे 'अस्त्र मुद्रा' कहते हैं।

६. नेत्र मुद्रा

यत्राक्षिणी तर्जनि मध्यमे स्तः।

टीका-तर्जनी तथा मध्यमा-इन दो अँगुलियों से 'नेत्र मुद्रा' बनती है। इसमें तर्जनी तथा मध्यमा को सामने की ओर फैलादें तथा अनामिका एवं कनिष्ठा को नीचे की ओर मोड़दें। अँगूठे को उठा हुआ रखें।

७. नेत्रत्रय मुद्रा

नेत्रत्रयं मन्त्र भवेदनामा।।

टीका-नेत्रत्रय में न्यास करते समय तर्जनी तथा मध्यमा के साथ अनामिका को भी सम्मिलित कर लिया जाता है।

इसे नेत्रत्रय मुद्रा कहते हैं।

इति षडङ्गन्यास मुद्राः समाप्ताः

१४. कर-न्यास की मुद्राएँ

'करन्यास' की ६ मुद्राएँ हैं। इनका सचित्र वर्णन आगे किया जा रहा है।

प्रथम मुद्रा

अँगूठे को अँगूठे से लगाएँ

द्वितीय मुद्रा
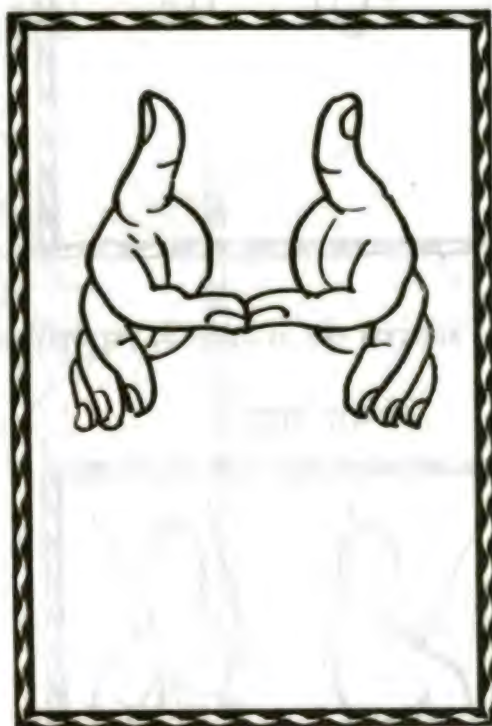
तर्जनी को तर्जनी से लगायें

तृतीय मुद्रा

मध्यमा को मध्यमा से मिलायें

चतुर्थ मुद्रां

अनामिका को अनामिका से मिलायें

पंचम मुद्रा

कनिष्ठा को कनिष्ठा से मिलायें

सम्पूर्ण करन्यास मुद्रा
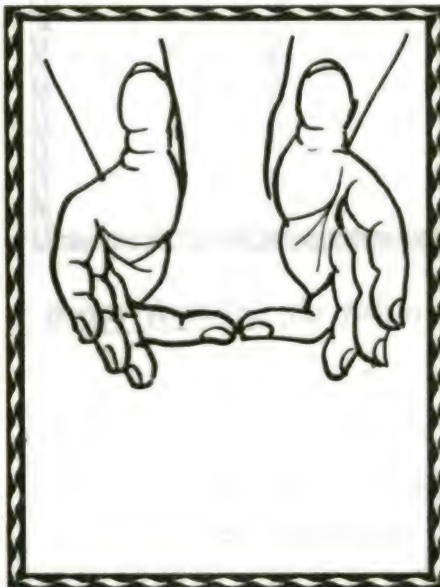
हथेली को हथेली से मिलायें

इति करन्यास मुद्राः

१५. जीव-न्यास की मुद्राएँ

जीव-न्यास की ६ मुद्राएँ हैं-

१. बीज, २. लेलिहा, ३. त्रिखण्डा, ४. नाद, ५. विन्दु और ६. सौभाग्यदायिनी।

इन मुद्राओं का सचित्र वर्णन आगे किया जा रहा है।

१. बीज मुद्रा

विधि-दोनों हाथों को अर्द्धचन्द्र के आकार में बदलें। फिर दोनों तर्जनियों तथा दोनों अँगूठों को परस्पर मिलादें। उनके नीचे मध्यमा तथा कनिष्ठिका को जोड़ें तथा सबके नीचे अनामिका को लगायें। इसे 'बीज मुद्रा' कहते हैं।

यह मुद्रा सम्पूर्ण सिद्धियों की वृद्धि करने वाली है।

२. लेलिहा मुद्रा

विधि-तर्जनी, मध्यमा तथा अनामिका को समानरूप से अधो-मुखी करके, अँगूठे को अनामिका में जोड़ दें तथा सीधी करें।

यह जीवन्यास की 'लेलिहा मुद्रा' कही जाती है।

३. त्रिखण्डा मुद्रा

विधि-दोनों हाथों को उलट-पुलट कर मिलायें। अँगूठों को सीधा करें। दोनों तर्जनियों को तिरछी करके अनामिकाओं को पकड़ें तथा कनिष्ठा से लगायें।

यह न्यास तथा ध्यान में सुखदायक 'त्रिखण्डा मुद्रा' है।

४. नाद मुद्रा

विधि-दाँये हाथ की मुट्ठी को ऊँचा करके उसके अँगूठे को खड़ा करदें तथा उस मुट्ठी को बाँये हाथ की मुट्ठी के ऊपर रखें।

यह 'नाद मुद्रा' है।

५. विन्दु मुद्रा

विधि-तर्जनी तथा अँगूठे को मिलाने से 'विन्दु मुद्रा' बनती है।
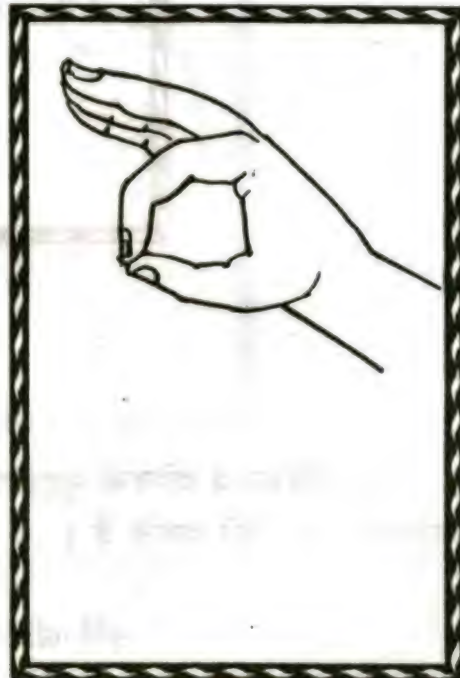
२. लेलिहा मुद्रा

विधि-तर्जनी, मध्यमा तथा अनामिका को समानरूप से अधो-मुखी करके, अँगूठे को अनामिका में जोड़ दें तथा सीधी करें।

यह जीवन्यास की 'लेलिहा मुद्रा' कही जाती है।

३. त्रिखण्डा मुद्रा

विधि-दोनों हाथों को उलट-पुलट कर मिलायें। अँगूठों को सीधा करें। दोनों तर्जनियों को तिरछी करके अनामिकाओं को पकड़ें तथा कनिष्ठा से लगायें।

यह न्यास तथा ध्यान में सुखदायक 'त्रिखण्डा मुद्रा' है।

६. सौभाग्य दण्डिनी मुद्रा

विधि–बाँये हाथ की मुट्ठी बाँध कर तर्जनी को सीधा करें तथा उसे कान के समीप ले जाकर गोलाकार घुमायें।
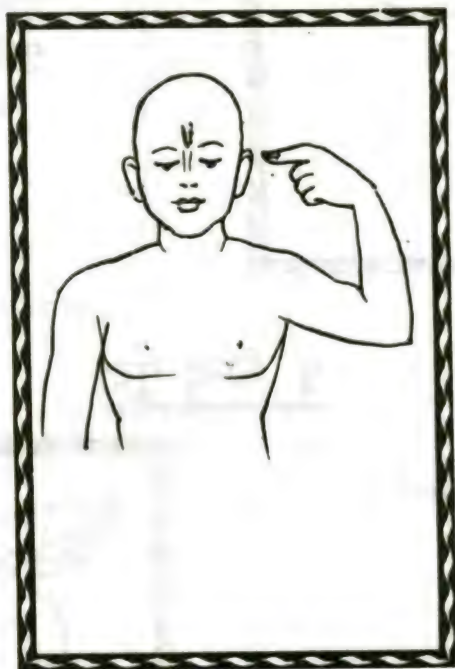
यह 'सौभाग्य दण्डिनी मुद्रा' कहलाती है। कुछ विद्वान इसे 'सौभाग्य दायिनी मुद्रा' भी कहते हैं।

इति जीवन्यास मुद्रा समाप्ताः

१६. मातृकान्यास की मुद्राएँ

मात्रकान्यास की १५ मुद्राएँ होती हैं, जिनका सचित्र वर्णन आगे किया जा रहा है।

टिप्पणी- 'मातृकान्यास' प्रायः कर-स्पर्श से कियां जाता है, परन्तु गौतम के मतानुसार हाथ से स्पर्श करने की अपेक्षा वैसी क्रिया करने का मन ही मन ध्यान करलेना ही उचित है। इसके अतिरिक्त अँगूठे अथवा अनामिका अँगुली द्वारा भी अंगों का स्पर्श करके न्यास किया जा सकता है। पुष्प आदि के स्पर्श द्वारा भी न्यास करना उचित माना गया है। इससे भिन्न स्थिति में न्यास निष्फल कहा जाता है।

१. मातृका-न्यास मुद्रा

विधि-मध्यमा तथा अनामिका द्वारा भाल (ललाट) का स्पर्श करें।

२. मातृकान्यास मुद्रा

विधि-अँगूठे और अनामिका अंगुली से नेत्र का स्पर्श करें।

३. मातृकान्यास मुद्रा

विधि-हाथ की सम्पूर्ण संधियों से मस्तक तथा होठ का स्पर्श करें।

४. मातृकान्यास मुद्रा

विधि-मध्यमा अँगुली से पार्श्व का स्पर्श करें।

५. मातृकान्यास मुद्रा

विधि-अँगूठे द्वारा कान का स्पर्श करें।

६. मातृकान्यास मुद्रा

विधि-कनिष्ठिका अँगुली तथा अँगूठे द्वारा नासा-छिद्र का स्पर्श करें।

७. मातृकान्यास मुद्रा

विधि-तर्जनी, मध्यमा तथा अनामिका द्वारा मुख तथा कपोल का स्पर्श करें।

८. मातृकान्यास मुद्रा

विधि-अनामिका अँगुली द्वारा दाँत तथा जीभ का स्पर्श करें।

९. मातृकान्यास मुद्रा

विधि-कनिष्ठिका तथा अनामिका द्वारा पीठ का स्पर्श करें।

१०. मातृकान्यास मुद्रा
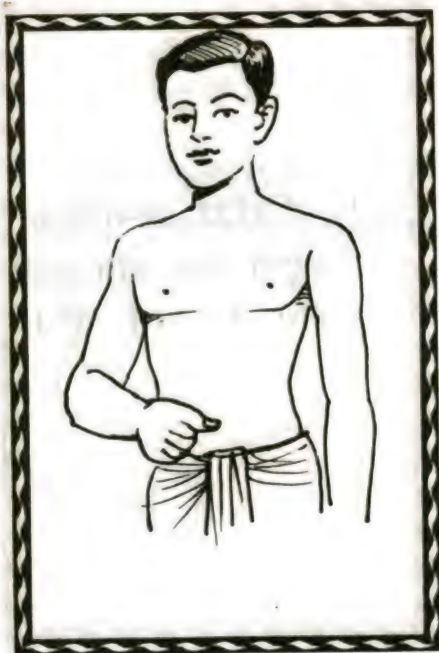
विधि-अँगूठे द्वारा नाभि का स्पर्श करें।

११. मातृकान्यास मुद्रा

विधि-मध्यमा द्वारा नाभि का स्पर्श करें।

१२. मातृकान्यास मुद्रा

विधि-अनामिका द्वारा नाभि का स्पर्श करें।

१३. मातृकान्यास मुद्रा

विधि-कनिष्ठिका द्वारा नाभि का स्पर्श करें।

१४. मातृकान्यास मुद्रा

विधि-चारों अँगुलियों द्वारा जठर (पेट) का स्पर्श करें।

१५. मातृकान्यास मुद्रा

विधि-हथेली द्वारा हृदय का स्पर्श करें।

इति मातृकान्यास मुद्राः समाप्ताः

१७. देवोपासना की मुद्राएँ

देवोपासना की ९ मुद्राएँ कही गई हैं। यथा-

१. आवाहनी, २. स्थापनी, ३. सन्निधापनी, ४. सन्निरोधिनी, ५. सम्मुखीकरण, ६. अवगुण्ठनी, ७. अमृतीकरण अथवा धेनु, ८. सकलीकरण तथा ९. परमीकरण।

इनका सचित्र विवरण आगे लिखे अनुसार है-

१. आवाहनी मुद्रा

दोनों हाथों की अनामिकाओं के मूल में अँगूठा मिली हुई अंजनी को दो बार ऊँची करके नीचे लाने से 'आवाहनी' मुद्रा होती है।

२. स्थापनी मुद्रा
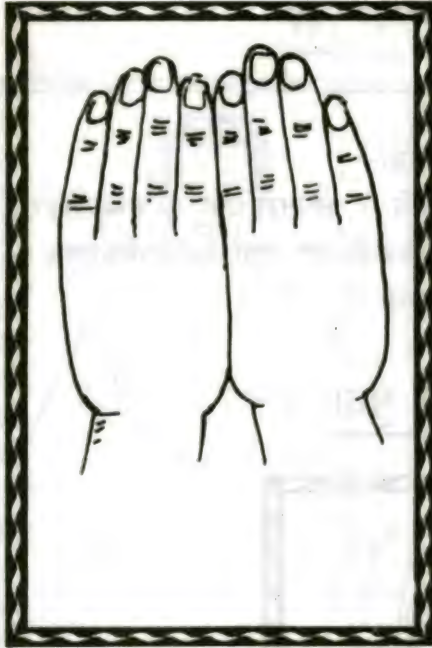
विधि-पूर्वोक्त 'आवाहनी मुद्रा' की अंजली को उलटा कर देने से 'स्थापनी' मुद्रा होती है।

३. सन्निधान मुद्रा

विधि-दोनों हाथों की मुट्ठी मिलाकर अँगूठे को सीधा करने से 'सन्निधान' मुद्रा होती है।

इसी को 'सन्निधापनी मुद्रा' भी कहते हैं।

४. सन्निरोधिनी मुद्रा

विधि-दोनों हाथों की मुट्ठियों में अँगूठा दबाने से 'सन्निरोधिनी मुद्रा' होती है।
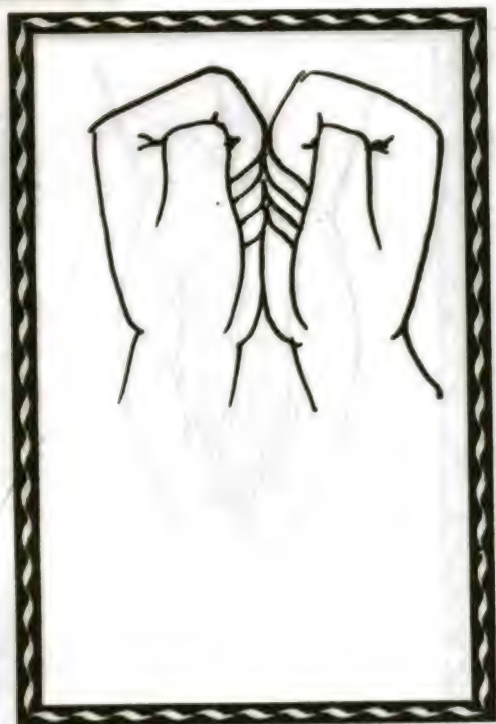
५. सम्मुखीकरण मुद्रा

विधि-दोनों मुट्ठियाँ ऊँची करने से 'सम्मुखीकरण मुद्रा' होती है।

६. अवगुण्ठनी मुद्रा

विधि-बाँये हाथ की तर्जनी को उलटी तथा दाँये हाथ की तर्जनी को सीधी (सुलटी) रखकर अधोमुख फिराने से 'अवगुण्ठनी मुद्रा' होती है।

दोनों अँगुलियों को मिलाकर अधोमुखी करना चाहिए।

७. अमृतीकरण (धेनु) मुद्रा

विधि-दोनों हथेलियों को मिला कर दाँई अनामिका को बाँई कनिष्ठिका से, बाँई अनामिका को दाँई कनिष्ठिका से, दाँई मध्यमा को बाँई तर्जनी से और बाँई मध्यमा को दाँई तर्जनी से आक्रान्त करें अर्थात् उक्त अंगुलियों को उलटी-सीधी मिलायें। इस प्रकार 'धेनु मुद्रा' बनती है। इसी का दूसरा नाम 'अमृतीकरण मुद्रा' है।

८. सकलीकरण मुद्रा

विधि-पूर्वोक्त मुद्रा की विधि से न्यास किया जाय तो वह 'सकलीकरण मुद्रा' होती है।

९. परमीकरण मुद्रा
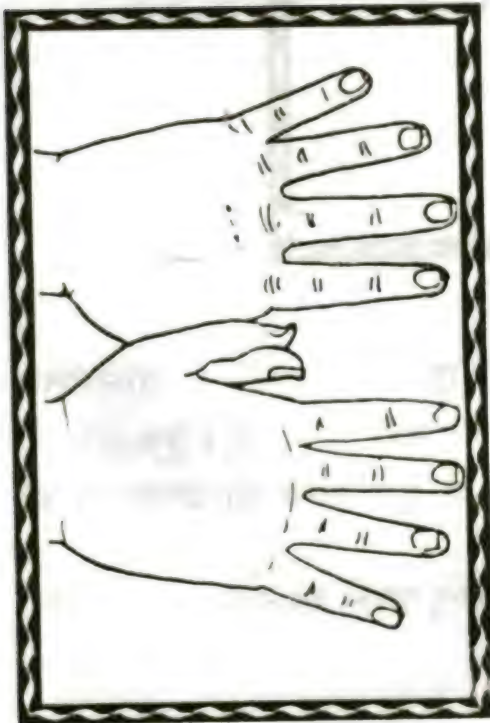
विधि-दोनों हाथों को आपस में मिलाकर त्रिकोणरूप देने से 'परमीकरण मुद्रा' बनती है।

इति देवोयासना मुद्राः समाप्ता :

१८. उपचार की मुद्राएँ

उपचार की १३ मुद्राएँ कही गई हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं-

१. गन्ध, २. पुष्प, ३. धूप, ४. दीप, ५. नैवेद्य, ६. आचमन, ७. ताम्बूल, ८. प्राण, ९. अपान, १०. ध्यान, ११. उदान, १२. समान, तथा १३. ग्रास।

इन मुद्राओं का सचित्र उल्लेख आगे किया जा रहा है।

१. गन्ध मुद्रा

विधि–मध्यमा, अनामिका तथा अंगुष्ठ–इन तीनों के सम्मिलित अग्रभाग से 'गन्ध' अर्पित करने को 'गन्ध मुद्रा' कहते हैं। इस मुद्रा के प्रयोग के साथ गंध लगाते समय देवता के मूल–मन्त्र का उच्चारण भी करना चाहिए।

टिप्पणी–लोकाचार में पहले अँगूठे अथवा अनामिका से बिन्दु लगाकर बाद में अँगूठे से तिलक किया जाता है।

२. पुष्प मुद्रा

विधि-अँगूठे तथा तर्जनी के संयोग से पुष्पादि ग्रहण कर देवतादि को निवेदित करने से 'पुष्प मुद्रा' होती है।
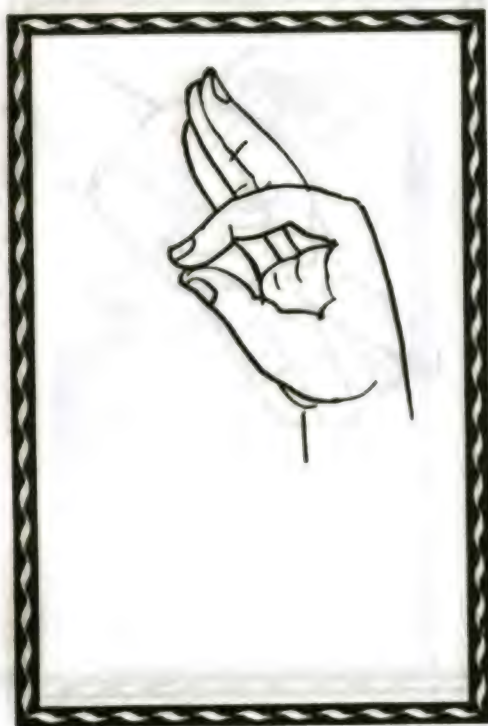
३. धूप मुद्रा

विधि-मध्यमा तथा अनामिका से मध्य पर्वों में धूप रखकर अँगूठे के अग्रभाग से निवेदित करने को 'धूप' मुद्रा कहा जाता है।

४. दीप मुद्रा
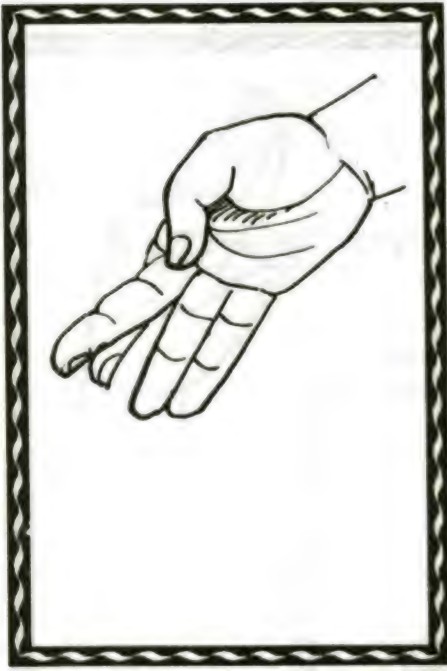
विधि-मध्यमा अँगुली के मूल में अँगूठे का मूलभाग लगाकर 'दीप दर्शयामि' कहते हुए दीपक दिखाने को 'दीपमुद्रा' कहते हैं।

५. नैवेद्य मुद्रा

विधि-प्रसाद को तीन भागों में बाँट कर, मूल-मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'तत्त्वमुद्रा' द्वारा नैवेद्य निवेदित करने से 'नैवेद्य मुद्रा' होती है।

टिप्पणी- 'तत्त्वमुद्रा' का वर्णन आगे नित्यपूजा की मुद्राओं के अन्तर्गत संख्या ५ पर किया गया है। देखें पृष्ठ संख्या १४९.

६. आचमन मुद्रा

विधि-मूलमन्त्र का उच्चारण करते हुए आचमनीय-जल देने को 'आचमन मुद्रा' कहते हैं।

७. ताम्बूल मुद्रा

विधि-पूर्वोक्त 'तत्त्व-मुद्रा' द्वारा ताम्बूल समर्पित करने को 'ताम्बूल मुद्रा' कहा जाता है।

८. प्राण मुद्रा

विधि-अँगूठे को अनामिका तथा कनिष्ठिका के अग्रभाग में लगाने से 'प्राण मुद्रा' होती है।

९. अपान मुद्रा

विधि-अनामिका तथा मध्यमा से अँगूठा लगाने पर 'अपान मुद्रा' बनती है।

१०. व्यान मुद्रा

विधि-मध्यमा और तर्जनी से अँगूठा लगाने पर 'व्यान मुद्रा' बनती है।

११. उदान मुद्रा

विधि-तर्जनी तथा मध्यमा से अँगूठा लगाने पर 'उदान मुद्रा' बनती है।

१२. समान मुद्रा

विधि-तर्जनी, मध्यमा, अनामिका तथा कनिष्ठिका इन चारों अँगुलियों को एकत्र कर अँगूठा लगाने से 'समान मुद्रा' बनती है।

१३. ग्रास मुद्रा

विधि-दाँयें हाथ की पाँचों अँगुलियों को परस्पर मिलाकर कुछ मुड़ी हुई रखने से 'ग्रास मुद्रा' बनती है।

इति उपचार मुद्राः समाप्ताः

१६. नित्य-पूजा की मुद्रायें

नित्य-पूजा की पाँच मुद्राएँ हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं-
१. प्रार्थना, २. अंकुश, ३. कुन्त, ४. कुम्भ तथा ५. तत्त्व।
इन मुद्राओं का सचित्र उल्लेख आगे किया जा रहा है।

१. प्रार्थना मुद्रा

विधि-दोनों हाथों की दसों अँगुलियों को फैलाकर आपात में आमने-सामने मिलादें फिर उन्हें अपने हृदय के समीप रखें।

यह 'प्रार्थना म्रुदा' है।

२. अंकुश मुद्रा

विधि-दाँये हाथ की मुट्ठी बाँध कर तर्जनी को अंकुश के समान मोड़ दें।

यह त्रैलोक्य का आकर्षण करने वाली 'अंकुश मुद्रा' है।

३. कुन्त मुद्रा

विधि-दाँये हाथ की मुट्ठी को खड़ी करके, तर्जनी को सीधा करें तथा उसके अग्रभाग में अँगूठा लगादें।

यह सब प्रकार से रक्षा करने वाली 'कुन्त मुद्रा' अर्थात् 'भाला मुद्रा' है।

४. कुम्भ मुद्रा

विधि-दाँये अँगूठे को बाँये अँगूठे से लगा कर शेष अँगुलियों को मुट्ठी की भाँति नीचे-ऊपर लगादें तथा मुट्ठी को पोला रखें।

यह स्नान के समय की जाने वाली 'कुंभ मुद्रा' है। पूजन की मुद्राओं में वर्णित कलश मुद्रा भी ऐसी ही होती है।

५. तत्त्व मुद्रा

विधि-अँगूठे तथा अनामिकाओं के अग्रभागों को मिलाने से 'तत्त्व मुद्रा' बनती है।

इस मुद्रा का उपयोग स्नान करते समय, स्नान से पहले किया जाता है।

इति नित्य पूजा मुद्रा! समाप्ताः

२०. ध्यानावेश प्रार्थना की मुद्राएँ

ध्यानावेश प्रार्थना की ५ मुद्राएँ कही गई हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं-
१. विघ्नघ्नी, २. विस्मय, ३. प्रार्थना, ४. अर्घ्य तथा ५. सूर्य प्रदर्शनी।
इन मुद्राओं का सचित्र वर्णन आगे किया जा रहा है।

१. विघ्नघ्नी मुद्रा

विधि-दोनों मुट्ठियों को अभिमुख (आमने-सामने) मिला कर, अँगूठों को खड़ा करें।

यह ध्यान की 'विघ्नघ्नी मुद्रा' है।

२. विस्मय मुद्रा

विधि–दाँये हाथ की मुट्ठी को कस कर बाँधें, फिर उसी की तर्जनी को नाक के अग्रभाग में लगायें।

यह 'विस्मय मुद्रा' विस्मय तथा आवेश करने वाली है।

३. प्रार्थना मुद्रा

विधि–दोनों हाथों की अँगुलियों को फैलाकर, परस्पर मिलादें, फिर उन्हें अपने हृदय के समीप सामने रखें।

यह 'प्रार्थना मुद्रा' है।

४. अर्घ्य मुद्रा

विधि–दोनों हाथों की अँजलि में गंध-पुष्पादि से युक्त जल लेकर उसे सूर्य आदि देवता के सम्मुख छोड़ें।

यह 'अर्घ्य मुद्रा' है।

५. सूर्य प्रदर्शनी मुद्रा

विधि-दाँये हाथ को उल्टा तथा बाँये हाथ को सीधा रखते हुए दोनों की अँगुलियों को आमने-सामने करें। तत्पश्चात् बाँई तर्जनी को दाँई कनिष्ठा से तथा दाँई तर्जनी को बाँई कनिष्ठा से पकड़लें।

इसी भाँति बाँई मध्यमा तथा अनामिका को दाँये अँगूठे से तथा दाँई मध्यमा और अनामिका को बाँये अँगूठे से बाँध कर सूर्य को देखें।

यह 'सूर्य प्रदर्शनी मुद्रा' है। इस मुद्रा को बाँध कर नित्य प्रति प्रातः काल सूर्य को देखने से आँखों की ज्योति में वृद्धि होती है।

इति ध्यानावेश प्रार्थना मुद्राः समाप्ताः

२१. तत्त्वों की मुद्राएँ

पंचतत्त्व-१. पृथ्वी, २. जल, ३. अग्नि, ४. वायु एवं ५. आकाश तथा इनसे सम्बन्धित विषयों की मुद्राओं की संख्या १५ है। उनके नाम इस प्रकार हैं-

१. पृथ्वी, २. आम्भसी (जल) ३. वेश्वानरी (तेज), ४. वायु, ५. आकाश, ६. अश्विनी, ७. पाशिनी, ८. काकी, ९. मातङ्गिनी, १०. भुजाङ्गिनी, ११. रिपुजिह्वाग्रहा, १२. गालिनी, १३. सर्व संक्षोभकारिणी, १४. तर्जनी और १५. क्रोध।

इन मुद्राओं का सचित्र वर्णन अगले पृष्ठों पर किया जाएगा।

१. पृथ्वी मुद्रा
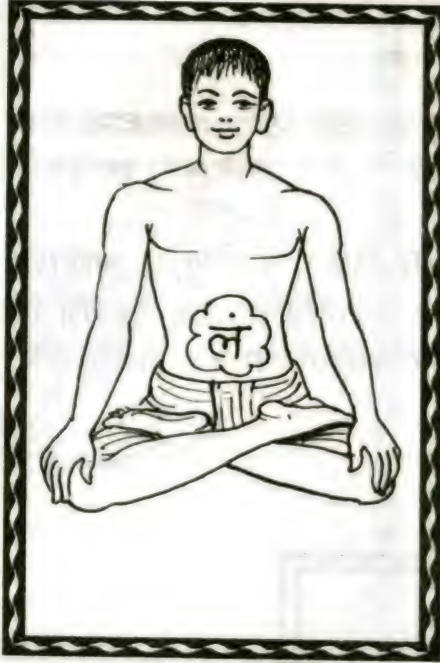
विधि-पीतवर्ण 'लं' बीज, चतुष्कोण तथा ब्रह्मदेव को अपने हृदय कमल में विराजमान मानकर, ध्यान करते हुए, बहुत देर तक 'कुंभक' प्राणायाम करने से 'पृथ्वी मुद्रा' सम्पन्न होती है।

२. आम्भसी (जल) मुद्रा

विधि-शंख के समान श्वेत वर्ण चन्द्रमा के समान निर्मल, कुन्द पुष्प की भाँति श्वेत 'वं' बीज, विष्णुदेव तथा अमृत-तुल्य सुस्वादु जल-तत्त्व का ध्यान करते हुए, बहुत देर तक 'कुंभक' प्राणायाम करने से 'आम्भसी' अर्थात् 'जल मुद्रा' सम्पन्न होती है।

३. वैश्वानरी (तेज) मुद्रा

विधि-इन्द्रगोप (वीर बहूरी) के समान रक्तवर्ण, नाभिस्थान में 'रं' बीज, रुद्रदेव तथा तेज समूह का ध्यान करते हुए बहुत देर तक 'कुंभक' प्राणायाम करने से 'वैश्वानरी' अर्थात् 'तेज मुद्रा' सम्पन्न होती है।

४. वायु मुद्रा
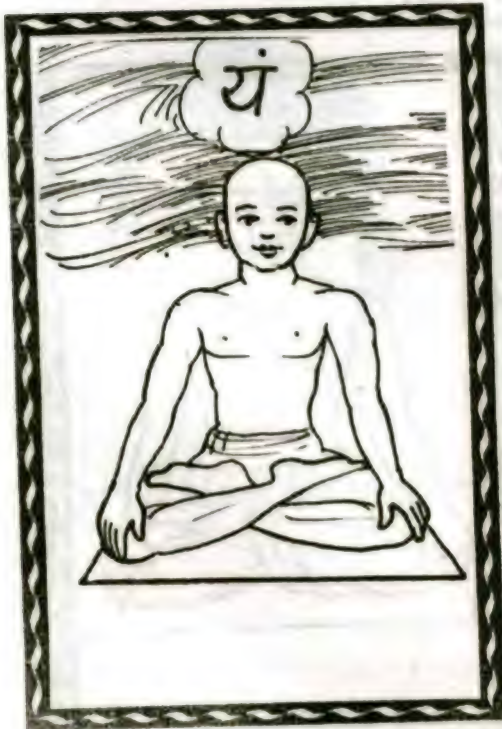
विधि-धूम्रवर्ण, 'यं' बीज, ईश्वर देव तथा सत्वगुण युक्त वायु का ध्यान करते हुए बहुत देर तक 'कुंभक' प्राणायाम करने से 'वायु मुद्रा' सम्पन्न होती है।

५. आकाश मुद्रा

विधि-समुद्र के शुद्ध जल जैसे वर्ण, 'हं' बीज सदाशिव देव सहित आकाश का ध्यान करते हुए बहुत देर तक 'कुंभक' प्राणायाम करने से 'आकाश मुद्रा' सम्पन्न होती है।

६. अश्विनी मुद्रा

विधि-गुदा को बारम्बार भींचने तथा खोलने की क्रिया करते रहने से शक्ति-वर्द्धक 'अश्विनी मुद्रा' सम्पन्न होती है।

७. पाशिवनी मुद्रा

विधि-अपने दोनों पावों को गले के दोनों ओर ले जाकर पीठ पर रखने से 'पाश्विनी मुद्रा' सम्पन्न होती है।

८. काकी मुद्रा

विधि-होठों को कौए की चौंच जैसा बनाकर उनके द्वारा बाहरी -वायु को धीरे- धीरे जितना खींच सकें भीतर की ओर खींचें। इस विधि से श्वांस लेते हुए वायु-सेवन करने से सर्व रोग-नाशक 'काकी मुद्रा' सम्पन्न होती है।

९. मातङ्गिनी मुद्रा

विधि-कण्ठ तक डूब जाने की स्थिति में पानी में खड़े रहकर नाक से जल पियें तथा मुँह से उसे बाहर निकालते रहें। इस भाँति कई बार करने से 'मातङ्गिनी मुद्रा' सम्पन्न होती है।

१०. भुजङ्गिनी मुद्रा

विधि-मुँह को फैला कर वायु पीने से 'भुजङ्गिनी मुद्रा' सम्पन्न होती है।

११. रिपुजिह्वाग्रहा मुद्रा

विधि–अँगूठे को भीतर रखते हुए मुट्ठी बाँधने एवं अँगूठे के अग्रभाग को तर्जनी के समीप लाकर मुट्ठी से बाँधने अथवा मुट्ठी बाँधकर उसके ऊपर अँगूठा लगाने से 'रिपुजिह्वा' अथवा 'रिपुजिह्वा ग्रहा' मुद्रा सम्पन्न होती है।

१२. गालिनी मुद्रा

विधि–दाँये हाथ की कनिष्ठिका को बाँये हाथ के अँगूठे से तथा बाँये हाथ के अँगूठे को दाँये हाथ की कनिष्ठा से मिलाकर तर्जनी, मध्यमा और अनामिका का सहयोग करने से शंखोदकादि को शुद्ध करने वाली 'गालिनी मुद्रा' बनती है।

१३. क्षोभ (सर्वसंक्षोभ कारिणी) मुद्रा

विधि–मध्यमा अँगुली को दूसरी मध्यमा में लगायें, कनिष्ठिा को अँगूठे से पकड़ें तथा दोनों तर्जनियों को सीधी करके अनामिका और मध्यमा पर रखें, तो यह क्षोभ अथवा 'सर्वसंक्षोभकारिणी' प्रथमा मुद्रा होती है।

१४. तर्जनी मुद्रा

विधि–बाँये हाथ की मुट्ठी बाँध कर तर्जनी को सीधा करें। इस 'तर्जनी मुद्रा' का उपयोग तर्जन अथवा निषेध-कार्य में किया जाता है।

१५. क्रोध मुद्रा

विधि-मुट्ठी बाँध कर तर्जनी को अलग करदें तथा हाथ को सीधा रखें। यह 'क्रोध मुद्रा' भी तर्जनी मुद्रा जैसी ही है।

इति तत्त्व मुद्रा समाप्ताः

२२. होम की मुद्राएँ

होम (हवन) में यदि मुद्रा-हीन आहुति दी जाय तो देवता उसे ठीक उसी प्रकार से ग्रहण नहीं करते, जिस प्रकार कि मन्त्रहीन आहुति ग्रहण नहीं की जाती। अतः होम के समय विभिन्न मुद्राओं का प्रयोग करना आवश्यक है।

होम की ८ मुद्राएँ मुख्य हैं–

१. अवगुण्ठिनी, २. सप्तजिह्वा, ३. ज्वालिनी, ४. मृगी, ५. हंसी, ६. शूकरी, ७. आहुति तथा ८. अवशिष्टिका मुद्रा।

इनमें आहुति मुद्रा के अनेक भेद हैं। इन मुद्राओं का सचित्र वर्णन अगले पृष्ठों पर किया जा रहा है।

१. अवगुण्ठिनी मुद्रा

विधि–बाँये हाथ की मुट्ठी बाँध कर उसमें से तर्जनी को अलग करदें अथवा दोनों हाथों की तर्जनियों को आपस में मिलाकर अग्नि के समीप घुमायें।

इसे 'अवगुण्ठिनी मुद्रा' कहते हैं
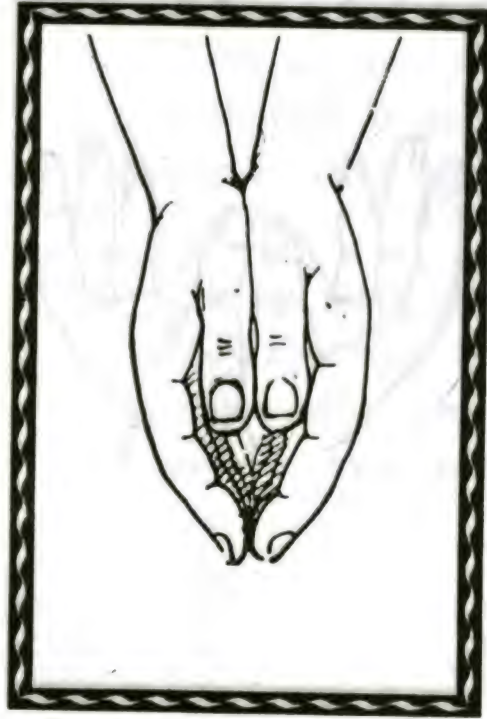
२. सप्तजिह्वा मुद्रा

विधि–दोनोंमणिबंधों को मिलाकर अँगुलियों को फैलादें तथा दोनों कनिष्ठिकाओं से अँगूठे लगाकर हाथों को सीधा करदें।

दोनों हाथों की मध्यमा अँगुलियों तथा मूल में अँगूठे से लगी सम्मिलित कनिष्ठिकाओं को एक मानने से 'सप्तजिह्वा मुद्रा' बनती है।

३. ज्वालिनी (प्रज्ज्वालिनी) मुद्रा

विधि-पूर्वोक्त मुद्रा में अँगूठे से लगी हुई कनिष्ठिकाओं को अलग रखने से 'ज्वालिनी मुद्रा' बनती है।

इसी को 'प्रज्ज्वालिनी मुद्रा' भी कहते हैं।

४. मृग मुद्रा

विधि-कनिष्ठा और तर्जनी के संयोग से 'मृग मुद्रा' बनती है। यह होम की मुख्य मुद्रा है।

शक्ति तथा पुष्टि कर्म के लिए किए जाने वाले होम में इस मुद्रा का प्रयोग श्रेष्ठ फल देता है।

इसी को 'मृगी मुद्रा' भी कहा जाता है।

५. हंसी मुद्रा

विधि-कनिष्ठा को सब अँगुलियों से अलग रखने पर 'हंसी मुद्रा' बनती है।

शान्ति तथा पुष्टि कर्म में इस मुद्रा का प्रयोग भी उत्तम फलदायक माना गया है।

६. शूकरी मुद्रा

विधि-सभी अँगुलियों को एकत्र कर लेने से 'शूकरी मुद्रा' बनती है।

इस मुद्रा का प्रयोग अभिचार कर्म में किया जाता है।
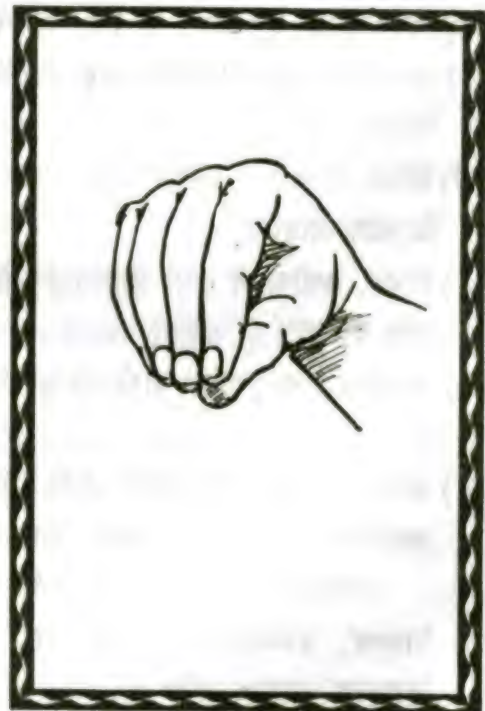
७. आहुति मुद्रा

(१) दाह, ज्वर तथा अभिधात आदि कर्मों के लिए अनामिका तथा अँगूठे की मुद्रा बनाकर आहुति दें। विद्वेष, उच्चाटन तथा मारण कर्म के होम में भी इसी मुद्रा द्वारा आहुति देनी चाहिए।

(२) विघ्न-वाधा दूर करने के लिए तर्जनी तथा मध्यमा को मिला कर आहुति दें।

(३) भूतादि के भय की शान्ति हेतु तर्जनी, मध्यमा तथा अँगूठे के योग से आहुति देना उचित है।

(४) मोहन, उच्चाटन, क्षोभण तथा आकर्षण आदि कार्यों में कनिष्ठा, मध्यमा तथा अँगूठे के योग आहुति दें।

(५) मोहन, वशीकरण तथा प्रीतिवर्द्धन हेतु कनिष्ठा तथा प्रदेशिनी के योग से आहुति देनी चाहिए।

(६) आकर्षण तथा दूर देश वासी को बुलाने हेतु तर्जनी तथा अनामिका के योग से आहुति दें।

(७) आरोग्य-लाभ, नीति, स्नेह, मैत्री, पुष्टि, प्रभा आदि की प्राप्ति के लिए तर्जनी तथा अनामिका के योग से आहुति देने पर सफलता मिलती है।

शान्तिकरण में 'सुप्रभा', वशीकरण में रक्ता, स्तम्भन में 'सुवर्णा' विद्वेषण में 'गगना', उच्चाटन में 'अतिरिक्ता' मारण में 'कृष्णा' तथा अन्य सभी कर्मों में 'बहुरूपा' नामक अग्नि की जिह्वाओं का पूजन करना चाहिए।

८. आवशिष्टिका मुद्रा

विधि-सब प्रकार के होम में बची हुई सामग्री को पहले किसी शुद्ध पात्र में इकट्ठा करें, फिर उसे दोनों हाथों में लेकर अग्नि में छोड़ें। इस प्रकार की मुद्रा को 'आवशिष्टिका' तथा ऐसी आहुति को 'स्विष्टकृत्' होम कहा जाता है।

मुद्रा तथा मन्त्रों के योग से शास्त्रोक्त विधि से किया हुआ होम ही सब प्रकार के मनोरथों को सिद्ध करता है। मन्त्र हीन होम की भाँति ही मुद्रा-हीन होम की आहुति को भी देवता ग्रहण नहीं करते। मुद्राहीन होम अभीष्ट सिद्धि की हानि करता है।

इति होम मुद्रा समाप्ताः

२३. शान्ति-रक्षण की मुद्राएँ

शास्त्रास्त्र, निवारक, शान्ति लाभ तथा रक्षण सम्बन्धी मुद्राएँ १३ हैं, जिनके नाम निम्नलिखित हैं-

१. पद्म, २. पाश, ३. गदा, ४. खड्ग, ५. मुशल, ६. अशनि अथवा कुलिश, ७. स्फोट, ८. शुभङ्करी, ९. मुष्टि, १०. शक्ति, ११. पञ्चमुखी, १२. प्रार्थना और १३. संहार।

इन मुद्राओं का सचित्र वर्णन आगे किया जा रहा है।

१ पद्म मुद्रा

विधि-दोनों हाथों को आपस में मिलाकर सभी अँगुलियों को पुष्प की कली की भाँति ऊपर की ओर खड़ी करदें तथा दोनों अँगूठों को उनके तलभाग में लगादें।

यह 'पद्म मुद्रा' है।

२. पाश मुद्रा

विधि–दोनों हाथों की मुट्ठी बाँधकर, बाँयें हाथ की तर्जनी को दाँयें हाथ की तर्जनी में जोड़दें तथा अँगूठे के अग्रभाग को उनमें लगादें।

यह 'पाश मुद्रा' है।
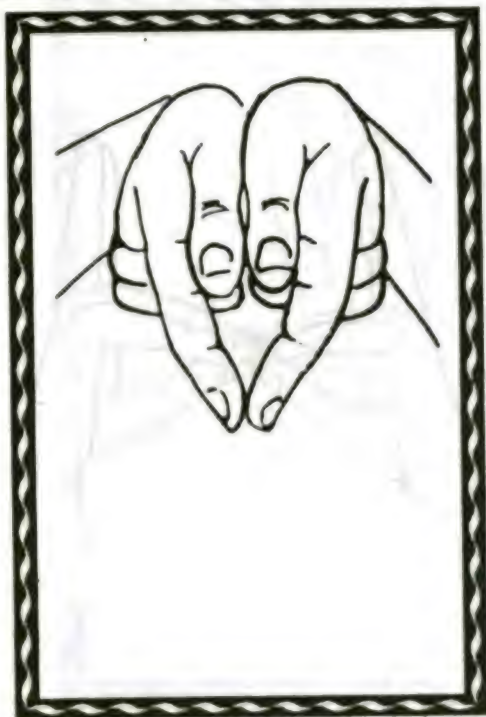
३. गदा मुद्रा

विधि–दोनों हाथों को परस्पर सामने करके उनकी अँगुलियों को गूँथ दें तथा बीच में फैले हुए अँगूठे को उनमें लगादें।

यह 'गदा मुद्रा' है।

४. खड्ग मुद्रा
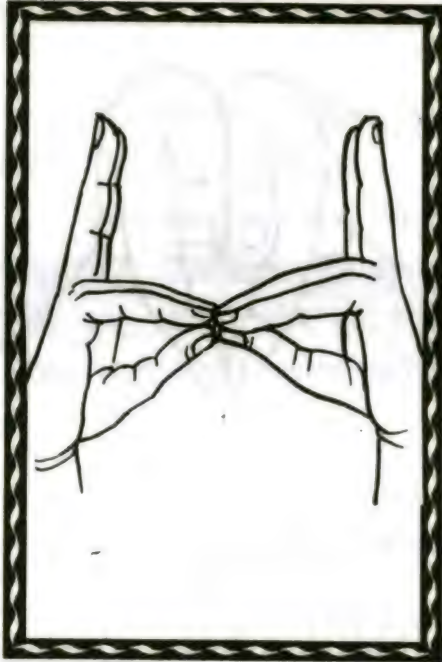
विधि–दाँयें हाथ की कनिष्ठिका एवं अनामिका को अँगूठे से दबाकर शेष अँगुलियों, मध्यमा तथा तर्जनी को सीधी फैला दें।

यह 'खड्ग मुद्रा' है।

५. मुशल मुद्रा

विधि–बाँये हाथ की मुट्ठी को दाँयें हाथ की मुट्ठी पर रखें।

यह सभी विघ्नों को नष्ट करने वाली 'मुशल मुद्रा' अथवा' मुशली मुद्रा' कही जाती है।

६. अशनि (कुलिश) मुद्रा

विधि–कनिष्ठा को अँगूठे के अग्रभाग से युक्त कर, अन्य तीनों अँगुलियों को सीधी रखें।

इसे 'कुलिश' अथवा 'अशान्ति मुद्रा' कहते हैं।
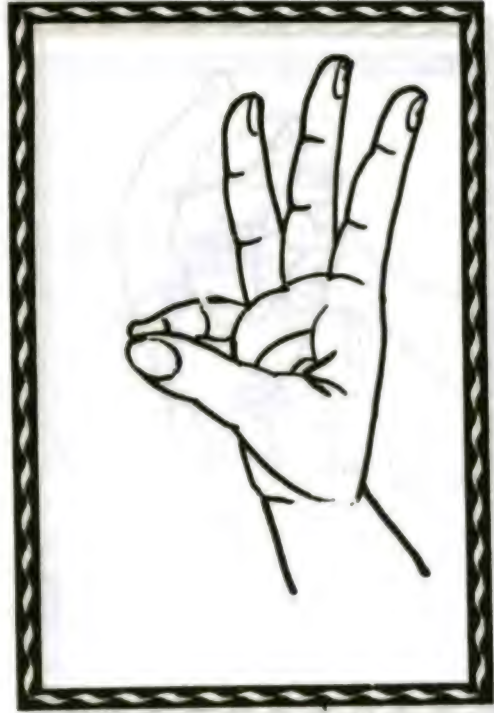
७. स्फोट मुद्रा

विधि–अँगूठे तथा तर्जनी को मिलाने से 'स्फोट मुद्रा' बनती है।

इसे 'छेटिका मुद्रा' भी कहते हैं।

८. शुभङ्करी मुद्रा

विधि–अँगूठे तथा मध्यमा अँगुली के योग से बनने वाली मुद्रा को 'शुभङ्करी' कहा जाता है।

९. मुष्टि मुद्रा

विधि–दाँये हाथ की मुट्ठी बाँधकर ऊँची उठायें।

यह विघ्न समूहों को तोड़ने वाली 'मुष्टि मुद्रा' है।

१०. शक्ति मुद्रा

विधि–दोनों हाथों की मुट्ठियाँ बाँधकर बाँयी मुट्ठी के ऊपर दाँई मुट्ठी को रखकर मस्तक से लगायें।

इसे 'शक्ति मुद्रा' कहते हैं।

११. पञ्चमुखी मुद्रा

विधि–दोनों हाथों के मणिबंध (कलाई) को मिलाकर, अँगुलियों के अग्रभाग को मिलायें तथा मिली हुई दो-दो अँगुलियों को कुछ दूरी पर (अगल) रखें।

इसे शिव-सान्निध्य-दायक 'पंचमुखी मुद्रा' कहाजाता है।

१२. प्रार्थना मुद्रा

प्रार्थना मुद्रा

विधि–दोनों हाथों की अंजलि बनाकर हृदय के समीप रखें तथा विनम्र भाव से मस्तक को झुकालें।

इसे 'प्रार्थना मुद्रा' कहते हैं।

१३. संहार मुद्रा

विधि–बाँये हाथ को ओंधा (उल्टा) करें तथा दाँये हाथ को सीधा कर के दोनों की अँगुलियों को परस्पर गूँथें तथा अदल-बदल करदें।

इसे 'संहार मुद्रा' कहते हैं।

इति शान्ति रक्षण मुद्रा समाप्ताः

२४. बलिदान की मुद्राएँ

बलिदान की ४ मुद्राएँ निम्नानुसार कही गई हैं-

१. गणेश बलि मुद्रा, २. बटुक भैरव बलि मुद्रा, ३. क्षेत्रपाल बलि मुद्रा एवं ४. चौंसठ योगिनी बलि मुद्रा।

१. गणेश बलि मुद्रा

विधि–मध्यमा अँगुली को कुछ टेढ़ी करके गणेशजी को बलि देनी चाहिए।

२. बटुक भैरव बलि मुद्रा

विधि–अँगूठे तथा तर्जनी को मिला कर बटुक भैरव को बलि देनी चाहिए।
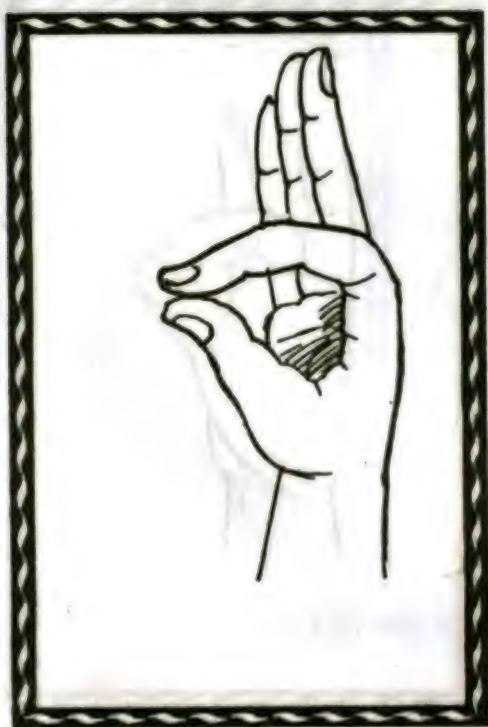
३. क्षेत्रपाल बलि मुद्रा

विधि-दोनों हाथों की अनामिका तथा अँगूठे द्वारा क्षेत्रपाल को बलि देनी चाहिए।

४. चौंसठ योगिनी बलि मुद्रा

विधि-मध्यमा तथा अँगूठे को मिलाकर चौंसठ योगिनियों को बलि देनी चाहिए।

२५. सन्ध्याकालीन मुद्राएँ

सन्ध्या करते समय निम्नलिखित २४ मुद्राओं का प्रयोग किया जाता है-

१. सम्मुखी, २. सम्पुटी, ३. वितत, ४. विस्तृत, ५. द्विमुखी, ६. त्रिमुखी, ७. चतुर्मुखी, ८. पञ्चमुखी, ९. षठमुखी, १०. अधोमुखी, ११. व्यापक, १२. आञ्जलिक, १३. शकट, १४. यमपाश, १५. ग्रथित, १६. सम्मुखोन्मुख, १७. प्रलय, १८. मुष्टिक, १९. मत्स्य, २०. कूर्म, २१. वाराह, २२. सिंहाक्रान्त, २३. महाक्रान्त तथा २४. मुद्गर।
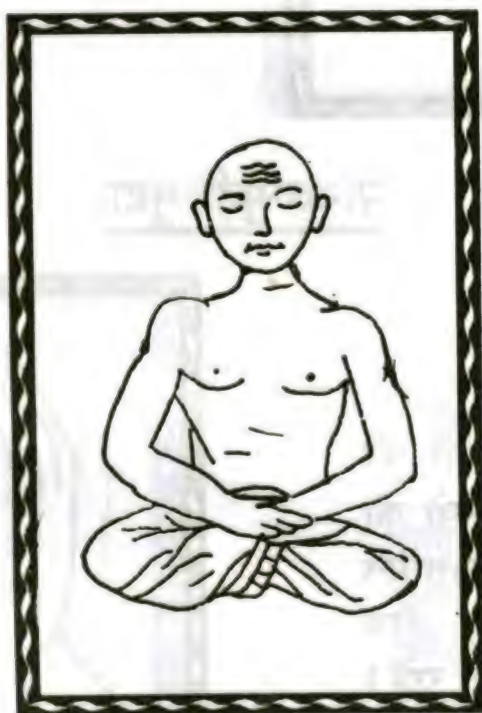
इन मुद्राओं का सचित्र वर्णन अगले पृष्ठों में किया जा रहा है।

१. सम्मुखी मुद्रा
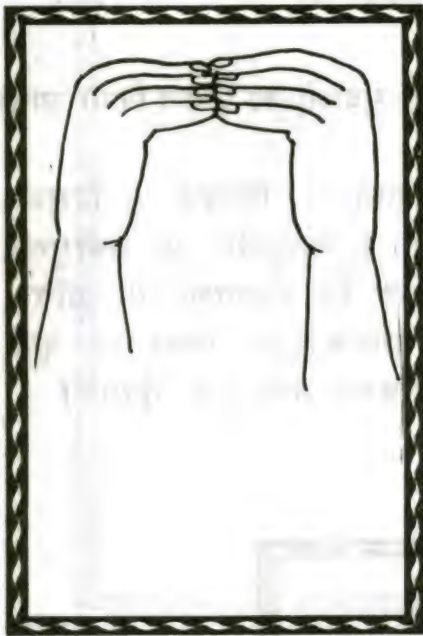
विधि–दोनों हाथों को ऊपर उठाकर, दोनों की सभी अँगुलियों के अग्रभाग को परस्पर मिलादें।

इसे 'सम्मुखी मुद्रा' कहते हैं।

२. सम्पुटी मुद्रा

विधि–दोनों हाथों को ऊपर उठाकर हथेलियों को एक दूसरी के आमने-सामने करके मिलायें तथा बीच में कुछ स्थान खाली रखें।

यह 'सम्पुटी मुद्रा' है।

३. वितत मुद्रा

विधि–दोनों हाथों को ऊपर उठाकर चित्र में प्रदर्शित स्थिति में लायें।

इसे 'वितत मुद्रा' कहते हैं।

४. विस्तृत मुद्रा
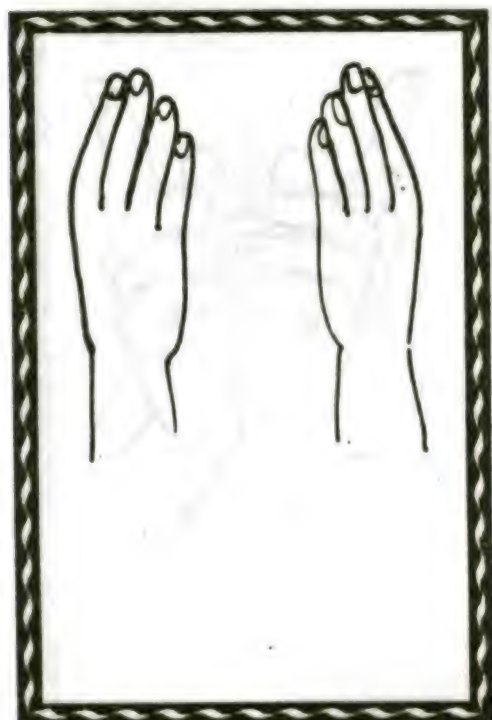
विधि–दोनों हाथों को ऊपर उठा कर दोनों को पूर्वोक्त 'वितत मुद्रा' की अपेक्षा, कुछ अधिक दूरी पर रखें (चित्र में दिखाए अनुसार)

इसे 'विस्तृत मुद्रा' कहते हैं।

५. द्विमुखी मुद्रा

विधि–दोनों हाथों को ऊपर उठाकर उनकी कनिष्ठा तथा अना-मिकाओं के अग्रभाग को एक दूसरी से मिलायें तथा अँगूठा, तर्जनी एवं मध्यमा को ऊपर की ओर उठादें।

इसे 'द्विमुखी मुद्रा' कहते हैं।

६. त्रिमुखी मुद्रा

विधि–दोनों हथेलियों को आमने-सामने रखते हुए, उनकी कनिष्ठा, अनामिका एवं मध्यमा अँगुलियों के अग्रभाग को परस्पर मिलादें तथा तर्जनी एवं अँगूठों को ऊपर की ओर सीधा रखें।

इसे 'त्रिमुखी मुद्रा' कहते हैं।
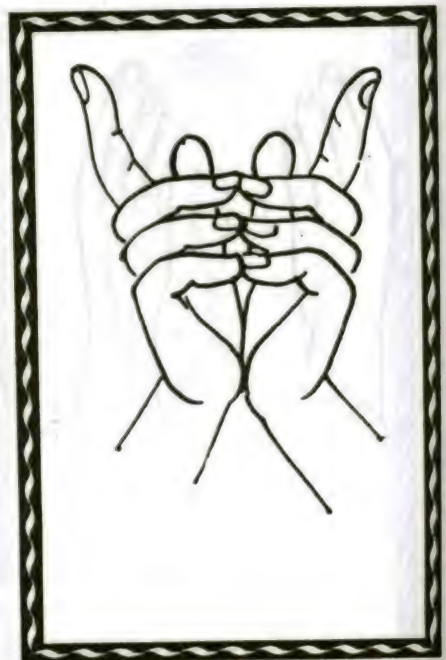
७. चतुर्मुखी मुद्रा

विधि–दोनों हथेलियों को आमने-सामने रखते हुए उनकी चारों अँगुलियों के अग्रभाग को परस्पर मिलादें तथा अँगूठों को ऊपर की ओर खड़ा रखें।

इसे 'चतुर्मुखी मुद्रा' कहते हैं।
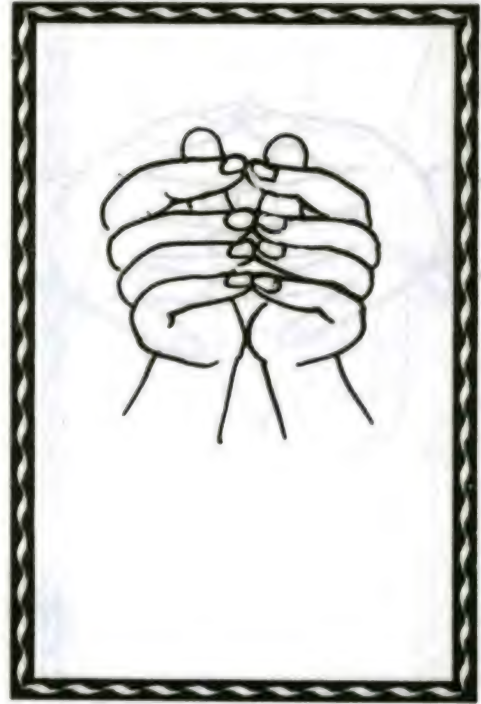
८. पञ्चमुखी मुद्रा
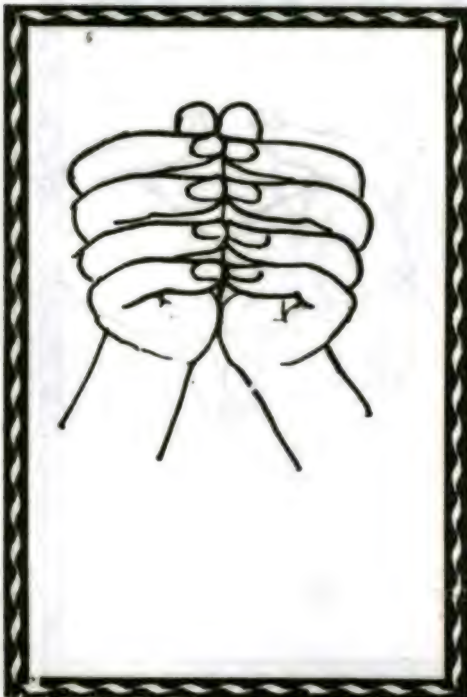
विधि–दोनों हथेलियों को आमने-सामने रखते हुए सभी अँगुलियों तथा अँगूठों के अग्रभाग को (चित्र में दिखाये अनुसार) परस्पर मिलाने से 'पंचमुखी मुद्रा' बनती है।

६. षष्मुखी मुद्रा

विधि–दोनों हथेलियों को आमने–सामने रखकर उनके अँगूठे, तर्जनी, मध्यमा तथा अनामिकाओं के अग्रभाग को परस्पर मिलायें तथा कनिष्ठिकाओं को अलग रखें।

इसे 'षठमुखी मुद्रा' कहते हैं।

१०. अधोमुखी मुद्रा

विधि–दोनों हथेलियों को उलटकर एक दूसरी के साथ सभी अँगुलियों को मिलायें तथा अँगूठों को अलग रखें।

इसे 'अधोमुखी मुद्रा' कहते हैं।

११. व्यापक (व्यापकांजलि) मुद्रा

विधि–चित्र में दिखाए अनुसार दोनों हथेलियों को परस्पर मिलाकर सभी अँगुलियों को आगे की ओर फैलादें।

इसे 'व्यापक' अथवा 'व्यापकांजलि मुद्रा' कहते हैं।

१२. अंजलि (आञ्जलिक) मुद्रा

विधि–दोनों हाथों की अंजलि बनाकर, परस्पर एक दूसरे से सटादें (चित्र में दिखाये अनुसार)।

इसे 'अंजलि' अथवा 'आञ्जलिक मुद्रा' कहते हैं।

१३. शकट मुद्रा

विधि-चित्र में दिखाये अनुसार दोनों हाथों के अँगूठों को एक दूसरे से मिलायें तथा अन्य सभी अँगुलियों को मोड़कर नीचे रखें।

इसे 'शकट मुद्रा' कहते हैं।

१४. यमपाश मुद्रा

विधि-दाँये हाथ की तर्जनी को खड़ा रखें तथा उस पर बाँये हाथ की तर्जनी को जमादें। अन्य सभी अँगुलियों को चित्र में प्रदर्शित स्थिति में रखें।

इसे 'यमपाश मुद्रा' कहते हैं।
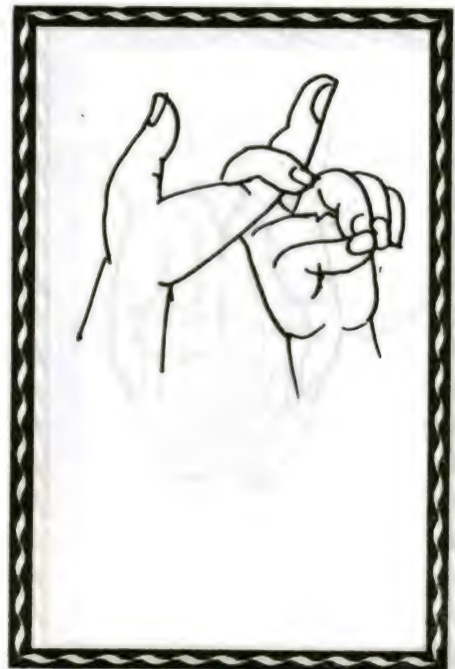
१५. ग्रथित मुद्रा

विधि–दोनों हाथों की अँगुलियों को चित्र में दिखाये अनुसार एक दूसरी में गूँथ दें।

इसे 'ग्रथित मुद्रा' कहते हैं।

१६. सम्मुखोन्मुख मुद्रा

विधि–दोनों हाथों को एक दूसरे के ऊपर-नीचे रखते हुए उनकी अँगुलियों को सटालें तथा उनके अग्रभाग को चित्र में दिखाये अनुसार एक दूसरे से स्पर्श करायें।

इसे 'सम्मुखोन्मुख मुद्रा' कहते हैं।

१७. प्रलय मुद्रा

विधि–दाँये हाथ की अँगुलियों तथा अँगूठे को चित्र में प्रदर्शित स्थिति में लाने से 'प्रलय मुद्रा' बनती है।

१८. मुष्टिक मुद्रा

विधि–दोनों हाथों की अँगुलियों को मुट्ठियों की भाँति मोड़कर दोनों अँगूठे को उनके ऊपर चित्र में दिखाये अनुसार रखें।

इसे 'मुष्टिक मुद्रा' कहते हैं।

१६. मत्स्य मुद्रा

विधि–चित्र में दिखाये अनुसार दाँई हथेली को बाँई हथेली की पीठ पर रखें। अँगुलियाँ एक दूसरी से मिली रहे तथा अँगूठे इधर–उधर फैले रहें।

इसे 'मत्स्य मुद्रा' कहते हैं।

२० कूर्म (कच्छप) मुद्रा

विधि–चित्र में दिखाये अनुसार दोनों हाथों की अँगुलियों को रखें।

इसे 'कूर्म अथवा 'कच्छप मुद्रा' कहते हैं।

२१. वाराह मुद्रा

विधि–चित्र में दिखाये अनुसार दोनों हाथों की अँगुलियों को एक दूसरी के भीतर रखते हुए दोनों अँगूठों को ऊपर उठाकर एक दूसरे के आमने-सामने मिलादें।

इसे 'वाराह मुद्रा' कहते हैं।

२२. सिंहाक्रान्त मुद्रा

विधि–दोनों हाथों की हथेलियों को चित्र में दिखाये अनुसार ऊपर उठायें। अँगुलियां परस्पर मिली रहें।

इसे 'सिंहाक्रान्त मुद्रा' कहते हैं।

२३. महाक्रान्त मुद्रा

विधि–दोनों हथेलियों को ऊपर उठाकर उनकी अँगुलियों को कानों की ओर कुछ झुकी हुई स्थिति में (चित्र में दिखाये अनुसार) रखें।

इसे 'महाक्रान्त मुद्रा' कहते हैं।

२४. मुद्गर मुद्रा

विधि–बाँये हाथ की हथेली पर दाँये हाथ की कुहनी रखें तथा अँगुलियों की मुट्ठी बाँध कर उसे ऊपर की ओर उठादें।

इसे 'मुद्गर मुद्रा' कहते हैं।

इति सन्ध्योपासन मुद्राः समाप्ताः

२६. सन्ध्या के अन्त की मुद्राएँ

संध्या के अन्त में की जाने वाली मुद्राएँ ८ हैं। उनके नाम निम्नानुसार हैं-

१. सुरभि (धेनु), २. ज्ञान, ३. वैराग्य, ४. योनि, ५. शंख, ६. पंकज (कमल), ७. लिंग तथा ८. निर्वाण।

इनका सचित्र विवरण निम्नानुसार है-

१. सुरभि (धेनु) मुद्रा
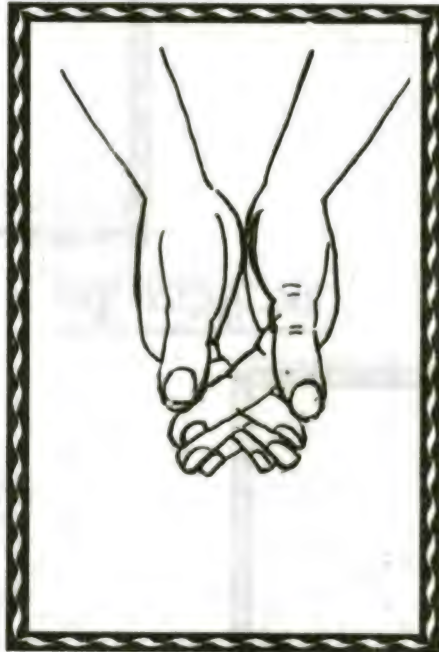
विधि-दोनों हथेलियों को मिलाकर दाँई अनामिका को बाँई कनिष्ठिका से, बाँई अनामिका को दाँई कनिष्ठिका से, दाँई मध्यमा को बाँई तर्जनी से तथा बाँई मध्यमा को दाँई तर्जनी से आक्रान्त करें अर्थात् इन सभी अँगुलियों को उल्टी-सीधी मिलाने से 'सुरभि (धेनु) मुद्रा' बनती है।

(दिखें देवोपासना की मुद्राएँ, पृष्ठ-१४६)

२. ज्ञान मुद्रा

तान्त्राक चित्र में दिखाये अनुसार पद्मासन से बैठें। बाँये हाथ को खुला हुआ बाँये घुटने पर रखें तथा दाँये हाथ की तर्जनी को अँगूठे से मिलाकर हृदय पर रखें।

यह 'ज्ञान मुद्रा' है।

३. वैराग्य मुद्रा
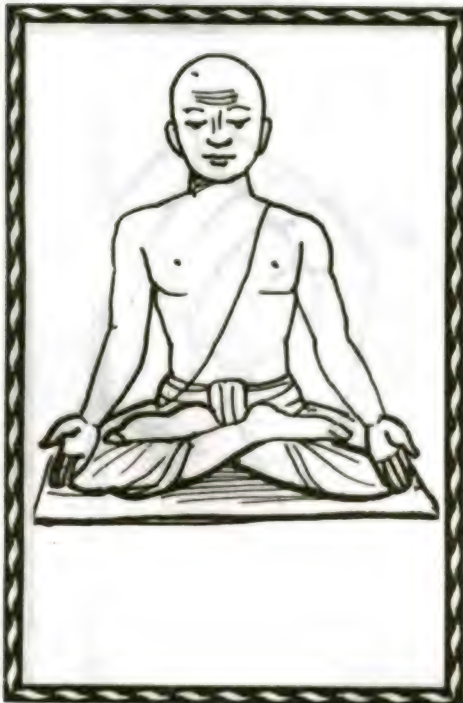
विधि–दोनों तर्जनियों से अँगूठों को मिलाकर पाँवों पर सीधा रखें तथा पद्मासन से बैठें।

इसे 'वैराग्य मुद्रा' कहते हैं।

४. योनि मुद्रा

विधि–दोनों कनिष्ठिकाओं को बाँधकर, तर्जनी तथा अनामिकाओं को बाँधें। अनामिका को मध्यमा से पहले थोड़ा सा मिलाकर, फिर उन्हें सीधा करदें। तदुपरान्त दोनों अँगूठों को एक दूसरे पर रखें। इसे 'योनि मुद्रा' कहते हैं।

५. शंख मुद्रा

विधि–बाँये हाथ के अँगूठे को दाँई मुट्ठी में रखें, फिर दाँई मुट्ठी को ऊर्ध्वमुख रखते हुए, उसके अँगूठे को फैलादें। अब बाँये हाथ की सभी अँगुलियों को एक दूसरी के साथ सटाते हुए फैलादें। तदुपरान्त बाँये हाथ की फैली अँगुलियों को दाँई ओर घुमाकर दाँये हाथ के अँगूठे का स्पर्श करें। इसे 'शंख मुद्रा' कहाजाता है

६. पङ्कज (कमल) मुद्रा

विधि–दोनों हथेलियों को आमने-सामने खड़ी रखकर उनकी अँगुलियों को चित्र में दिखाये अनुसार ऊपर की ओर, कमल की पंखुड़ियों की भाँति फैलादें।

इसे 'पंकज' अथवा 'कमल मुद्रा' कहते हैं।

७. लिङ्ग मुद्रा

विधि–दाँये हाथ के अँगूठे को ऊपर उठाकर, उसे बाँये अँगूठे से बाँधें। तदुपरान्त दोनों हाथों की अँगुलियों को परस्पर बाँधलें।

इसे 'लिङ्ग मुद्रा' कहते हैं।

८. निर्वाण मुद्रा
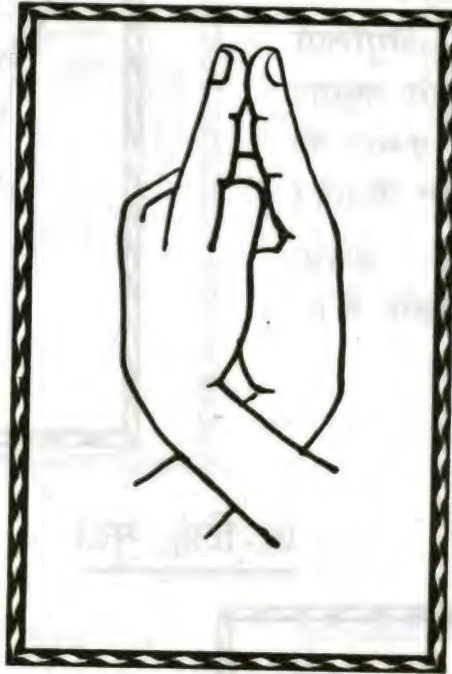
विधि–उल्टे बाँये हाथ पर दाँया हाथ सीधा रखें। फिर अँगुलियों को परस्पर गूँथ कर दोनों हाथों को अपनी ओर से घुमादें तथा दोनों तर्जनियों को सीधी कान के समीप करें।

यह 'निर्वाण मुद्रा' है।

इति सन्ध्योपासनान्त मुद्राः समाप्ताः

२७. योग-साधना की मुद्राएँ

योग साधना में मुख्यत: १५ मुद्राओं का प्रयोग किया जाता है। उनके नाम निम्नानुसार हैं–

१. मुकुल, २. पंकज, ३. व्याक्रोशी, ४. निष्ठुर, ५. योग, ६. महामुद्रा, ७. उड्डीयान, ८. महाखग, ९. जालन्धर, १०. मूलबन्ध, ११. महावेध, १२. विपरीत करणी, १३. वज्रोली, १४. माण्डूकी तथा १५. शाम्भवी।

इन मुद्राओं का सचित्र विवरण अगले पृष्ठों पर दिया जा रहा है।

१. मुकुल मुद्रा

विधि–दोनों हाथों को आमने-सामने करके अँगुलियों को थोड़ा मोड़ दें।

इसे 'मुकुल (काली) मुद्रा' कहते हैं।

२. पंकज मुद्रा

विधि–पूर्वोक्त 'मुकुल मुद्रा' की अंगुलियों को थोड़ा फैला देने से 'पंकज' या 'कमल मुद्रा' बनती है।

३. व्याक्रोशी मुद्रा

विधि–पूर्वोक्त 'मुकुल मुद्रा' में से दोनों तर्जनियों को बाहर निकाल देने से 'व्याक्रोशी' मुद्रा बनती है।

४. निष्ठुर मुदा

विधि–'मुकुल मुद्रा' के दोनों अँगूठों को मोड़कर अपनी अँगुलियों में दवालें तथा उन्हें ऊँचा करके दोनों हाथों को आपस में मिलादें।

इसे 'निष्ठुर मुद्रा' कहते हैं।

५. योग मुद्रा

विधि–तर्जनी तथा कनिष्ठा अँगुलियों को थोड़ा मोड़ कर हथेली के मध्य में इस प्रकार रखें कि अधोमुख अँगुलियों के नख दिखाई देते रहें। शेष चारों मध्यमाओं तथा अनामिकाओं को पीठ में खड़ी करें तथा अँगूठों को एक करके खड़ा करें।

इस प्रकार 'योग मुद्रा' बनती है।

६. महा मुद्रा

विधि–मूल-द्वार (गुदा) को एड़ी से दबाकर दायें हाथ से पाँव की अँगुली पर रखदें तथा कण्ठ को मोड़ कर भौहों के मध्यभाग में देखें।

इसे 'महामुद्रा' कहते हैं।

७. उड्डीयान मुद्रा

विधि–पेट को भीतर की ओर धँसाने से 'उड्डीयान मुद्रा' बनती है।
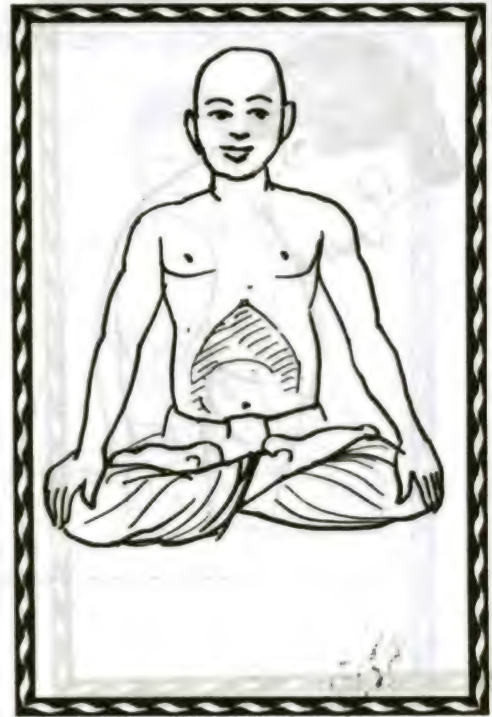
८. महाखग मुद्रा
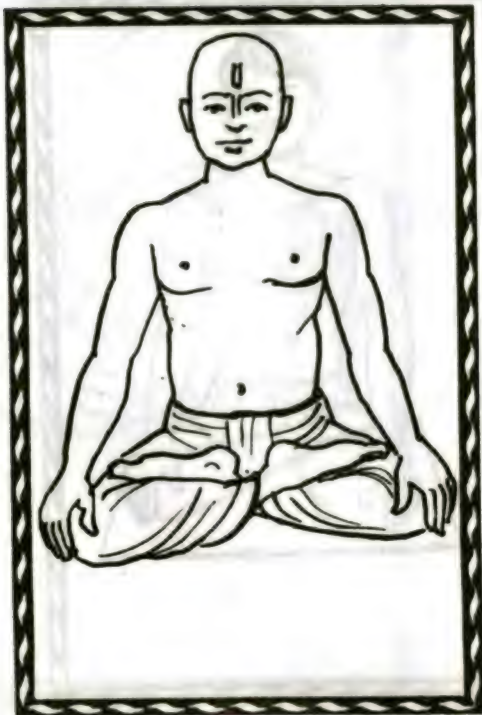
विधि–'उड्डीयान मुद्रा' की स्थिति में जब पेट भीतर को धँसा हो, तब उसे नाभि के ऊपर विश्राम देने से 'महाखग मुद्रा' होती है।

९. जालन्धर मुद्रा

विधि–कण्ठ को सिकोड़ते हुए ठोड़ी को हृदय से लगाने पर 'जालन्धर मुद्रा' बनती है।

१०. मूलबन्ध मुद्रा

विधि–बाँई एड़ी से गुदा को दबाकर मेरुदण्ड की गाँठ को दबायें तथा मूत्रेन्द्रिय को एड़ी से दबायें।

इसे 'मूल बन्ध मुद्रा' कहते हैं।
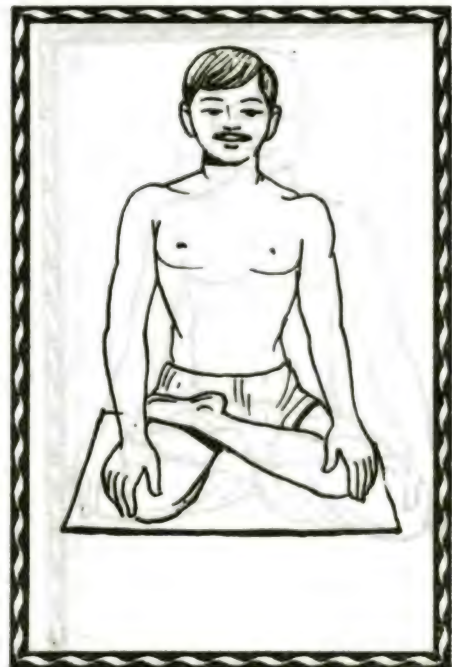
११. महावेध मुद्रा

विधि–उड्डीयान मुद्रा में 'कुंभक प्राणायाम' करने से 'महावेध मुद्रा' होती है।

यह मुद्रा योग सिद्धि देने वाली कही गई है।
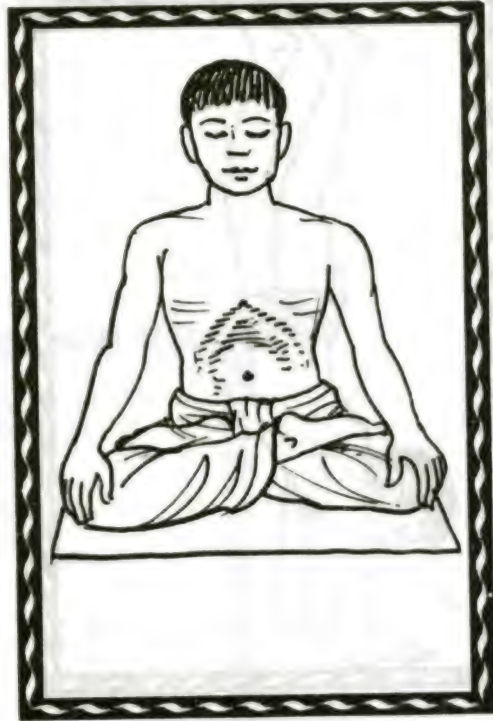
१२. विपरीतकरणी मुद्रा
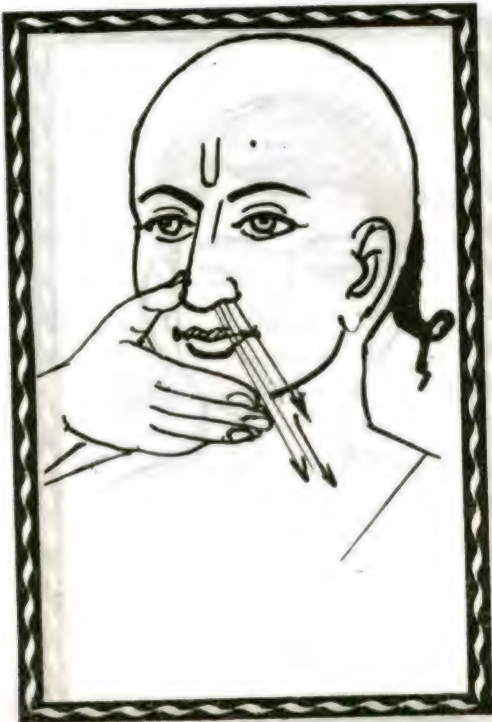
विधि–'सूर्य नाड़ी' अर्थात् दाँये नासा छिद्र से आने वाले श्वांस को ऊपर चढ़ावें (खींचें) तथा चंन्द्रनाड़ी अर्थात् बाँये नासा-छिद्र से श्वांस को नीचे लायें अर्थात् बाहर निकालें।

इसे 'विपरीतकरणी मुद्रा' कहते हैं।

१३. वज्रोली मुद्रा

विधि–दोनों हाथों की हथेलियों को पृथ्वी पर जमाकर दोनों पाँवों को ऊँचा करके आधे शरीर को ऊपर उठायें।

इसे 'वज्रोली मुद्रा' कहते हैं।

१४. माण्डूकी मुद्रा

विधि–मुँह को बन्द करके जीभ को तालु से लगायें तथा क्रमानुसार सहस्रार से निकलने वाले अमृत का पान करें।

इसे 'माण्डूकी मुद्रा' कहते हैं।

१५. शाम्भवी मुद्रा
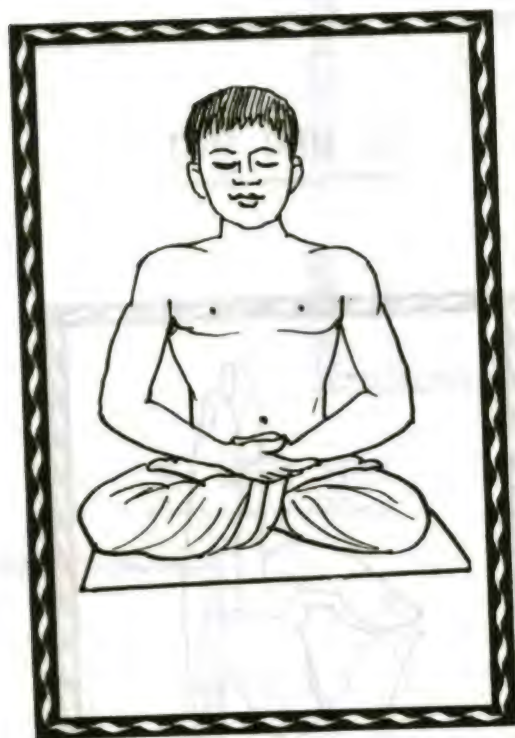
विधि-दोनों भौंहों के मध्य भाग में दृष्टि को स्थिर करके आत्माराम को देखते हुए ध्यान करना ही 'शाम्भवी मुद्रा' है।

इति योग-साधन मुद्राः समाप्ताः

२८. भोजन की मुद्राएँ

भोजन की ५ मुद्राएँ कही गई हैं। उनकें नाम निम्नानुसार हैं-

१. प्राण अथवा प्राणाहुति, २. अपान अथवा अपानाहुति, ३. व्यान अथवा व्यानाहुति, ४. उदान अथवा उदानाहुति तथा ५. समान अथवा समानाहुति।

इनका सचित्र वर्णन आगे किया जा रहा है।

१. प्राण मुद्रा
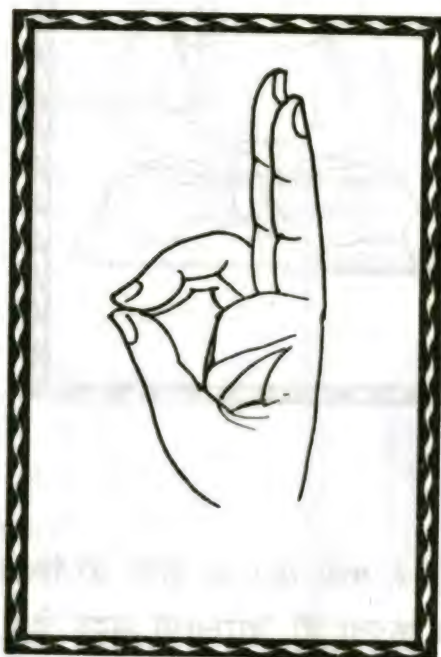
विधि-कनिष्ठिा एवं अनामिका अँगुलियों से अँगूठे को मिलाने पर 'प्राण' अथवा 'प्राणाहुति मुद्रा' बनती है।

२. अपान मुद्रा

विधि–तर्जनी, मध्यमा तथा अँगूठे को मिलाने पर 'अपान' अथवा 'अपानाहुति मुद्रा' बनती है।

३. व्यान मुद्रा
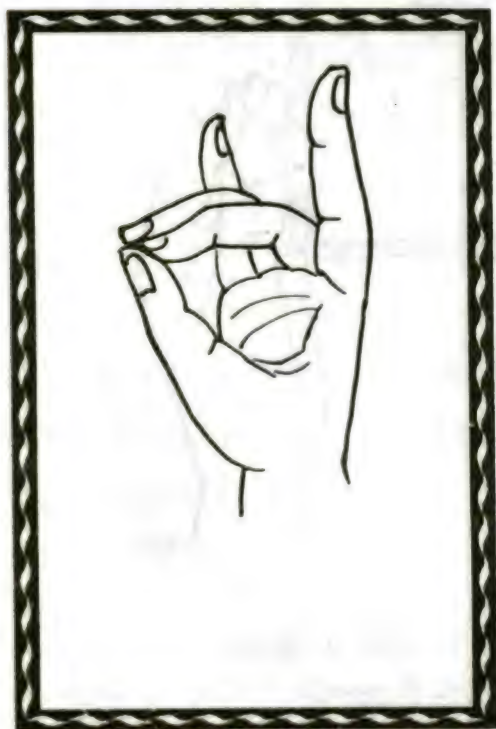
विधि–अनामिका तथा मध्यमा से अँगूठा युक्त करने पर 'व्यान' अर्थात् 'व्यानाहुति मुद्रा' बनती है।

४. उदान मुद्रा
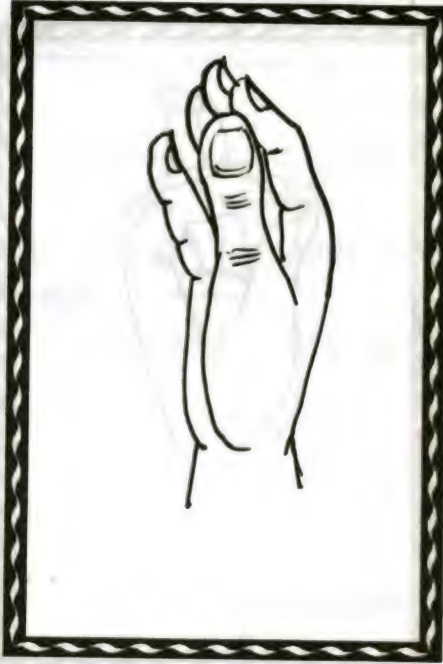
विधि–बाहर निकाली हुई कनिष्ठिका अँगुली के अतिरिक्त अनामिका, मध्यमा, तर्जनी तथा अँगूठे के सहयोग से 'उदान' अथवा 'उदानाहुति मुद्रा' बनती है।

५. समान मुद्रा

विधि–किंचित् मुड़ी हुई तथा आपस में मिली हुई पाँचों अँगुलियों द्वारा 'समान' अथवा 'समानाहुति मुद्रा' बनती है।

विशेष-भोजन करते समय पहले से लेकर पाँचवें ग्रास तक को क्रमशः उक्त उक्त मुद्राओं द्वारा मुँह में रखने वाला मनुष्य भाग्यशाली तथा दीर्घजीवी होता है।

इति भोजन मुद्राः समाप्ताः
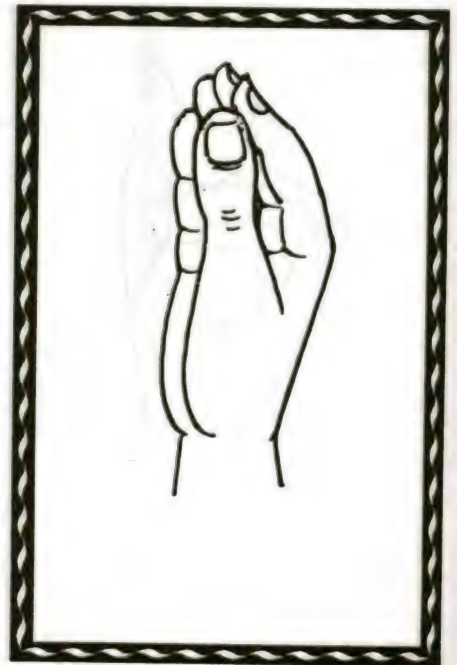
२६. विविध मुद्राएँ

पूर्व प्रकरणों में वर्णित मुद्राओं के अतिरिक्त कुछ अन्य मुद्राओं का सचित्र वर्णन आगे किया जा रहा है। ये मुद्राएँ विभिन्न कर्मों में प्रयुक्त होती हैं।

आगे वर्णित मुद्राओं के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं-
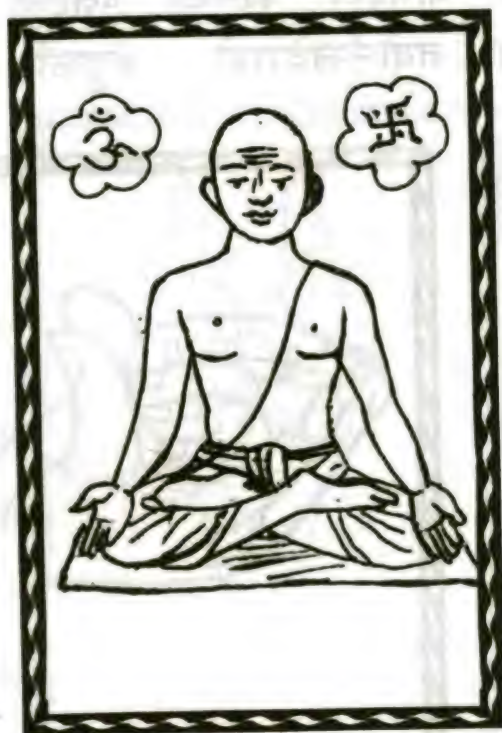
१. सर्वोन्मादिनी, २. महांकुशा, ३. विद्राविणी, ४. सर्वविक्षोभ, ५. सर्वाकर्षिणी, ६. छोटिका, ७. प्रबोध, ८. खेचरी, ९. घण्टा, १०. मुण्ड, ११. जप, १२. पंचक, १३. पल्लव, १४. प्रलम्ब, १५. दन्त, १६. वज्र।

टिप्पणी-इनमें से कुछ मुद्राओं का उल्लेख प्रकारान्तर से अन्य प्रकरणों में भी हो चुका है तो कुछ मुद्राओं के स्वरूप में भिन्नता भी पाई जाती है।

१. सर्वोन्मादिनी मुद्रा

सम्मुखौ तु करौ कृत्वा मध्यमा मध्यमेनुजे।
अनामिकेतु सरले तदधस्तर्जनीद्वयं।।
दण्डकारी ततोङ्गुष्ठौ मध्यमान स्वदेश गौ।
मुद्रैषोन्मादिनी नाम क्लेदिनी सर्वयोषिताम्।।
दक्षिण हस्त कनिष्ठां वामहस्त मध्यमया।
बध्वा वामहस्त कनिष्ठां दक्षहस्त मध्यमया।।
बध्वा तयोर्नखदेशयोः अंगुष्ठौ निक्षिपेत्।।

टीका–दोनों हाथों को सामने करके मध्यमाओं द्वारा मध्यगत कनिष्ठाओं को पकड़ें, अनामिकाओं को सीधी रखें। उनके बाहरी ओर दोनों तर्जनियों को लगायें तथा अँगूठों को दण्डाकार ऐसा सीधा करें कि वे मध्यमा के अग्रभाग में रहें।

यह सभी युवतियों को क्लेदित करने वाली उन्मादिनी मुद्रा है।

२. महांकुशा मुद्रा

अस्यास्त्वनामिका युग्ममधः कृत्वां कुशाकृतिः ।
तर्जन्या वपितेनैव क्रमेण विनियोजयेत् ।।
इयं महांकुशा मुद्रा सर्वकामार्थ साधिनी ।।

टीका–दोनों अनामिकाओं को नीचे झुकाकर थोड़ी टेढ़ी (कुशाकृति) करदें तथा तर्जनियों को क्रमशः उनके ऊपर लगादें।

३. विद्राविणी मुद्रा

क्षोभ मुद्रा लक्षणमुक्त्वोक्तम्।
एतस्या एव मुद्राया मध्यमे सरलायदा।
क्रियते परमेशानि तदा विद्राविणीमता।।
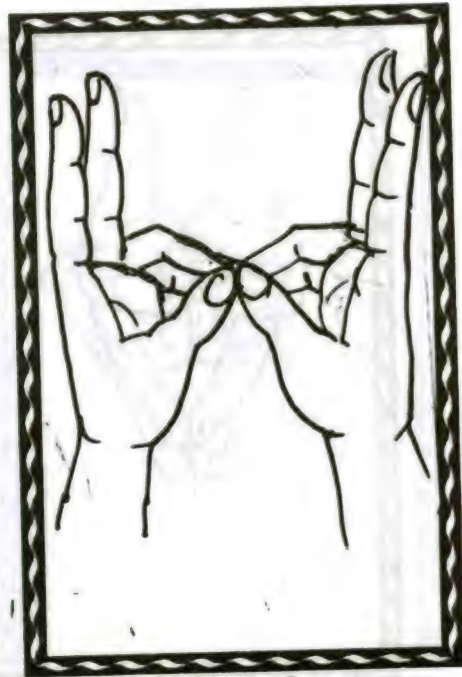
टीका–'क्षोभमुद्रा' (अगले पृष्ठ पर वर्णित 'क्षोभिणी मुद्रा) की क्रिया में केबल मध्यमा को भी सीधी करदेने से यह 'विद्राविणी मुद्रा' बनती है।

४. सर्वविक्षोभ मुद्रा

मध्यमां मध्यमे कृत्वा कनिष्ठाँगुष्ठ रोधिते।
तर्जन्यौ दण्डवत् कृत्वा मध्यमोपर्यनामिके।।
क्षोभाभिधानामुद्रेयं सर्वसंक्षोभकारिणी।।

टीका-एक मध्यमा को दूसरी मध्यमा से लगायें, कनिष्ठा को अँगूठे से दबायें, तर्जनी को सीधा करें तथा मध्यमा पर अनामिका को लगायें। यह सब का संक्षोभ करने वाली 'सर्व विक्षोभ' मुद्रा है।

५. सर्वाकर्षिणी मुद्रा

मध्यमातर्जनीभ्यांतु कनिष्ठा नामिके समे।
अंकुशाकार रूपाभ्यां मध्यमे परमेश्वरी।।
इय माकर्षिणी मुद्रा त्रैलोध्याकर्षणेक्षमा।।
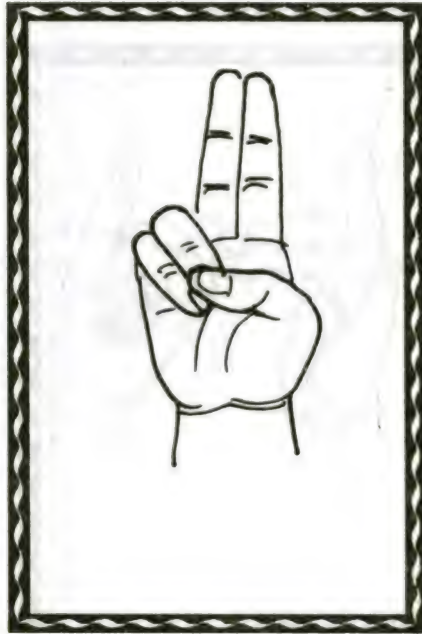
टीका-मध्यमा तथा तर्जनी को ऊपर रखें तथा कनिष्ठा एवं अनामिका को नीचे रखते हुए अंगूठे से दबादें।

यह 'आकर्षणी' अथवा 'सर्वाकर्षिणी मुद्रा' कही जाती है।

६. छोटिका मुद्रा

अंगुष्ठ तर्जनी स्फोटं छोटिका मुद्रिका मता।।

टीका-अँगूठा और तर्जनी को चित्र में दिखाए अनुसार मिलायें। शेष सभी अंगुलियों को सीधा रखें।

यह 'छोटिका मुद्रा' है।

७. प्रबोध मुद्रा

ज्ञानमुद्रा संचालने प्रबोध मुद्रा।।

टीका–'ज्ञान मुद्रा' के संचालन को प्रबोध मुद्रा कहते हैं।

इस मुद्रा में पद्मासन से बैठकर, बाँये हाथ को बाँये घुटने पर रखा जाता है तथा दाँये हाथ को चित्र में दिखाए अनुसार हृदय के समीप रखा जाता है।

८. खेचरी मुद्रा

सव्यं दिक्षणहस्ते तु सव्यहस्ते तु दक्षिणं।
बाहूकृत्वा महादेवि हस्तौ सम्परिवर्त्य च।।
कनिष्ठानामिका देवि युक्ता तेन क्रमेण तु।
तर्जनीभ्यां समाक्रान्ते सवोर्ध्वमणि मध्यमे।
अँगुष्ठौ तु महादेवि सरलावपि कारयेत्।
इयं सा खेचरी नाम मुद्रा सर्वोत्तमोत्तमा।।

विधि–बाँयि हाथ को दाँयि हाथ में उल्टा रख कर कनिष्ठिकाओं तथा अनामिकाओं को तर्जनी द्वारा पकड़ें। मध्यमा के पूर्वार्ध को मिलायें तथा अँगूठे को सीधा करके ललाट से स्पर्श करायें।

यह सर्वोत्तम खेचरी मुद्रा है।

टिप्पणी- खेचरी मुद्रा के एक अन्यरूप का उल्लेख त्रिपुरा- मुद्राओं के अन्तर्गत भी किया जा चुका है।

९. घण्टा मुद्रा

विधि–यह मुद्रा तर्जनी तथा अँगूठे के संयोग से बनती है।

इसका प्रयोग देव-पूजन में होता है।

१०. मुण्ड मुद्रा

विधि–बाँयें हाथ के अँगूठे को मुट्ठी में दबाकर दाँये हाथ की मध्यमा तथा तर्जनी को अँगूठे के अग्रभाग में लगायें तथा दूसरी मुट्ठी को लम्बित करके स्पर्श किये रहें।

यह 'मुण्ड मुद्रा' है।

११. जप मुद्रा

विधि-अँगूठे तथा मध्यमा के मध्यपर्वों से मणियों को चलाते हुए माला फेरने से 'जप मुद्रा' बनती है।

१२. पंचक मुद्रा
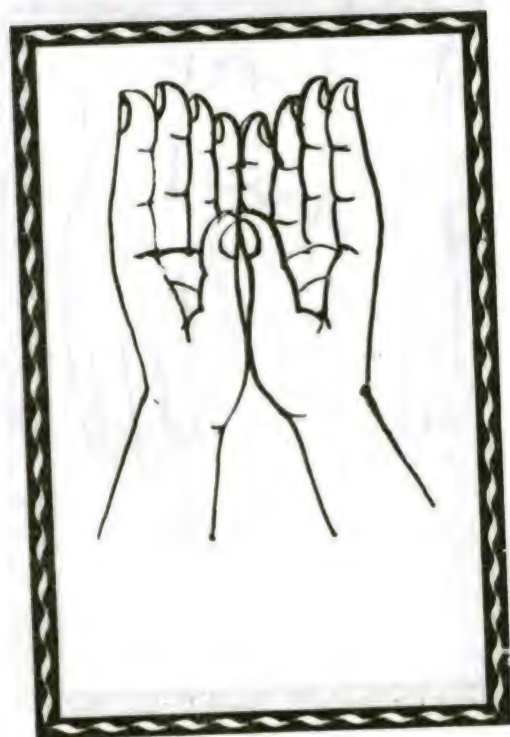
विधि-दोनों हाथों के अँगूठे तथा अँगुलियों को मिला कर ऊपर की ओर करें।

इसे 'पंचक मुद्रा' कहते हैं।

१३. पल्लव मुद्रा

विधि–हथेली को ऊँचा उठाकर सभी अँगुलियों को फैलादेने से यह 'पल्लव मुद्रा' बनती है।

१४. प्रलम्ब मुद्रा

विधि–दोनों हाथों की सभी अँगुलियों को आपस में मिलाकर चित्र में दिखायें अनुसार आगे की ओर फैलादेने से 'प्रलम्ब मुद्रा' बनती है।
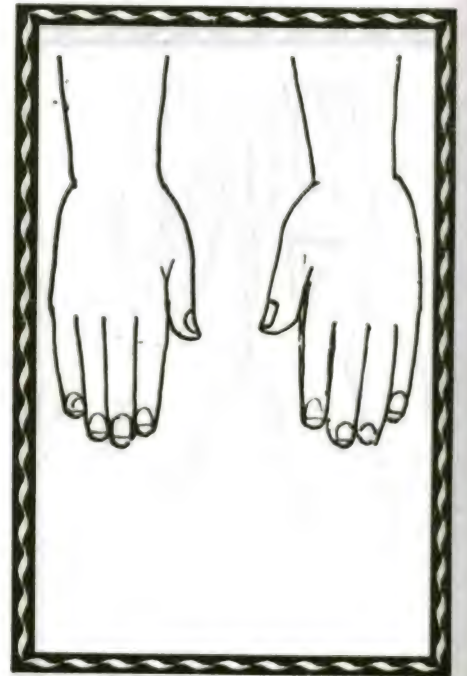
१५. दन्त मुद्रा

विधि—हाथ की मुट्ठी बाँध लें तथा केवल तर्जनी-अँगुली को बाहर निकालकर ऊँचा उठादें।

इसे 'दन्त मुद्रा' कहते हैं।
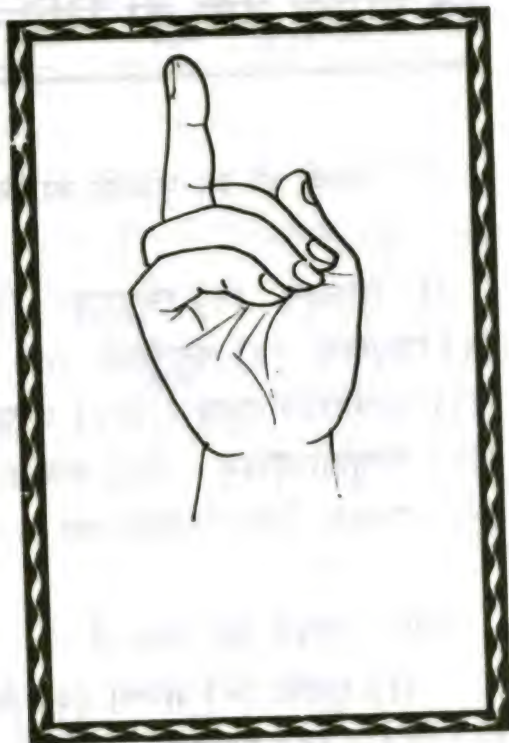
१६. वज्र मुद्रा
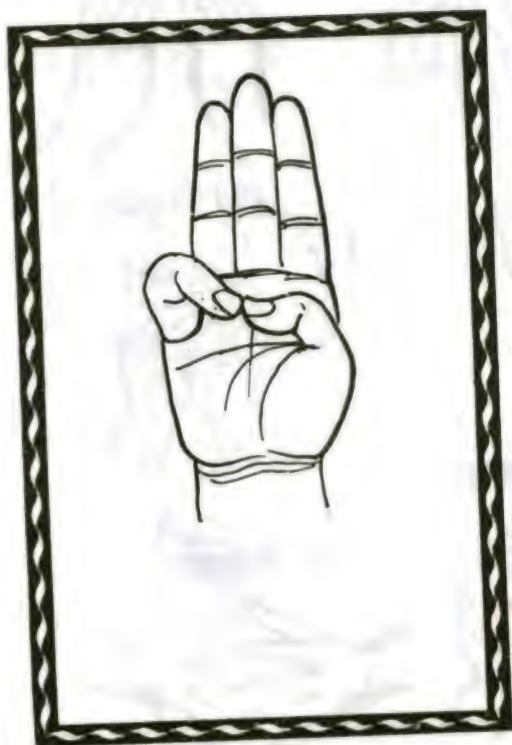
विधि—अँगूठे तथा कनिष्ठिका के अग्रभाग को एक दूसरे से स्पर्श करायें तथा शेष तीनों अँगुलियों तर्जनी, मध्यमा और अनामा को ऊपर उठादें।

यह 'वज्र मुद्रा' है।

इति विविध मुद्राः समाप्ताः

३० गायत्री देवी की विभिन्न मुद्रायें

देवी गायत्री की ३२ मुद्राओं का चित्रण किया जा रहा है। ये मुद्रायें इस प्रकार हैं-

(१) सुमुखम् (२) सम्पुटम् (३) विततम् (४) विस्तृतम् (५) द्विमुखम् (६) त्रिमुखम् (७) चतुर्मुखम् (८) पञ्चमुखम् (९) षष्मुखम् (१०) अधोमुखम् (११) व्यापकाञ्जलिकम् (१२) शकटम् (१३) यमपाशम् (१४) ग्रथितम् (१५) सम्मुखोन्मुखम् (१६) प्रलम्बः (१७) मुष्टिकः (१८) मत्स्य (१९) कूर्म (२०) वराहकः (२१) सिंहाक्रान्तम् (२२) महाक्रान्तम् (२३) मुद्गर (२४) पल्लव

अन्य ८ मुद्रायें इस प्रकार हैं -

(१) सुरभि (२) ज्ञानम् (३) वैराग्य (४) योनि (५) शङ्ख (६) पंङ्कजम् (७) लिङ्गम् (८) निर्वाणम्
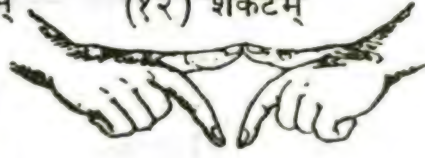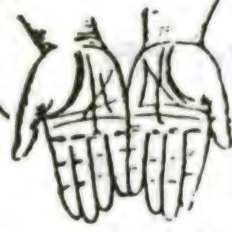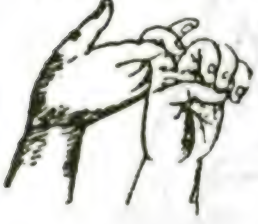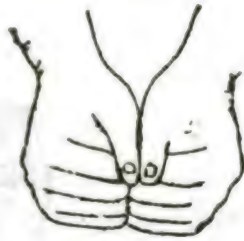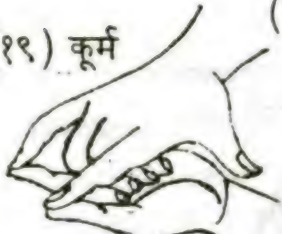
मुखम्
(११) व्यापकाञ्जलिकम्
(१२) शकटम्
(१३) यमपाशम्
(१४) ग्रथितम्
(१५) सम्मुखोन्मुखम्
(१६) प्रलम्ब:
(१७) मुष्टिक:
(१८) मत्स्य
(१९) कूर्म
(२०) वराहक:
(२१) सिंहाक्रान्तम्
महाक्रान्तम्
(२२)
(२३) मुद्गर
(२४) पल्लव

(४) योनि

(५) शङ्ख

(६) पंङ्कजम्

(७) लिङ्गम्

(८) निर्वाणम्

'मुदं कुर्वन्ति देवानां मनांसि द्रावयन्ति च।

टीका- मुद्राएँ देवताओं को प्रसन्न करती हैं जिससे वे साधकों पर द्रवित होते हैं।

मुदं कुर्वन्ति देवानां राक्षसान् द्रावयन्ति च।

टीका- मुद्रायें देवताओं को प्रसन्न और राक्षसों को द्रवित करती हैं।

मुद्रा बन्धाद् विष प्रसुप्तस्योत्थाने कीदृशी युक्ति।

टीका- मुद्रा-बन्ध से विष द्वारा मूर्च्छित व्यक्ति भी स्वस्थ्य हो जाता है।

★ उच्चस्तरीय प्रामाणिक साहित्य ★

प्रत्येक पुस्तक पर डाक खर्च अलग।

दीप पब्लिकेशन हॉस्पीटल रोड, आगरा–3